भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

वर्ष -३ | अंक- ८ | मासिक-हिन्दी | जून , २०१४ | इन्दौर(म.प्र.) | मूल्य-२५/- | कुल पृष्ठ-४४

॥ ओ३म् ॥

वैदिक संसार

५ जून पर्यावरण दिवस

समस्याऐं

बढ़ता औद्योगिकीकरण एवं पेट्रोलियम पदार्थों का उपयोग

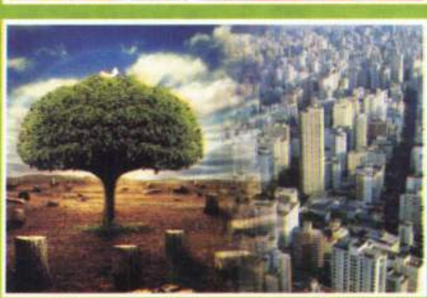

वनों का विनाश और बढ़ता कांक्रिटीकरण

अप्राकृतिक कचरे के बढ़ते पहाड़

समाधान

प्रत्येक परिवार में प्रतिदिन अग्निहोत्र

वनों का संरक्षण और अनिवार्य पौधारोपण

नष्ट न होने वाले कचरे का पुनः उपयोग

पादरियों से विचार विमर्श—

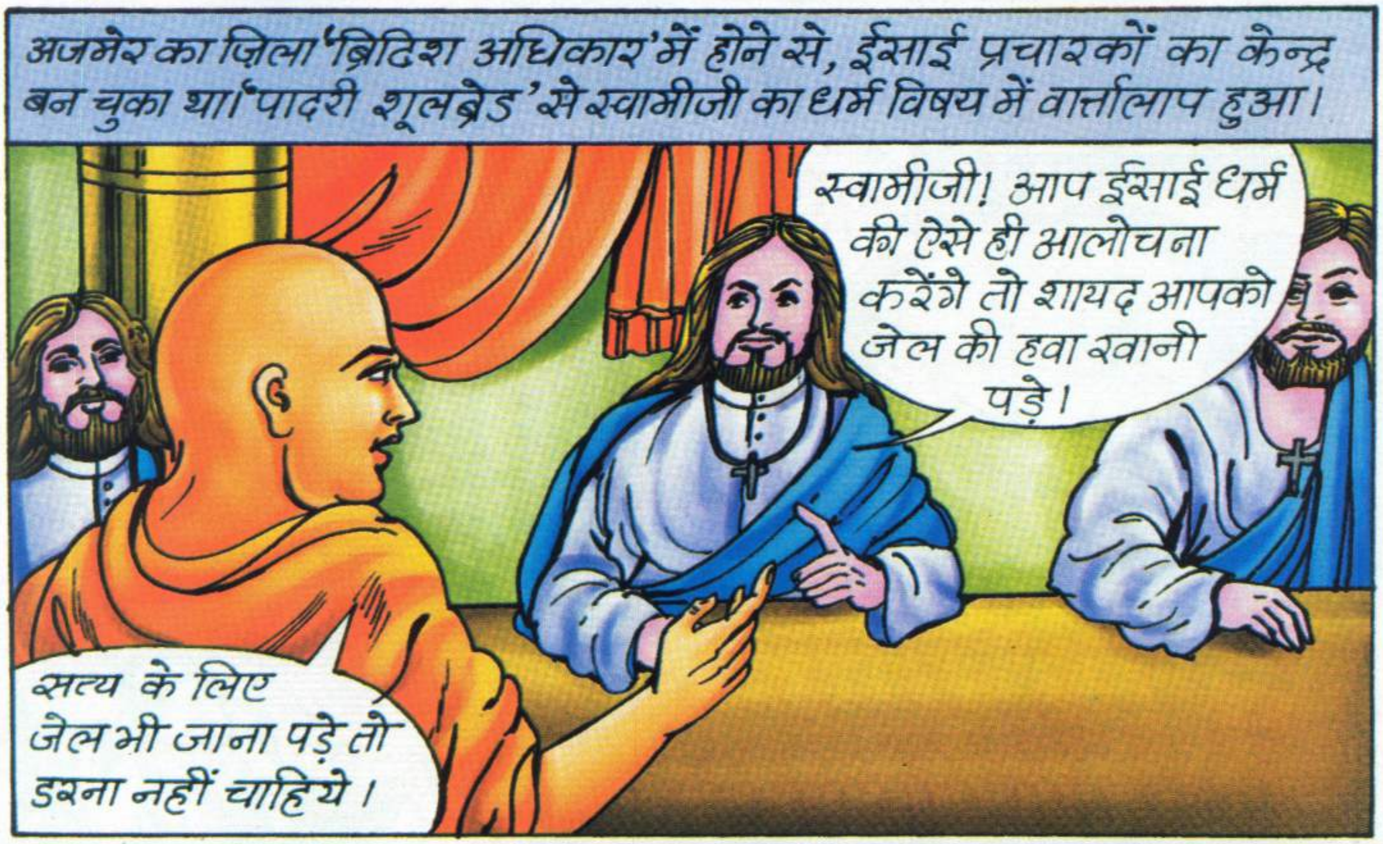

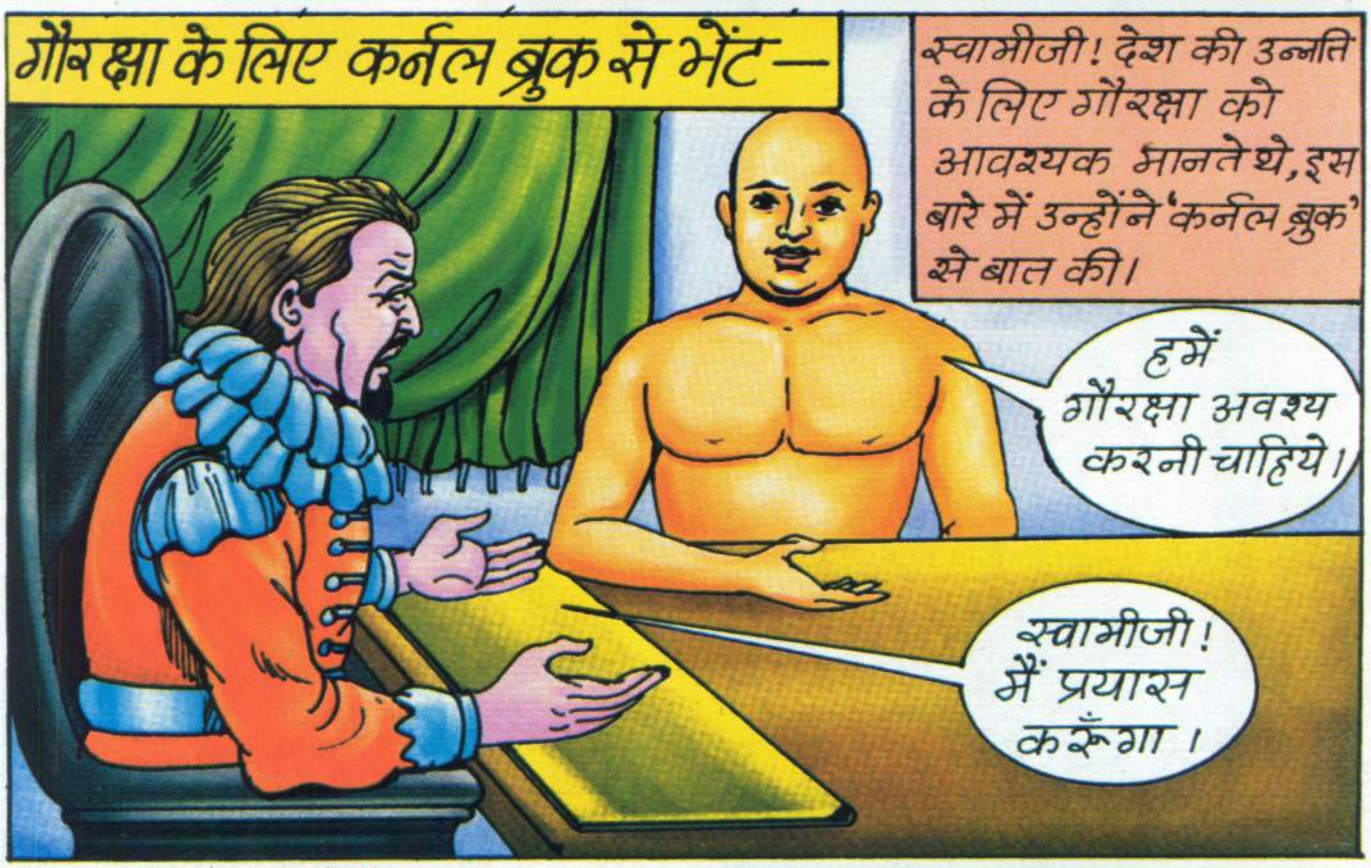

साभार : आचार्य वीरेन्द्र आर्य गुरूजी, योग धाम भुजोड़ी, भुज–कच्छ मो. 09427235525

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आर.एन.आई. - एम.पी.एच.आई.एन. २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन - एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४
वर्ष- ३, अंक- ०८
अवधि- मासिक, भाषा हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ जून २०१४
प्रकाशन आर्ष तिथि : आषाढ़, कृष्णपक्ष, त्रयोदशी
सृष्टि संवत् : १,९६, ०८, ५३, ११६
कलि संवत् : ५,११६
विक्रम संवत् : २०७१, दयानन्दाब्द : १९१

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इंदौर ०९४२५०६१४९१

संपादक गजेश शास्त्री ०९९९३७६५०३१
सह सम्पादक नितिन शर्मा ०९४२५९५५१९१

शब्द संयोजन एवं साज सज्जा - कु. भाग्यश्री शर्मा

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश
ई.मेल.-vaidiksansar@gmail.com

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति - २५/-
वार्षिक सहयोग - २५०/- (१२ प्रति)
त्रैवार्षिक सहयोग - ६००/- (३६ प्रति)
आजीवन सहयोग - २,१००/- (१५ वर्ष)
आधार स्तंभ - ११,०००/- (न्यूनतम्)
विशिष्ट सहयोग - २५,०००/-
अन्य सहयोग - स्वेच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इंदौर
करंट खाता क्रमांक - ३२८५९५९२४७९
आई.एफ.एस. कोड क्र.-एस.बी.आई.एन.०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अंधकार को दूर करने एवं वैदिक ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज - वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ क्र.
वेदामृतम्	स्वामी ध्रुवदेव परिव्राजक	०४
निर्वाचन समाचार	संकलित	०४
राष्ट्र का विकास सरकारी कार्यक्रम नहीं.......	संपादकीय	०५
वेदमंत्र-भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०५
प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी के नाम पत्र	सुखदेव शर्मा	०७
हमारी महान् विभूतियाँ - महाराज स्वयंभू देव	स्वामी उमाशंकर सांख्यायन	०९
- सूर्या सावित्री	शिवनारायण उपाध्याय	०९
-ऋषि दयानन्द की जीवन...	डॉ. भवानीलाल भारतीय	१०
स्वामी दयानन्द सरस्वती और विज्ञान	शिवनारायण उपाध्याय	११
हमारा पर्यावरण	साभार-गीता स्वाध्याय	१३
आओं, याद इन्हें भी कर लें!	ओमप्रकाश बजाज	१३
पदचिन्ह	ओमप्रकाश बजाज	१४
ओम् जप विधि	माता सुषमा वानप्रस्थी	१५
नरेन्द्र मोदी जी सुनो और धर्म का पालन......	पं. नंदलाल निर्भय	१६
आचारो हि परमं धनम्	रामेश्वर दयाल शर्मा	१७
आत्मा-परमात्मा का शुद्ध स्वरूप एवं प्रकृति...	स्वामी ओमानन्द सरस्वती	१८
स्वाध्यायान्मा प्रमद:	स्वामी विवेकानन्द सरस्वती	१९
सत्यार्थ प्रकाश का सप्तम समुल्लास	सुरेशचन्द्र दीक्षित	२१
योगाभ्यास के उपयोगी साधन एवं सरल विधि	सत्यपाल शर्मा	२२
योगदर्शन का विभूतिपाद	कृपालसिंह वर्मा	२३
सृष्टि का सही गणनाक्रम	आचार्य दार्शनेय लोकेश	२४
विश्वकर्मा कौन ?	जगदीश प्रसाद शर्मा	२५
यूँ जीवन कृतार्थ कर ले	रमण नावलीकर	२५
समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए-एक..	डॉ. गंगाशरण आर्य	२८
दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ का वार्षिक.....	ब्र. दिनेश कुमार	२९
संध्या-उपासना	स्वामी शांतानन्द सरस्वती	२९
....सांसद आर्य संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी....	वैदिक संसार	३१
भारत का दूसरा राज्य है असम-एक परिचय	सावरकर वाद प्रचार सभा	३२
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियाँ	संकलित	३३
संस्था परिचय तथा धर्म परिवर्तन समाचार	संकलित	३३
११११ राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ गुटबाजी की भेंट...	आँखों देखी	३४
आर्यों के आधुनिक तीर्थ	आँखों देखी	३५
आर्यजगत् की गतिविधियाँ	संकलित	३७
पाठक-पंचायत	आपके पत्र	४०
वेदनानुकूल शोक-सूचनाएँ	संकलित	४२

वेदामृतम्

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।। (यजु. ३४/३६)

पदार्थ :- हे **(भग)** परमैश्वर्यवान्! ऐश्वर्य के दाता, संसार वा परमार्थ में आप ही हो, तथा हे **(भगप्रणेतः)** आपके ही स्वाधीन सकल ऐश्वर्य हैं, अन्य किसी के अधीन नहीं, आप जिसको चाहो उसको ऐश्वर्य देओ, सो आप कृपा से हम लोगों को दरिद्र छेदन करके हमको परमैश्वर्यवाले कर, क्योंकि ऐश्वर्य के प्रेरक आप ही हो अथवा हे **(प्रणेतः)** सबके उत्पादक, सत्याचार में प्रेरक, उत्तमता से प्राप्ति कराने वाले और पुरूषार्थ के प्रति प्रेरक! हे **(सत्यराधः)** सत्य ऐश्वर्य की सिद्धि करने वाले तथा जो मोक्ष कहाता है उस सत्य ऐश्वर्य का दाता आप से भिन्न कोई भी नहीं! अथवा हे **(सत्यराधः)** विद्यमान पदार्थों में उत्तम धान वाले व उसके देने वाले अथवा सत्य प्रकृतिरूप धनयुक्त! हे **(भग)** अत्यन्त सेवा करने योग्य व सत्यारण करने वालों को सकल ऐश्वर्य देने वाले ईश्वर! आप कृपा कर **(नः)** हम लोगों के लिये **(इमाम् धियं ददत् उदव)** इस प्रशंसा युक्त सर्वोत्तम बुद्धि को देते हुए हम लोगों की उत्तमता से रक्षा कीजिये अर्थात् जिस उत्तम बुद्धि से हम लोग आपके गुण और आपकी आज्ञा का अनुष्ठान ज्ञान इन को यथावत् प्राप्त हो अथवा हमकों सत्यबुद्धि सत्यकर्म और सत्यगुणों को **(उदव)** प्राप्त कर, जिससे हम लोग सूक्ष्म से सूक्ष्म पदार्थों को यथावत् जानें। हे **(भग प्र णो जनय)** सर्वैश्वर्योत्पादक! हमारे लिये पूर्ण ऐश्वर्य को अच्छे प्रकार से उत्पन्न कर, सर्वोत्तम गाय, घोड़े और मनुष्य इनसे सहित अत्युत्तम ऐश्वर्य हम को सदा के लिए दीजिए।

हे **(भग)** सर्वशक्तिमन्! आपकी कृपा से सब दिन हम लोग **(नृभिः नृवन्तः प्र स्याम)** नायक बहुत वीर श्रेष्ठ मनुष्यों (पुरूप, स्त्री, सनातन, भृत्यादि) से युक्त अच्छे प्रकार हों। आपसे यह हमारी अधिक प्रार्थना है कि कोई मनुष्य हममें दुष्ट व मूर्ख न रहें, न उत्पन्न हो, जिससे हम लोगों की सर्वत्र सत्कीर्ति हो, निन्दा कभी न हो। (स.वि .आर्याभि. .वेदभाष्य)

भावार्थ (१):- जो मनुष्य ईश्वर की आज्ञा, प्रार्थना, ध्यान और उपासना का आचरण पहले करके पुरूषार्थ करते हैं वे धर्मात्मा होकर अच्छे सहायवान् हुए सकल ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं।

(ऋ. दया. कृत. ऋग्वेद भाष्य मं. ७/सू. ४१/मं. ३)

भावार्थ (२):- मनुष्यों को चाहिये कि जब जब ईश्वर की प्रार्थना तथा विद्वानों का संग करे तब तब बुद्धि की ही प्रार्थना वा श्रेष्ठ पुरूषों की चाहना किया करें।

(ऋ. दया. कृत. यजुर्वेद भाष्य अ. ३४/मं. ३६)

टिप्पणी:- (क) ईश्वर सत्याचार व पुरूषार्थ में प्रेरक है अर्थात् जीव को अन्तर्यामी रूप से विद्या-विज्ञान देकर सत्याचार व पुरूषार्थ में रूचि उत्पन्न करने वाले हैं।

(ख) प्रकृति, जो कि संसार को बनाने की सामग्री है, ईश्वर की सम्पत्ति है। यह सम्पूर्ण सृष्टि भी ईश्वर का धन है। सत्व, रजस् व तमस् इनकी साम्यावस्था को प्रकृति कहते हैं।

(ग) ईश्वर अत्यन्त सेवा करने के योग्य है अर्थात् ईश्वर की अत्यन्त सेवा (आज्ञापालन) करनी चाहिए क्योंकि जितना हित या सुख जीवों का ईश्वर से होता है उतना अन्य किसी से नहीं।

(घ) ईश्वर सत्याचरण करने वालों को सज्जनों को ही अपना ऐश्वर्य प्रदान करते हैं, दुर्जनों को दुष्टाचरण करने वालों को नहीं।

(ङ) ईश्वर जीवों की अनेक प्रकार से रक्षा करते हैं उनमें एक प्रकार है - **'सर्वोत्तम बुद्धि या सद्-बुद्धि को प्रदान करके'**। सद्-बुद्धि मिलने पर मनुष्य अच्छे कर्मों, अच्छे स्वभावों व अच्छे स्वभावों व अच्छे गुणों को धारण करता है जिससे वह दु:खों से बच जाता है।

(च) ईश्वर मनुष्यों से यह चाहते हैं कि वे ऐश्वर्यशाली, पुरूषार्थी, सत्याचारी, विद्वान् बनें व सत्कीर्ति से युक्त हों।

-स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक (उपाध्याय)
दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन
रोजड़, जिला-साबरकांठा (गुज.)
दूरभाष-(०२७७०)-२८७४१८,२८७५१८

निर्वाचन समाचार

अध्यक्ष

(१) आर्य समाज बड़नगर, जिला-उज्जैन (म.प्र.) के निर्वाचन सदस्यों की साधारण सभा में दिनांक २६ जनवरी २०१४ को सर्व सम्मति से सम्पन्न हुए। **अध्यक्ष**-राजेन्द्र जी यादव, **मंत्री**-अरूण जी भावसार, **कोषाध्यक्ष**-रामेश्वर जी नागल, **प्रांतीय प्रतिनिधि**-गोपाल जी चोटिया आदि का मनोनयन किया गया।

(२) आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर (राज.) की वार्षिक साधारण सभा की बैठक सम्पन्न हुई जिसमें निर्वाचन अधिकारी डॉ अशोक आर्य की देखरेख में सर्वसम्मती से निर्वाचन सम्पन्न हुए। **प्रधान**-भंवरलाल आर्य, **मंत्री**-ललिता मेहरा, **उपप्रधान**-अनन्त देव शर्मा, कृष्ण कुमार सोनी, **उपमंत्री**-संजय शांडिल्य, भूपेन्द्र शर्मा, **कोषाध्यक्ष**-प्रेम नारायण जायसवाल, **प्रचार मंत्री**-रामदयाल, **पुस्तकालयाध्यक्ष**-दिनेश अग्रवाल, **अन्तरंग सदस्य**-डॉ. अमृतलाल तापड़िया, डॉ. शारदा गुप्ता, श्रीमती नूतन चौहान, मुकेश पाठक को मनोनित किया गया।

(३) आर्य समाज, विश्राम बाग, बड़ौदा (गुजरात) की वर्ष २०१४-१७ की कार्यकारिणी का गठन सर्वसम्मति से निम्नानुसार किया गया। **प्रधान**-श्री आर. पी. वर्मा, **उपप्रधान**-श्रीमती लीला बहन वेलाणी, **मंत्री**-श्री डॉ. भगवानस्वरूप आर्य, **उपमंत्री**-श्री अमृतभाई वाड़ीया, **कोषाध्यक्ष**-श्री भवनभाई दिवाणी, **पुस्तकालयाध्यक्ष**-श्री अशोकभाई चुड़ासमा, **सदस्य**-श्री डॉ. आदित्य आर्य, श्री प्रविणभाई कोरड़ीया, श्री रमणभाई पटेल, श्री भरतभाई पटेल, श्रीमती रश्मि सिंह, श्रीमती सुशीला बहन वेलाणी, **परामर्श दाता**-श्री रतनशीभाई वेलाणी, श्रीमती कमलेश बहन ठाकुर, श्री अनिलभाई पटेल, श्री रमेशभाई लहेर, श्री कृष्ण कुमार, श्री महेन्द्र दिवाणी को मनोनित किया गया।

संपादकीय

राष्ट्र का विकास सरकारी कार्यक्रम नहीं! जन आंदोलन बने - मोदी

समूचे विश्व की करीब सात अरब आबादी में से सवा अरब लोगों की विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्र का करीब एक हजार वर्ष की पराधीनता के पश्चात् प्राप्त स्वाधिनता उपरांत स्वनिर्धारण पद्धति की हमारे शासन तंत्र को हम सवा सौ करोड़ लोगों में से कौन-कौन हमारा प्रतिनिधित्व करते हुए संचालित कर जिसे लोकतांत्रिक पद्धति कहा जाता है।

भारत की स्वाधीनता पश्चात् १६वीं लोकसभा के गठन के लिये आम चुनाव हुए करीब अस्सी करोड़ लोगों ने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इन चुनावों में भाग लिया, चौंकाने वाले विस्मयकारी परिणाम प्राप्त हुए! स्वाधीनता पश्चात् भारत के सत्ताधारी दल के रूप में समूचे विश्व में प्रतिष्ठा बना चुकी कांग्रेस की हार इस प्रकार हुई कि वह मान्य विपक्ष की भूमिका के लिये ५४ सांसदों का आंकड़ा भी नहीं जुटा सकी और येन-केन-प्रकारेण सत्ता तक कुछ अवसर तक पहुँचने वाली राजनैतिक पार्टी जो प्रमुख विपक्षी दल के रूप में स्थापित हो चुकी भारतीय जनता पार्टी को प्रथम बार पूर्ण बहुमत से सत्ता की प्राप्ति हुई। इन चुनावों में एक मात्र भारतीय जनता पार्टी ने विकास पुरुष के रूप में अपनी पार्टी के गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी को भावी प्रधानमंत्री के रूप में प्रस्तुत कर प्रथम बार मोदी के नेतृत्व में चुनाव लड़ा। अत: बहुमत प्राप्त होने पर नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने २६ मई को स्वतंत्रता के बाद जन्में व्यक्ति ने देश के प्रधानमंत्री के रूप में प्रथम बार एशिया महाद्वीप के पड़ोसी देशों के समूह, जिसे सार्क देशों का समूह कहा जाता है के राष्ट्र प्रमुखों अथवा उनके गणमान्य प्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति में एतिहासिक समारोह पूर्वक शपथ ग्रहण की।

इन स्थितियों के चलते राष्ट्र के समस्त नागरिकों के साथ-साथ समूचे विश्व की दृष्टी भारत में पल-प्रतिपल घट रहे घटनाक्रमों पर होना स्वाभाविक है। स्वाधीन भारत के इतिहास में यह पहला चुनाव ऐसा है जिसका शोर गली बाजारों में कम किंतु सोश्यल नेटवर्किंग एवं दूर संचार माध्यमों के माध्यम से घर-घर तथा जन-जन तक पहुँचा। पहली बार कोई सहानुभूति लहर नहीं होकर सुशासन की आशा-अपेक्षा के साथ बदलाव की लहर देखी गई, हालांकि वैदिक संसार के मार्च २०१४ के संपादकीय **'अपरिपक्व लोक विफल होता लोकतंत्र'** और अप्रैल २०१४ का संपादकीय **'मत रूपी शस्त्र का धारणकर्ता कौन?'** की प्रासंगिकता इन चुनावों में भी सिद्ध हुई, क्योंकि चुनाव आयोग और मिडिया ने जबरदस्त मतदान प्रतिशत बढ़ने का ढिंढोरा पिटा हो किन्तु बढ़े हुए मतदाताओं, बढ़े हुए मतदाता अधिकांश शिक्षित युवा वर्ग के सोश्यल नेटवर्किंग एवं दूरसंचार माध्यमों का प्रथम बार चुनावों में जबरदस्त उपयोग, सर्वाधिक ८२५१ उम्मीदवार होकर चुनाव आयोग द्वारा बढ़ाई गई चुनाव खर्च राशि ७० लाख का अधिकाधिक उपयोग करते हुए विशाल संख्या में आम सभायें, श्री डी. तकनीक से सभायें, रोड शो, रैलियों, टेलीविजन विज्ञापनों आदि के माध्यम से व्यापक चुनाव प्रचार, चुनाव आयोग द्वारा भी स्टार प्रचारकों का उपयोग करते हुए मतदान करने हेतु प्रेरित किये जाने के लिये व्यापक प्रचार-प्रसार, हाल ही में हुए, पाँच राज्यों के विधानसभा चुनाव एवं उनके जबरदस्त परिणाम तथा इन चुनावों में एक नये राजनैतिक दल आप पार्टी का उदय तथा इस आप पार्टी द्वारा दिन-प्रतिदिन घटित किये जा रहे नौटकी घटनाक्रमों, भारतीय जनता पार्टी के घोषित प्रधानमंत्री उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी को लगभग सभी प्रमुख विरोधी दलों ने धर्म-जाति का ध्रुवीकरण करते हुए प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मतदाताओं के एक बड़े वर्ग को इस प्रकार भयाक्रांत करने का प्रयास किया जैसे मोदी के प्रधानमंत्री बनते ही उनके प्राण हर लिये जावेंगे अथवा उन्हें देश निकाला दे दिया जावेगा आदि कारणों से **राष्ट्र का राजनैतिक पारा इन चुनावों में सर्वाधिक ऊपर चढ़ा हुआ था** और चुनावी चर्चाएँ प्रत्येक व्यक्ति की जिह्वा पर थी। इस अनुपात से अन्य चुनावों से वर्तमान चुनाव की तुलना की जावे तो हम पाऐंगे की इन चुनावों में मतदान का प्रतिशत जो होना था वह नहीं रहा। **प्रश्न उठता है कि क्या सुशासन हेतु बदलाव की आवश्यकता केवल ३१ प्रतिशत लोगों को ही थी? जिन्होंने भारतीय जनता पार्टी को वोट दिया।**

चुनाव आये और चले गये नये प्रधानमंत्री और उनकी टीम ने अपना कार्यभार ग्रहण कर लिया, अब रह गया तो सिर्फ अटकलों का बाजार ३१ प्रतिशत मतदाता, जिन्होंने भारतीय जनता पार्टी को नरेन्द्र मोदी को केन्द्र में रखकर वोट दिया, वे आवश्यकता से अधिक आशा-अपेक्षायें लगाये संभावित हवाई किले बना रहें है तो ६९ प्रतिशत वे मतदाता और उनके नेता जिन्होंने भारतीय जनता पार्टी को वोट नहीं दिया वे मुंगेरीलाल के हसीन सपनों की तरह ऐसे सपने देख रहे हैं जैसे नरेन्द्र मोदी कोई बच्चे हों और थोड़े दिनों में इस सत्ता रूपी खिलौने से उनका मन ऊब जायेगा तथा वह यह खिलौना मतदाताओं की सीर पर फेंक कर भाग छूटेंगे, मिस्टर अरविंद केजरीवाल की तरह।

वेद मंत्र एवं भावार्थ

ओ३म् ओमासश्चर्षणीधतो विश्वे देवास आ गत।
दाश्वांसो दाशुषः सुतम्।। ऋग्वेद १/३/७

भावार्थ -ईश्वर विद्वानों को आज्ञा देता है कि तुम लोग एक जगह पाठशाला में अथवा इधर-उधर देश देशान्तरों में भ्रमते हुए अज्ञानी पुरुषों को ज्ञान देके विद्वान् किया करो जिससे सब मनुष्य विद्या धर्म और श्रेष्ठ शिक्षा युक्त होके अच्छे-अच्छे कर्मों से युक्त होकर सदा सुखी रहें।

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

वैदिक संसार के उद्देश्य

* महान् योगी संन्यासी, महर्षि, अखंड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्वराष्ट्रप्रेमी, नवजागरण के सूत्रधार, अछूत एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खंडन-मंडन के प्रणेता, अंधविश्वास नाशक, पाखंड खंडनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, सत्यार्थ प्रकाश एवं सद्साहित्य प्रकाशक, दयालु, दिव्य दयानंद के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
* वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धांतों, ऋषि दयानंद प्रणीत संदेशों को प्रकाशित करना।
* आमजन में व्याप्त अशिक्षा, धर्मान्धता, अंधविश्वास, पाखंड, कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
* आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, संदेशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
* आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

इन लोगों का कहना है कि नरेन्द्र मोदी द्वारा चुनाव प्रचार के समय गुड गवर्नेंस का प्रचार मात्र छलावा है अर्थात् विकास वगैरह कुछ होना नहीं है। आईये इन तमाम अटकलों से ऊपर उठकर हम विचार करें कि **क्या अकेले व्यक्ति नरेन्द्र मोदी के द्वारा अच्छे कार्य करने मात्र से सवा सौ करोड़ लोगों का विकास हो सकता है?** क्या नरेन्द्र मोदी कोई जादूगर है, जो डंडा घुमायेगा और राष्ट्र के विकास की तस्वीर चमकने लग जाएगी?

ये मात्र प्रश्न नहीं! यक्ष प्रश्न हैं। जिसे राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को समझना होगा, **केवल आशा और अपेक्षाओं के सपने बुनने से परिस्थितियाँ नहीं बदलती, परिस्थितियों को अनुकूल ढालने के लिये योग्यता, निष्ठा, समर्पण, कर्मठता की आवश्यकता होती है।** नरेन्द्र मोदी ने अपने चुनाव प्रचार के दौरान स्थान-स्थान पर उपस्थितों से नारा लगवाया '**सबका साथ सबका विकास**' तथा उन्होंने कहीं भी कभी भी यह नहीं कहा कि मैंने गुजरात का विकास कर गुजरात की तस्वीर बदल दी उन्होंने गुजरात के विकास का सम्पूर्ण श्रेय ६ करोड़ गुजरातियों को दिया। चुनाव के पश्चात् १६ मई को परिणाम प्रास होना प्रारंभ हए दोपहर में भारतीय जनता पार्टी के बहुमत प्रास करने के संकेत प्रास होने लगे नेताओं की प्रतिक्रियाएं प्रास होने लगी प्रिन्ट मिडिया एवं इलेक्ट्रानिक मिडिया के संवाददाताओं का जमघट नरेन्द्र मोदी की प्रतिक्रिया पास्त करने के लिये लगने लगा नरेन्द्र मोदी अपनी माँ का आशीर्वाद लेने गये वहाँ भी संवाददाताओं को प्रतिक्षा थी की मोदी कोई प्रतिक्रिया देंगे किन्तु नरेन्द्र मोदी शाम तक बिल्कुल शांत और चुप रहे उन्होंने अपनी चुप्पी तोड़ी बड़ौदा पहुँचकर। कहने को तो नरेन्द्र मोदी उन्हें पाँच लाख सत्तर हजार वोटों के रिकार्ड मतों से विजय दिलवाने वाले मतदाताओं का आभार व्यक्त करने पहुँचे थे किन्तु चुनाव परिणाम के बाद प्रथम सभा और प्रथम सन्देश मात्र बड़ौदा के मतदाताओं के प्रति आभार न होकर अघोषित रूप से सम्पूर्ण **राष्ट्रवासियों के नाम सन्देश था जिसमें गुढार्थ छिपा हुआ है कि राष्ट्र के सम्पूर्ण विकास की तड़प और उस तड़प की पूर्ती कैसे होगी का सन्देश था जिसे प्रत्येक नागरिक को समझना और आत्मसात करना होगा तभी राष्ट्र का और राष्ट्र के सवा सौ करोड़ लोगों का विकास संभव है।**

क्या कहा मोदी जी न - मोदी जी ने बड़ौदा की उस प्रथम सभा के मंच से कहा देश को स्वतंत्रता दिलवाने हेतु अनेक महान् विभूतियों ने अपने प्राणों की आहुतियाँ दी, अनेक लोग जेल गये तथा प्रताड़नाए झेली अनेक लोगों ने अपने-अपने हीसाब से कार्य किया किन्तु महात्मा गांधी ने देश की स्वतंत्रता की लड़ाई को जन आंदोलन में बदला उन्होंने देश के जन-जन को स्वतंत्रता की लड़ाई का भागीदार बनाया।

उन्होंने बगैर किसी आरोप-प्रत्यारोप के कहा देश का विकास सरकारी कार्यक्रम नहीं जन आंदोलन बने, सरकार ने अस्पताल बना दिया लोग गये इलाज करवाकर आ गये, सरकार ने स्कूल बनवा दी बच्चे गये पढकर घर आ गये इससे राष्ट्र का विकास नहीं होने वाला यह तो विकास का सरकारी कार्यक्रम बनकर रह गया। **राष्ट्र के विकास के लिए राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र का सिपाही बनना होगा।** अस्पताल के कर्मचारी को यह अहसास करना होगा की वह राष्ट्र के विकास का सिपाही है, स्कूल के अध्यापक को अपना कार्य इस जिम्मेदारी से करना होगा कि वह राष्ट्र का सिपाही है। अगर सड़क पर झाडू लगाने वाला भी अपने कार्य को ईमानदारी से कर रहा है तो वह राष्ट्र के विकास का सिपाही है हमारा देश सवा सौ करोड़ लोगों की विशाल जनसंख्या वाला देश है जब **सवा सौ करोड़ लोग विकास पथ पर एक कदम आगे बढ़ाते है तो देश सवा सौ करोड कदम आगे बढ़ता है।** जिसे विश्व में विकास करने से कोई रोक नहीं सकता। **सरकार बनाने के लिए तो जनता ने पूर्ण बहुमत दे दिया किन्तु देश बनाने के लिए हमें प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी आवश्यक है।** हमें विपक्ष के सहयोग के साथ उन राजनैतिक दलों की भी आवश्यकता होगी जिनका कोई भी सांसद विजयी नहीं होकर संसद में नहीं पहुँचा। राष्ट्र के विकास में सभी की भागीदारी आवश्यक है चुनाव गये बात गयी राष्ट्र को विकास की पटरी पर आगे बढ़ाने हेतु हम सबको साथ लेकर आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे। इसके लिये उन्होंने उपस्थितों से नारा लगवाया '**सबका साथ-सबका विकास।**'

उपरोक्तानुसार श्रद्धेय नरेन्द्र मोदी जी की सोच स्पष्ट है राष्ट्र के विकास में राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक विकास का सिपाही बन राष्ट्र विकास को जन आंदोलन बनाये।

किन्तु राष्ट्र के नागरिकों को राष्ट्र के विकास का सिपाही बनाने वाली फैक्ट्रियाँ बंद पड़ी हैं। अत्यन्त विडम्बना का विषय है कि राष्ट्र का विकास सरकारी कार्यक्रम नहीं तो दूर! वर्तमान में तो राष्ट्र की स्वतंत्रता तथा गणतंत्र दिवस एवं राष्ट्र के लिये बलिदान देने वाले महापुरूषों के बलिदान दिवस जैसे विशिष्ट पर्व एवं दिवस, सरकारी पर्व तथा आयोजन बन कर रह गये हैं प्रत्येक जन को राष्ट्र के विकास का सिपाही बनना तो दूर अगर स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस तथा देश के महापुरूषों की जयन्तियाँ एवं पुण्यतिथियों के समारोह भी सरकारी स्तर पर आयोजित नहीं किये जावें तो कुछ अपवादों को छोड़कर अधिकांश जन को इनसे कोई लेना देना नहीं है। **आज राष्ट्र को तथा राष्ट्र के हितों-अहितों को अपना मानना तो दूर व्यक्ति अपने जन्म देने वाले माता-पिता का ही नहीं हो रहा है तो वह राष्ट्र का सिपाही कैसे बनेगा?** राष्ट्र के सिपाही बने बाल्यकाल में शंकराचार्य जी जिन्होंने विवाह न करने का संकल्प लेकर पैदल सम्पूर्ण राष्ट्र ने घूम-घूम कर जन-जागरण किया। राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के लिये चार आध्यात्मिक पाठ (धामों) की स्थापना की। राष्ट्र के सिपाही बने महाराणा प्रताप, भामाशाह, गुरुगोविंद सिंह, छत्रपति शिवाजी, तात्या टोपे, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, वीर छत्रसाल, मंगल पांडे, वीर बालक हकीकतराय जैसे अनेकों वीर महापुरुष जिन्होंने अपनी धर्म संस्कृति तथा राष्ट्र की आन-बान-शान के लिये प्राणों का मोह त्याग मृत्यु का आलिंगन किया।

राष्ट्र के सिपाही बने महर्षि दयानन्द जिन्होंने बाल्यकाल में शिवलिंग पर चढ़े चूहे को देखकर यह मानने से इन्कार कर दिया कि यह सच्चा शिव (ईश्वर) नहीं हो सकता क्योंकि जो एक चूहे से अपनी रक्षा नहीं कर सकता वह इस जगत् की क्या रक्षा करेगा? तथा वे अल्पायु में घर परिवार छोड़कर सच्चे शिव की खोज में निकल पड़े तथा अनेकों संघर्षों विपत्तियों को झेलते हुए गुरु विरजानन्द से ज्ञान की तृसी पा जब विदा होने लगे तो गुरु के द्वारा इस राष्ट्र के पुनरुद्धार के लिये गुरु दक्षिणा स्वरूप जीवन मांगे जाने पर सच्चे अर्थों में अपना जीवन समर्पित किया। जीवन में करीब १७ बार प्राण हरण की घटनाओं के द्वारा मौत से साक्षात्कार करने के बाद भी अडिग रहने वाले दयानन्द की मृत्यु असमय हुई तथा अपने करीब २० वर्षों के योगदान से महिलाओं और शोषितों-पीड़ितों का उद्धार करते हुए **स्वराज्य का सन्देश दिया जो स्वतंत्रता की बीज मंत्र बना और आज हम स्वतंत्रता में श्वास ले रहे हैं।** राष्ट्र के सिपाही बने खुदीराम बोस जिन्होंने १७ वर्ष की आयु में फांसी का फंदा चुना राष्ट्र के सिपाही बने भगतसिंह जो बचपन में बन्दुकों की खेती का सपना संजोते हैं और मात्र २३ वर्ष की आयु में राष्ट्र की बलीवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर देते हैं। राष्ट्र के विकास के सिपाही बने सुभाषचन्द्र बोस जिन्होंने नारा दिया '**तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दुंगा**' और अंग्रेजों की चूले हिलाई, राष्ट्र के विकास के सिपाही बने चन्द्रशेखर जो आजाद थे और

आजाद ही रहे। ऐसे एक-दो नहीं हजारों वीर राष्ट्र के सिपाही बने जिन्होंने अंडमान निकोबार जैसी अनेक जेलों में अंग्रेजों की अमानवीय प्रताड़नाएँ झेली और असमय काल कवलीत हो इतिहास के पन्नों में अमर हो गये। राष्ट्र के सिपाही बने महात्मा गांधी जो पोरबन्दर रियासत के दीवान के पुत्र होने और विदेश से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद उन्होंने उपलब्ध समस्त सुख-सुविधाएँ तथा अंग्रेजी सूट-बूट उतार फेकें और हाथ से चलाये हुए चरखे का सुत कातकर कपड़ा बनाकर पहना और देशवासियों के आदर्श तथा प्रेरणा स्त्रोत बने तब जाकर जन-जन का विश्वास और स्नेह अर्जित कर स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन में बदलने में सफल हो पाये यह बात और है कि महात्मा गांधी को जिस प्रकार देश की स्वतंत्रता का सम्पूर्ण श्रेय कांग्रेस ने देकर अपने सत्ता के शोरूम में स्थापित कर राष्ट्रपिता का झूठ फैलाकर ६० वर्षों तक अपनी सत्ता रूपी दुकानदारी चलायी। स्वतंत्रता

भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री - माननीय श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी को
श्याम जी कृष्ण वर्मा की अस्थियाँ गंगा में विसर्जित करने बाबद लिखा गया पत्र

श्रद्धेय महानुभाव, सादर नमस्ते

सर्वप्रथम आपके नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी को निर्वाचन में पूर्ण बहुमत प्राप्त होने और करीब ३० वर्षों पश्चात् राष्ट्र के दबावमुक्त प्रधानमंत्री बनने तथा राष्ट्र को एक धर्म संस्कृति एवं राष्ट्र निष्ठा से ओत-प्रोत विचारधारा के व्यक्ति के नेतृत्व में स्थिर और दृढ़ सरकार प्राप्त होने के लिये आप सर्वाधिक बधाई एवं आभार के योग्य हैं। अत: आपको इस **ऐतिहासिक विजय के लिए बहुत-बहुत बधाई तथा हार्दिक आभार-अभिनन्दन।**

विगत दिनांक २०/०५/२०१४ को दैनिक भास्कर में समाचार प्रकाशित हुआ कि आपने दिनांक १७/०५/२०१४ को वाराणसी में गंगा पूजा के समय राष्ट्र के महान सपूत महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा की अस्थियों को गंगा में विसर्जित करने की घोषणा की है।

अस्थियों को गंगा में विसर्जित किया जाना निम्न कारणों से उचित नहीं है-

१. श्याम जी कृष्ण वर्मा मात्र स्वतंत्रता सेनानी नहीं थे, वे स्वतंत्रता सेनानी बनने से पूर्व महर्षि दयानन्द के शिष्य बने।

२. महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से ही वे आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी में संस्कृत पढ़ाने के लिये लंदन गये थे तथा दयानन्द जी की प्रेरणा से ही उनका मुख्य लक्ष्य विदेश में रह रहे भारतीयों में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये जागृति उत्पन्न करना था तथा महर्षि के निर्देश पर ही वे अपनी धर्मपत्नी भानुप्रिया को साथ लेकर गये थे।

३. महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम शिष्य होने के नाते वे भी वैदिक धर्म सिद्धांतों के प्रति समर्पित थे क्योंकि महर्षि के जीवन का चरम और परम लक्ष्य था वैदिक धर्म के सिद्धांतों की पुनर्स्थापना।

४. वैदिक धर्म के सिद्धांतों के अनुसार महर्षि अस्थियों को जल में प्रवाहित करने के प्रबल विरोधी थे। उनका मानना था की इससे जल प्रदूषित होता है। उनका मानना था कि आत्मा मृत नहीं होती केवल शरीर मृत होता है और पंचभूत तत्वों से निर्मित शरीर को वैदिक विधि से घृत, हवन सामग्री, कपुर आदि सुगंधित पदार्थों के साथ वैदिक मंत्रोच्चार से अंत्येष्टि कर्म कर देने के बाद सम्बन्धित मृतक के प्रति कोई कर्म शेष नहीं रहता। अस्थियों के बारे में उनका कहना था कि अस्थियों को अनुपयोगी बंजर भूमि में दबा देना चाहिये। **अपने विषय में उन्होंने घोषित किया था कि मेरी मृत्यु पश्चात् मेरी अस्थियों को जल में न बहाकर खेतों में बिखेर देना।**

५. आपने भी अपने चुनाव प्रचार के दौरान गंगा को करोड़ों भारतियों की आस्था का केन्द्र बताते हुए इसके शुद्धिकरण पर बल दिया है।

उपरोक्त कारणों से श्याम जी कृष्ण वर्मा की **अस्थियों को गंगा में विसर्जित किये जाने से श्याम जी कृष्ण वर्मा एवं उनकी राष्ट्रीय चेतना के गुरू महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धांतों के विपरीत कार्य होगा** और वैसे भी प्रमुख व्यक्तियों द्वारा किये गये कार्यों का अनुसरण सामान्य जन करता है, अस्थियों को शुद्ध जल में प्रवाहित करने मात्र से मोक्ष होना अंधविश्वास है। मोक्ष की प्राप्ति तो व्यक्ति के द्वारा किये गये अच्छे कार्यों के फलस्वरूप परमात्मा की व्यवस्थानुसार होती है। **अपने आत्मीयजनों से भावनात्मक स्नेह सभी का होता है। इसी भावनात्मक स्नेह का फायदा उठाकर धर्म क्षेत्र में सक्रिय कतिपय तत्वों ने अपने स्वार्थ की आड़ में अस्थियों को शुद्ध जल स्त्रोतों में विसर्जित करने का पाखण्ड फैला दिया।**

मानव मात्र की जीवनदायिनी नदियों के जल को प्रदूषित होने के अहम् कारणों में से शवों को नदियों में प्रवाहित करना, अस्थियों को विसर्जित करना तथा पिण्ड दान आदि अन्य क्रियाओं के माध्यम से पूजन सामग्रियों का विसर्जन करना भी प्रमुख कारण है।

समाज में व्याप्त ऐसे ही अंधविश्वासो और पाखण्डों के विरुद्ध शँखनाद करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने **'वेदों की ओर लौटने'** का सन्देश दिया। महर्षि के द्वारा रचयित अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा गया वाक्य **'कोई कितना ही कुछ करे किन्तु स्वदेशीय राज्य सर्वोपरि और उत्तम होता है'** आजादी के दिवानों का प्रेरणा स्त्रोत बना और लाला लाजपतराय, करतारसिंह सराबा, रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, श्याम जी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, वीर सावरकर जैसे अनेकों स्वतंत्रता सेनानी थे जिनके प्रेरणा स्त्रोत महर्षि दयानन्द थे।

महर्षि की प्रेरणा से श्याम जी कृष्ण वर्मा द्वारा लंदन में किये गये कार्यों के प्रतिफलस्वरूप अनेकों विभूतियों ने राष्ट्र की स्वतंत्रता में योगदान दिया जिसमें वीर सावरकर भी एक थे।

अत: श्याम जी कृष्ण वर्मा एवं उनकी पत्नी की अस्थियों को गंगा में विसर्जित किया जाना, दिवंगत महानुभावों के सिद्धांतों के विपरीत तो होगा ही गंगा के शुद्धिकरण के भी अनुकूल नहीं होगा।

आंदोलन को आगे बढ़ाने में गांधी जी का अहम् योगदान जरूर माना जा सकता किंतु सम्पूर्ण श्रेय गांधी जी को नहीं दिया जा सकता क्योंकि अगर गांधी जी राष्ट्रपिता हैं तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र पितामह हैं। अगर महर्षि दयानन्द न होते तो स्वामी श्रद्धानन्द नहीं होते जिन्होंने गांधी जी को सर्वप्रथम महात्मा कहकर संबोधित किया। महर्षि दयानन्द न होते तो श्याम जी कृष्ण वर्मा, खुदीराम बोस, वीर सावरकर, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, करतारसिंह सराबा, भाई परमानन्द जैसे अनेकों अंग्रेजों की नाक में दम करने वाले गरम दल के क्रांतिकारी नहीं होते। राष्ट्र की स्वतंत्रता में गरम दल नहीं होता तो अंग्रेज नरम दल के नेताओं को बहलाते-फुसलाते जरूर किन्तु देश से अपना कब्जा नहीं छोड़ते यही कारण है कि अंग्रेजों के बहकावे में आकर तथा गांधी जी की अति उदारवादी अनेक गलतियों की सजा भारत स्वतंत्र होने के उपरांत आज ६६ वर्षों बाद भी भुगत रहा है। देश की स्वतंत्रता के बीजारोपण का सम्पूर्ण श्रेय अगर किसी को जाता है तो वह महर्षि दयानन्द थे इस विषय में माह जनवरी २०१४ के सम्पादकीय में विस्तार से प्रकाश पूर्व में डाला गया था।

विषय को विस्तार में नहीं ले जाते हुए इतना ही कहना चाहते हैं कि हमारे जन-जन प्रीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कहना सौ प्रतिशत सत्य है कि **'विकास सरकारी कार्यक्रम नहीं जन आंदोलन बने'** स्पष्ट सन्देश है कि राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को वह चाहे बड़े अधिकारी-नेता पद पर आसीन हो अथवा दिहाड़ी पर सफाई करने वाला अन्तिम व्यक्ति सभी को राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को भी भली भांति समझना तथा निर्वहन करना होगा।

आज राष्ट्र के नागरिकों की हालात कुछ अपवादों को छोड़कर यह है कि अधिकारों के लिये सब लड़ते दिखते हैं किन्तु जिम्मेदारी से पीछे हट जाते है। जब तक बेरोजगार रहते हैं तब तक सरकार और भ्रष्टाचार को कोसते रहते हैं किन्तु नौकरी मिलते ही वही कृत्य करने लग जाते हैं जिनको कोस रहे थे। राष्ट्र के विकास के सिपाही की भूमिका का अवसर प्राप्त होने पर उस अवसर को इस तरह भुनाते हैं जैसे लूटमारी का लायसेन्स मिल गया हो।

हमने पहले भी लिखा है कि **आज राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अव्यवस्था, दुराचार, भ्रष्टाचार से त्रस्त है तो ये कृत्य आखिर कर कौन रहा है?** क्योंकि इस्ट इंडिया कंपनी वाले तो १५ अगस्त १९४७ को हमारा देश हमारे हवाले कर चले गये और अंग्रेजों के पहले जो इस राष्ट्र के पूर्ण इस्लामीकरण के लिये मार-काट, लुटपाट कर रहे थे उन्होंने भी अंग्रेजों की सरपरस्ती में अपना हिस्सा पहले ही मांग लिया और वे भी चले गये अब वे कुछ समस्या पैदा करने की कोशिश जरूर करते हैं किन्तु हमारी सजग सुरक्षा एजेन्सियों के कारण वे भी बेबस है। **अब रह गये हम और हमारा राष्ट्र तो यहाँ उत्पन्न समस्याओं का जिम्मेदार कौन?**

माना की स्वार्थ के बगैर व्यक्ति का काम नहीं चलता राष्ट्र से प्रेम करना भी तो स्वार्थ है। अपने लड़के को नौकरी मिले वह कार-बंगले का मालिक बने यह सोचना कौन सी गलत बात है। यह भी तो स्वार्थ की श्रेणी में आता है। स्वार्थ तो हो किन्तु नैतिक मुल्यों की नींव पर हो अनैतिक मुल्यों से साधा गया स्वार्थ ही पाप कहलाता है।

हम वैदिक संस्कृति को मानने वाले लोग है वेद हमें सन्देश देता है **'तेन त्यक्तेन भूंजिथा'.....** अर्थात् हम त्याग पूर्वक भोग करें न कि छीन-झपट कर तथा अव्यवस्था फैलाकर हम जो भी भोग करे उसमें भी त्याग की भावना हो अर्थात् हमारे पास एक रोटी है तो उसमें से भी आधी रोटी किसी अन्य भुखे को देने की भावना हो जब राष्ट्र के नागरिकों में यह भावना होती है तभी वे सच्चे अर्थों में नागरिक कहे जाने योग्य है। इस प्रकार का वैचारिक चिन्तन रखने वाले ही राष्ट्र के विकास के सिपाही बन सकते हैं। राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक जब इस भावना को लेकर जीवन जीता है तो विकास जन आंदोलन में बदलता है और राष्ट्र विकास पथ पर आगे बढ़ विश्वगुरू बनता है।

किन्तु इस प्रकार की शिक्षा हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति से ही प्राप्त हो सकती है हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति से राष्ट्र के विकास के सिपाही बनने वाली फैक्टरी तो लार्ड मैकाले ने अपनी दूरगामी योजना कि एक दिन ऐसा आयेगा कि भारतीय लोग अपनी संस्कृति सभ्यता से नफरत करेंगे वाली शिक्षा पद्धति थोपकर बंद कर दी तथा महर्षि दयानन्द के अवतरण के पश्चात् उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज रूपी फैक्टरी से राष्ट्र के सिपाही बनने लगे किन्तु अत्यन्त खेद का विषय है कि देश की स्वतंत्रता के पश्चात् महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज को भूला दिया गया साथ ही **'वेदों की ओर लौटो'** के सन्देश तथा आध्यात्मिक विकास को भूलाकर लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति को और भौतिक विकास को ही सर्वोपरि स्थान दे दिया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि राष्ट्र के विकास के सिपाही बनाने वाली फैक्टरी आर्य समाज भी रूग्णावस्था को प्राप्त हो गई तो बताओं राष्ट्र के विकास के सिपाही कैसे बनेंगे? अब तो खाओ पियो मौज करो कि विकृत विचारों के काले अंग्रेज जरूर पैदा हो रहे हैं। जिनके लिये राष्ट्र माता नहीं होकर मात्र जमीन का टुकड़ा है। जो अपने माता-पिता के नहीं होते तो परोपकार की भाषा एवं राष्ट्र को माता क्या समझेंगे?

इष्ट इंडिया कंपनी के लिये बाबू बनाने वाली लार्ड मैकाले प्रणीत व्यवसाय परक शिक्षा पद्धति ने इस राष्ट्र के नागरिकों को भोगवादी और अवसरवादी बना दिया है उनका चरित्र दोहरा बन गया है। उनकी कथनी और करनी में भूमि और आकाश का अंतर उत्पन्न हो गया है। वह भ्रष्टाचार को कोसता है, गाली देता है किन्तु जब उसका कोई कार्य उसकी किसी कमी के कारण अटकता है तो वह स्वयं इस उधेड़बुन में रहता है कि ले-देकर मेरा काम हो जावे। जब वह किसी पद पर काबिज हो जाता है तो ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठा को किसी गहरे जल में फेंककर उसी कार्य में रूची लेता है जिसमें अतिरिक्त रूप से कुछ प्राप्त हो राष्ट्र के विकास से उसका कोई वास्ता नहीं उसे तो केवल और केवल अपने भौतिक विकास से मतलब है उसकी दृष्टि में राष्ट्र के लिये मरने वाले शायद मूर्ख ही होंगे उनकी जन्मतिथि और पुण्यतिथियों तथा राष्ट्रीय पर्वों पर सरकारी खर्चों से होने वाले आयोजनों की जिम्मेदारी अगर उसके पास है तो उसमें भी उसका कमीशन पक्का। उपरोक्त आयोजन का दिन तो मात्र जय-जयकार कर अपने परिवार के साथ छुट्टि बिताने का अवसर भर है।

आज राष्ट्र से प्रेम करने वाले राष्ट्र के सिपाही आँखों से ओझल है तो उसका मूल कारण हमारी शिक्षा व्यवस्था है आज ईमानदार वह कहा जाता है जिसे बेईमानी का अवसर नहीं मिला। मिस्टर केजरीवाल की तरह मुख्यमंत्री का पद मिलने पर भी देश की सेवा नहीं हो सकी और प्रधानमंत्री के सपने संजोने लग पड़े। आज सिद्धांतों और मूल्यों के लिये प्राण तो दूर पद और मामुली से मामुली भी सुविधा त्यागने वालों का अभाव है अत: आवश्यक है कि सरकार शिक्षा पद्धति में वैदिक धर्म सिद्धांतों और मूल्यों का समावेश कर तथा राष्ट्र के विकास के सिपाही बनने वालों के जीवन चरित्र के पाठ शामील कर राष्ट्र के विकास के सिपाही बनाने वाली फैक्ट्रियों को पुनर्जीवित करें। जिससे राष्ट्र को आदर्श नागरिक के साथ-साथ राष्ट्र के विकास के सिपाहियों का स्वयमेव निर्माण हो सके। अन्यथा सिपाहियों के अभाव में राष्ट्र विकास जन आंदोलन बनना असंभव है। गांधी जी भी स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन तभी बना पाये जब महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज की फैक्ट्रियों से निकले राष्ट्र के सिपाही प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे यह हम नहीं कहते यह कांग्रेस के इतिहासकार पट्टाभि सीतारमैया कहते हैं। ●

मराठा साम्राज्य का छत्रपति महाराज स्वयंभूदेव

-स्वामी उमाशंकर सांख्यायन
आर्य संस्कृति संस्कार प्रतिष्ठान आर्यावर्त,
सोलापुर (महा.), चलभाष - ०८०५५४४५८४७

मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवप्रभु (शिवाजी) की ज्येष्ठ महारानी सत्यवती (सहीबाई) जी का पुत्र युवराज स्वयंभूदेव (संभाजी) थे। अपने पिता के सवाई पुत्र थे, स्वयंभूदेव (संभाजी) शरीर से, बल से, धैर्य से, पराक्रम से, चरित्र से तथा विद्या से पूर्ण सवाई स्वयंभूदेव (संभाजी) थे।

मराठा साम्राज्य का सम्राट छत्रपति स्वयंभूदेव (संभाजी) लौहपुरुष थे। अपने माता-पिता से भी अधिक सुंदर, सुशील, सदाचारी तथा पराक्रमी थे। स्वयंभू महाराज का जन्म संवत् १७१४ में सहयाद्रि पर्वत के अन्तर्वेदी में प्रतापगढ़ के दीपमहल में हुआ था।

छत्रपति स्वयंभूदेव (संभाजी) की काया हाथी जैसी बलवान थी। उन्होंने आयु के १८वें वर्ष में सिंह के जबड़ों में हाथ डालकर सरल सीधा फाड़ दिया था तथा २५वें वर्ष में हाथी को काबु में कर लिया था। मुगल-पोर्तुगिज, सीधी जोंजी की संयुक्त फौज को आमने-सामने की टक्कर देकर परास्त किया था।

संस्कृत भाषा के व्याकरणाचार्य तथा आयुर्वेदाचार्य थे, कौस्तुभ मंजरी व अनेक ग्रंथों के रचयिता छत्रपति स्वयंभूदेव महाराज थे। सम्पूर्ण व्यसनों से दूर एक पत्निव्रता चरित्रवानों का शिरपेच छत्रपति स्वयंभू राजे महाप्रतापी योद्धा तथा साहित्यकार-कवि थे। छत्रपति स्वयंभूश्वर महाराजा को संस्कार देने वालों में उनकी माता सत्यव्रती, प्रमाता यज्ञदेवी (जीजाबाई) पिता शिवप्रभु (शिवाजी) तथा राष्ट्रगुरु समर्थ रामदास स्वामी थे।

छत्रपति शिवराय योगी थे तो शंभूराय स्थितप्रज्ञ थे। अपने पूर्खे तथा महाराणा प्रताप जैसा शक्तीशाली, स्वाभीमानी, प्रतापी, योद्धा, चरित्रवान् स्वयंभूश्वर छत्रपति शिवाजी को धोखे से पकड़वाकर मुगल सम्राट औरंगजेब ने उन्हें लोहे की चेनों से बांध कर सिंह के पिंजड़े में आगरा में आपके पुत्र स्वयंभूदेव के साथ छः महीने रखा था। छत्रपति शिवाजी बलवान् शत्रु पर हमला कर भाग जाते परन्तु उनके पुत्र स्वयंभूदेव ने भी बलवान् शत्रु के बेड़े में फंसकर रात-दिन लड़ते-लड़ते जब घंटों तक लड़कर थक गये तब आपके साथ कैद किये गये।

हजारों शत्रु सैनिकों के बेड़े में ७२घंटे तक भूखे-प्यासे रात-दिन युद्ध करने वाला धैर्यशाली प्रतापी योद्धा स्वयंभूश्वर छत्रपति को मुगल सम्राट के द्वारा टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें मरणांत यातना देकर शूल पर चढ़ाकर मृत्यु को सौंप दिया था।

पहले दिन उंगलीया कटवाई, दूसरे दिन एक-एक बिलांद प्रतिदिन हाथ-पैर कटवाते, उनके धड़ को शूल पर चढ़वाने के पहले आँखों में शूल डाले, कानों में गरम तेल डलवाया पश्चात् शूल पर चढ़वा के मारा।

आगरा की कैद से पलायन करने पर युवराज संभाजी राजे पं. परमानंद कलश जी के संग मथूरा में रहे, तब उन्होंने बटू (ब्राह्मण कुमार) के रूप में संस्कृत भाषा का अध्ययन किया था।

संवत् १७४६ तक केवल नौ वर्ष आपने दक्षिण भारत पर साम्राज्य संचालित किया था। मराठा साम्राज्य की राजधानी तब रायगढ़ दुर्ग था। संवत् १७४६ में धोके से कैद कर मुगल सम्राट ने ईस्लाम कबूल करने पर अपनी पुत्री देकर दक्षिण की सुबेदारी देने का आमिष दिखाया परन्तु छत्रपति संभाजी ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया, तब औरंगजेब ने अमानवीय यातना देकर मौत के घाट उतार दिया। आपने मृत्यु को अपनाया किन्तु धर्म नहीं छोड़ा। उनका बलीदान संवत् १७४६ में वडूगांव निकट तुकापुर में हुआ तब अनुज राजाराम छत्रपति बने।

गद्दारी का शिकार होकर महाराणी यशवंती देवी (येसूबाई) तथा युवराज दूसरे शिवाजी (शाहू) भी मुगलों के हाथों लगे थे। छत्रपति स्वयंभू सिंहदेव महाराज का प्राण लेने वाला मुगल सम्राट औरंगजेब ने युवराज दूसरा शिवाजी (शाहु) को कारागृह में पुत्र जैसा व्यवहार किया था।

ब्रिटीश कालीन इतिहासकारों ने छत्रपति स्वयंभूदेव जी का घृणास्पद चरित्र हनन करके उनके बलीदान का उपहास किया। ●

वैदिक संसार माह दिसम्बर २०१३ में श्री रामगोपाल शास्त्री की जिज्ञासा पर लेख वेदों में नारी ऋषि कौन? पढ़ा। वे चांहते हैं कि कुछ ऋषिकाओं के विषय में लिखा जाये ताकि उनकी जिज्ञासा शान्त हो सके। उनकी और उनके जैसे अनेक लोगों की जिज्ञासा शान्त करने के लिए मैं केवल पांच ऋषिकाओं के विषय में कुछ विवरण दे रहा हूँ, वैसे मैंने अपनी पुस्तक 'वेदों में शिक्षा व्यवस्था एवं वैदिक आचार्य' में भी इन ऋषिकाओं के विषय में पर्याप्त विवरण प्रस्तुत किया है। -शिवनारायण उपाध्याय

गतांक से आगे......

वेदों की ऋषिकाएँ - सूर्या सावित्री

ऋग्वेद मण्डल १० की दृष्टि सूर्या सावित्री है। इस सूक्त में कुल ४७ मन्त्र हैं। यह सूक्त बहुत बड़ा है और इसमें सूर्या सावित्री के विवाह का वर्णन भी है। सूक्त में वेदों में नारी की अवस्था का अच्छा वर्णन हुआ है परन्तु सूक्त में दूसरे कई विषय अन्य भी हैं। जैसे सूक्त के पहले मन्त्र में बताया गया है कि पृथ्वी को कौन-कौन धारण कर रहे हैं।

सत्येनोत्तमिता भूमिः सूर्येणोत्तमिता द्यौः।
ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधिश्रितः।। ऋ. १०.८५.१

पदार्थ-परमेश्वर के सत्य नियम से भूमि थमी हुई है। सूर्य से द्यूलोक थमा है। सृष्टि के नियम से आदित्य स्थित है। आकाश में चन्द्रमा स्थित है। यहाँ सृष्टि के नियम से गुरूत्वाकर्षण का संकेत समझना चाहिये।

अगले तीन मन्त्रों में सोम शक्ति का वर्णन है। पाँचवें मन्त्र में चन्द्रमा के द्वारा शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष बनता है यह बताया गया है।

य वा देव प्रपिबन्ति तत आप्यायसे पुनः।
वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः।। ऋ. १०.८५.५

पदार्थ-इस देव सोम (चन्द्रमा) को ऊपर पक्ष में रश्मियाँ पीती हैं उसके अनन्तर पूर्व पक्ष में फिर-फिर पूर्वा हो जाता है। वायु इसका रक्षक है। यह संवत्सरों के महीनों का कर्ता है।

आगे इस सूक्त में सूर्या के विवाह का वर्णन है, परन्तु यह एक प्राकृतिक घटना है। कहा गया है कि सूर्या का वस्त्र गाथा से अलंकृत है और उसकी साड़ी रैभी ऋक् है और नाराशंसी ऋक् ओढ़नी का उपवस्त्र

है, परन्तु फिर भी विवाह में पढ़े जाने वाले कई महत्वपूर्ण मन्त्र इसी सूक्त में वर्णित हैं। विषय का विस्तार अधिक न हो जाये इसलिए मैं यहाँ केवल ४ मंत्र दे रहा हूँ। इन मन्त्रों से विवाह संस्कार का महत्व भी समझा जा सकता है।

प्रत्वा मुंचामि वरूणस्य पाशाद्येन त्वाबध्नात्सविता सुशेवः।
ऋतस्य यौनो सुकृतस्य लोकेऽरिष्टां त्वा सहपत्या दधामि।।
ऋ.१०.८५.२४

पदार्थ-(वर कहता है) मैं तुझे उस ब्रह्मचर्य आश्रम के नियम पाश से छुड़ाता हूँ, जिससे सुख चाहने वाले तेरे पिता ने तुझे बांध रखा है। सत्याचरण के स्थान तथा उत्तम कर्म के क्षेत्र में मुझ पति के साथ तुझे निरापदा धारण करता हूँ।

विवाह के बाद जब वधू पति के घर में आती तब फिर यज्ञ किया जाता है। यज्ञ के अवसर पर वधू को देखने के लिए सम्बन्धी लोगों को बुलाया जाता है-

सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत।
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं वि परेतन।। ऋ. १०.८५.३३

पदार्थ-हमारी यह वधू शुभ सौभाग्य कारिणी है। आप लोग आइये और जाने से पूर्व इसे सौभाग्य का आशीर्वाद दीजिये।।

वधू की ससुराल में कैसी स्थिति होगी, यह निम्न मन्त्र बताता है-

सम्राज्ञी श्वसुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रवां भव।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु।। ऋ.१०.८५.४६

पदार्थ-हे वधू! तु श्वसुर के लिए सम्राज्ञी हो, सास के लिए सम्राज्ञी हो, ननदों के मध्य सम्राज्ञी हो और देवरों के बीच में भी सम्राज्ञी हो।

वर-वधू विवाह मण्डप में प्रण करते हैं-

समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ।। ऋ. १०.८५.४७

पदार्थ-सभी विद्वत्जन अच्छी प्रकार जान लें कि हम पति और पत्नी दोनों पानी के समान एक हैं। मातरिश्वा (प्राणवायु) हम दोनों के हृदय को एक करे, सूर्य समान करे, सरस्वती समान करे दोनों का (हृदय)। **क्रमशः**

एक समकालीन इतिहासकारक वर्णित- ऋषि दयानन्द की जीवन संध्या

- डॉ. भवानीलाल भारतीय
३/५, शंकर कालोनी, श्री गंगानगर (राजस्थान)

महाकवि सूरदास ने अपनी रचना साहित्य लहरी में स्वयं को महाराजा पृथ्वीराज चौहान के राजकवि चन्द्र बरदाई का वंशज बताया है। ध्यान हे चन्द्र भट्ट वा भाट जाति के थे जो अब गुजरात में ब्रह्म भट्ट कहलाते हैं। इन्हीं के वंश में १९वीं शताब्दी में एक विद्वान् पं. नेनूराम ब्रह्म भट्ट थे जो ऋषि दयानन्द की जीवन संध्या के समय जोधपुर में रहते थे।

वर्षों बाद प्रसिद्ध मासिक चांद ने १९२९ में अपना चर्चित मारवाड़ी अंक निकाला तो उसमें प्रो. रमाकान्त त्रिपाठी (कानपुर) का उक्त पं. नेनूराम पर एक लेख छपा। यही प्रो. त्रिपाठी कालान्तर में जसवन्त कॉलेज जोधपुर में अंग्रेजी के प्रवक्ता रहे। इन पंक्तियों के लेखक ने उनसे अंग्रेजी साहित्य का बी.ए. में अध्ययन किया था। प्रो. त्रिपाठी को जो जानकारी ऋषि की जीवन संध्या के बारे में मिली, वह चांद के उक्त विशेषांक के पृष्ठ १०० पर इस प्रकार है **यह कहना आवश्यक है कि नेनूराम उन तीन व्यक्तियों में थे जो अजमेर से स्वामी जी को जोधपुर लाने के लिए गये। इनके साथ कवि अमरदान तथा सेठ दामोदर दास सांघी भी थे। इसके सिवा जितने दिन स्वामी जी जोधपुर रहे उतने दिन नेनूराम जी निरन्तर उनकी सेवा में रहे। स्वामी जी के बल पौरूष, उनकी निर्भिकता, उनकी वाग्मिता का सजीव चित्र भट्ट नेनूराम ने मुझे बताया - उनकी आँखों देखी बात है कि प्रातः काल उठ कर तीन चार मील तक ऋषि दयानन्द तेज चाल से बाहर जंगल में निकल जाते। वहीं व्यायाम करके वापस आते और कम से कम दो-तीन सेर दूध पीते। भोजन करते समय इसी परिमाण में हरे शाक खाते थे।**

उनकी साधारण बोलचाल की ध्वनि ऐसी गम्भीर और उच्च होती कि दूर से सुनाई देती। जब कभी सभा में वक्तृता देते तो लोग मंत्र मुग्ध से हो जाते। उनकी शैली ऐसी चुभने वाली होती थी कि जब चाहते श्रोताओं की आंखों को आँसुओं से भर देते और कभी उन्हें हँसा देते। भट्ट जी का कहना था कि **एक बार किसी व्याख्यान में स्वामी जी ने कुरान शरीफ से कुछ आयतें बोली तो उनका उच्चारण इतना शुद्ध था कि कई मुसलमान श्रोता चिल्ला उठे - यह साक्षात् खुदा का अवतार है।** उनके निवास काल में कई आतताई लोगों ने उनके साथ कुत्सित व्यवहार किया और उनकी जीवन लीला का अन्त इतना शीघ्र कराया कि उसके सम्बन्ध में भी कुछ दोहराना अनुचित है। केवल इतना कहना काफी है कि इन दुष्टों में एक का नाम कलिया था जिसने एक दूसरे व्यक्ति से मिल कर प्रसिद्ध वेश्या नन्ही से स्वामी जी को दूध में विष पिला दिया।

नेनूराम जी उस समय का पूरा वृतान्त देते हैं जब स्वामी जी को आभास होने लगा था कि उन्हें विष दिया गया है। वे स्वामी जी के साथ-साथ आबू होते हुए अजमेर गये थे जब तक कि विषपान से अस्वस्थ हुए वे जोधपुर से विदा हुए थे। उपसंहार में हम कह सकते हैं कि नेनूराम जी जिन्होंने इतनी ऐतिहासिक सामग्री इतने परिश्रम से एकत्र कर हमारे सामने प्रस्तुत की है, जिन्होंने स्वामी दयानन्द जैसे महापुरूष का सत्संग किया है वे स्वयं इतिहास बन गये हैं।

-चांद मारवाड़ी अंक १९२९, पृ. १५०-१५१

कुछ स्पष्टीकरण-यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि स्वामी जी को विष देने वाले का वास्तविक नाम धूड़ जी मिश्र था और वह रसोइए के तौर पर स्वामी जी के साथ शाहपुरा से आया था। स्वामी जी को मरवाने के षड्यंत्र में नन्ही के अतिरिक्त मियाँ फैज्जुल्ला का हाथ भी बताया गया है। यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि महाराजा जसवन्तसिंह के पास नन्ही नाम की दो स्त्रियाँ रखैल के रूप में थी। पहली मुसलमान थी -नन्ही जान। किन्तु स्वामी जी को विष दिलाने में जिस नन्ही का हाथ था वह हिन्दू भगतन जाति की थी। सामान्य रूप से इस जाति में वेश्यावृत्ति का प्रचलन है किन्तु महाराजा की प्रेयसी नन्ही को वेश्या न कह कर उप पत्नी, रखैल या प्रासवन (मारवाड़ी शब्द) कहना उचित है। वह वैष्णव मत को मानती थी और उसका बनाया विष्णु मंदिर जोधपुर उदय मंदिर मोहल्ले में मुख्य मार्ग पर है। यह अब राजकीय सम्पत्ति है। ●

गतांक से आगे

स्वामी दयानन्द और विज्ञान

-शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

अब हम स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा किये गये वेद भाष्य में विद्युत के विषय में व्यक्त किये गये विचार प्रस्तुत करते हैं।

अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्नावो नेष्टः पिब ऋतुना।
त्वं ही रत्नधा असि।। ऋ. १.१५.३

पदार्थ-यह **(नेष्टः)** शुद्धि और पुष्टि आदि हेतुओं से सब पदार्थों का प्रकाश करने वाली बिजुली **(ऋतुना)** ऋतुओं के साथ रसों को **(पिब)** पीती हैं तथा **(हि)** जिस कारण **(रत्नधाः)** उत्तम पदार्थों को धारण करने वाली **(असि)** है, **(त्वम्)** सो यह **(ग्नावः)** सब पदार्थों को प्राप्त कराने हारी **(नः)** हमारे इस **(यज्ञम्)** यज्ञ को **(अभिगृणीहि)** सब प्रकार से ग्रहण करती है, इसलिये तुम लोग इससे सब कार्यों को सिद्ध करो।

भावार्थ-यह जो बिजुली अग्नि की सूक्ष्म अवस्था है, सो सब स्थूल पदार्थों के अवयवों में व्याप्त होकर उनको धारण और छेदन करती है, इसी से यह प्रत्यक्ष अग्नि उत्पन्न होकर उसी में विलय हो जाता है।

प्र यदग्नेः सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः।
अप नः शोशुचदघम्। ऋ. १.९७.५

पदाथ-हे विद्वानों! तुम **(यत्)** जिस **(सहस्वतः)** प्रशंसित स्वभाव वाले **(अग्नेः)** भौतिक अग्नि की **(भानवः)** उजेला करती हुई किरणें **(विश्वतः)** सब जगह से **(प्रयन्ति)** फैलाती हैं वा जो **(नः)** हम लोगों के **(अघम्)** दरिद्रपन को **(अप, शोशुचत्)** दूर करता है उसको कामों में अच्छे प्रकार से जोड़ों।

भावाथ-इस बिजुली के बिना ऐसा कोई मूर्तिमान पदार्थ नहीं कि जो अलग हो अर्थात् सब में बिजुली व्याप्त है और जो भौतिक अग्नि शिल्प विद्या से कामों में लगाया हुआ धन इकट्ठा करने वाला होता है, वह मनुष्यों को अच्छे प्रकार जानना चाहिए।

इसमें स्वामी जी ने विद्युत द्वारा प्रकाश उत्पन्न होना भी बताया है। स्वामी जी विद्युत को अग्नि के ही एकरूप में देखते हैं।

हिरण्यशृङ्गोऽयो अस्य पादा मनोजवा अवर इन्द्र आसीत्।
देवा इदस्य हविरद्यमायन्यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यतिष्ठत्। ऋ.१.१६३.९

पदार्थ-हे मनुष्यों! जो ऐसा है कि **(हिरण्यशृङ्गः)** जिसके तेज प्रकाश शृङ्गों के समान है तथा जिस **(अस्य)** इस बिजुली रूप अग्नि के **(मनोजवाः)** मन के समान वेग वाले **(अयः)** प्राप्ति साधक धातु **(पादाः)** जिनसे चले उन पैरों के समान है वह **(अवरः)** एक निराला **(इन्द्रः)** सूर्य **(आसीत्)** है और **(यः)** जो **(प्रथमः)** विख्यात **(अर्वन्तम्)** वेग वाले अश्वरूप अग्नि का (अध्यतिष्ठत्) अधिष्ठाता होता जिस **(अस्य)** इसके सम्बन्ध में **(हविरद्यम्)** खाने योग्य होमने के पदार्थ **(इत्)** ही को **(देवाः)** विद्वान् वा भूमि आदि तैतीस देव **(आयन्)** प्राप्त हैं वह बहुतों में व्याप्त होने वाला बिजुली के समान अग्नि है ऐसा जानो।

भावार्थ-इस जगत् में तीन प्रकार का अग्नि हैं, एक अति सूक्ष्म जो कारण रूप कहाता, दूसरा वह जो सूक्ष्म मूर्तिमान् पदार्थों में व्याप्त होने वाला और तीसरा स्थूल सूर्यादि स्वरूप वाला जो इसको गुण कर्म स्वभाव से ज्ञान कर इसका अच्छे प्रकार प्रयोग करते हैं वे निरन्तर सुखी होते हैं। इसी प्रकार ऋ. १.१६४.१ मन्त्र के भावार्थ में स्वामी जी लिखते हैं-इस जगत् में तीन प्रकार की अग्नि है एक बिजुलीरूप, दूसरा काष्ठादि में जलता हुआ भूमिस्थ और तीसरा वह है जो कि सूर्य मण्डलस्थ होकर समस्त जगत् की पालना करता है। अगले मन्त्र के भावार्थ में स्वामी जी लिखते हैं-जो लोग बिजुली और जलादि रूप घोड़ो से युक्त विमानादि रथ को बनाय सब लोकों के अधिष्ठान अर्थात् जिसमें सब लोक ठहरते हैं उस आकाश में गमनागमन सुख से करें व समग्र ऐश्वर्य को प्राप्त हो।

विद्युत का उपयोग युद्ध में किया जा सकता है।

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम्।
यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्द्धा घृतान्नः पावकः।। ऋ. ७/३/१

पदार्थ-हे मनुष्यों! **(यः)** जो **(वः)** तुम्हारा **(सजोषाः)** एक सी प्रीति को सेवने वाला **(मर्त्येषु)** मरण धर्म सहित मनुष्यों में **(निध्रुविः)** निरन्तर स्थित **(ऋतावा)** सत्य वा जल का विभाग करने वाला **(तपुर्मुर्द्धा)** शिर के समान उत्कृष्ट वा उत्तम जिसका ताप है **(घृतान्नः)** अन्न के तुल्य प्रकाशित जिसका घृत है **(पावकः)** जो पवित्र करने वाला है उस **(अध्वरे)** सूर्य आदि के साथ **(यजिष्ठम्)** अत्यन्त संगति

देने में है प्रसन्नता

एक बार एक विद्वान् उपदेशक एक सभा में प्रवचन कर रहे थे। सभा में १०० के लगभग श्रोता उपस्थित थे। उस समय वे प्रसन्नता पर बोल रहे थे, तभी अचानक उपदेशक चुप हो गये और सभी को एक-एक गुब्बारा देते हुए बोले, **''आप सभी गुब्बारे पर अपना नाम लिख दें।''** जब सभी ने अपने नाम लिख दिए तो उपदेशक ने सभी गुब्बारे इकठ्ठे किए और पास के एक कक्ष में छोड़ आए। इसके बाद उन्होंने सभी श्रोताओं से पाँच मिनट में अपना नाम लिखा गुब्बारा उठाकर लाने को कहा। देखते ही देखते उस कक्ष में छीना-झपटी, अफरा-तफरी का महौल बन गया। सभी के चेहरों पर कठोरता दिखाई दे रही थी। पाँच मिनट बीत गए लेकिन कोई भी अपना गुब्बारा नहीं ढूंढ पाया। अब उपदेशक ने धैर्य और शांति पूर्वक जिस व्यक्ति, जिसके नाम का गुब्बारा मिले उसे देने को कहा। एक मिनट के अंदर हर व्यक्ति के हाथ में उसका गुब्बारा था। विद्वान् उपदेशक ने कहा, **''बिलकुल, ऐसा ही हमारे जीवन में होता है। हर कोई प्रसन्नता की तलाश में इधर से उधर बैचेनी से घूम रहा है जबकि यह नहीं जानता कि प्रसन्नता मिलेगी कहाँ? प्रसन्नता दूसरों से छीना-झपटी करने से नहीं, दूसरों को देने में छिपी रहती है। दूसरे को प्रसन्नता देकर तो देखिए आपको प्रसन्नता खुद मिल जाएगी। ढूंढने की आवश्यकता ही नहीं होगी। यही तो हमारे जीवन का उद्देश्य है।''** वहां आए श्रोताओं के चेहरों पर प्रसन्नता झलक रही थी।

-अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा (राज.)

आओ याद इन्हें भी कर लें!

कट गए पेड़ नष्ट हुए वन
असंतुलित हो गया पर्यावरण
ऋतुचक्र हो गया अनियंत्रित
भयभीत कर रहा ग्लोबल वार्मिंग
फैल रहे कांक्रीट के जंगल
हो रही पानी की किल्लत हर ओर !

नहीं बचे पशु पक्षियों के बसेरे
कहाँ जाएँ कहाँ रहें ये बेचारे ?
विलुप्त हो रहीं एक-एक करके
इन की बहुत सी प्रजातियाँ।

भुला बैठे हम अपने स्वार्थ में
कि इनका भी उतना हक है
ईश्वर की बसाई इस दुनियाँ पर
नहीं है कोई प्राणी बिना मकसद
उपयोग है इनमें से प्रत्येक का
बनाते हैं सुंदर मनमोहक रंगबिरंगी
ये हमारी इस दुनियाँ को।

हमारी परम्परा में चींटियों को
गायों को नागों को कौवों, कुत्तों को
पर्वों पर श्राद्धों में अनेक अवसरों पर
खिलाने का प्रावधान था
आधुनिकता प्रगतिशीलता के भ्रम में
भुला बैठे हम- वह सब
सामने आने लगे हैं परिणाम।

आइए, थोड़ा सा चुग्गा
थोड़ा सा पानी किसी उचित स्थान पर
रखने की फिर से शुरूआत करें।
पुण्य का कार्य करें और
अपने बच्चों को अच्छी सीख दें!

-ओमप्रकाश बजाज
बी-२, गगन विहार, जबलपुर
चलभाषः ९८२६४९६९७५

साभार-गीता स्वाध्याय

हमारा पर्यावरण

पर्यावरण मानव समाज का दर्पण है। समाज अपने कार्यकलापों से पर्यावरण को प्रभावित करता रहा है। इसी का दुष्परिणाम अम्लवर्षा, ओजोन परत का क्षय तथा वैश्विक ऊष्णता जैसी घटनाओं के रूप में उपस्थित है। संसाधनों के अत्यधिक दोहन, ऊर्जा के अत्यधिक उपयोग, तीव्र औद्योगीकरण, मशीनीकरण, परमाणु परीक्षण तथा प्रकृति के प्रति अन्यमनस्कता के कारण पर्यावरण की जो दुर्गति हो रही है, वह मानव समाज के लिए चिन्ता का विषय है।

विकास की दौड़ ने मनुष्य को भौतिकवादी बना दिया है। उस की आवश्यकताएँ बढ़ने से प्राकृतिक संसाधनों का अधिकाधिक भूमि पर खेती करने के कारण वनों पर अतिक्रमण होने लगा है। इससे भूमि अपरदन को बढ़ावा मिला है। कृषि भूमि तथा गोचर का उपयोग आवासीय तथा व्यापारिक प्रतिष्ठान बनाने हेतु तीव्र गति से बढ़ रहा है। इसीलिए अब वे स्थिर तथा सम्यक् विकास का नारा देने लगे हैं। सन्तुलित या समन्वित विकास इसी के अन्य रूप हैं। स्थिर तथा सम्यक् विकास की अवधारणा वर्तमान के साथ भविष्य को भी समेटने का प्रयास है। स्थिर तथा सम्यक् विकास वह है जो आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकता को पूरा करने की योग्यता को बिना संकट में डाले वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकता को पूरा कर सके। इसे प्रकृति के साथ छेड़छाड़ या मानवीय हस्तक्षेप सह्य नहीं है। स्थिर विकास के लिए स्थिर पर्यावरण की भावना जागृत करनी पड़ेगी। स्थिर पर्यावरण **'पुनः प्रकृति की ओर'** प्रस्थान होगा।

ईशोपनिषद् के मंत्र-

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किन्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

अर्थात् हम अपने चारों ओर जो भी देखते या अनुभव करते हैं, चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक, वह उस एक ब्रह्म का है और हमें दैनिक नियम के अनुसार इस का मिल बाँट कर उपभोग करना है। अमर्यादित भोग दूसरे के भाग की चोरी है।

जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, वन संरक्षण-ये पर्यावरण संरक्षण के मुख्य भाग हैं। राष्ट्रीय स्तर पर इसके लिए प्रयास किये जाने चाहिए। सरकारें इस दिशा में पर्याप्त कदम उठा रही हैं किन्तु देश के नागरिक अभी भी पर्यावरण के प्रति जागृत नहीं हो पाये हैं। वे पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से स्वार्थान्ध बन चुके हैं। उनकी आवश्यकताएँ घटने के स्थान पर बढ़ती जा रही हैं। उन्हें लेशमात्र भी इसका अनुमान नहीं है कि प्राकृतिक संसाधनों का क्षय तथा पर्यावरण का ह्रास जिस तरह तेज गति से हो रहा है। शोर करने से पर्यावरण ठीक नहीं होगा। इसके लिए व्यक्तिगत तथा सामूहिक प्रयास करने होंगे। आज सारे विश्व के समक्ष तीन सबसे महत्वपूर्ण समस्याएँ मुँह बायें खड़ी हैं। यह है-१. वैश्विक ऊष्णता तथा हरित गृह प्रभाव (ग्रीन हाऊस इफेक्ट), २. क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सी.एफ.सी.) के कारण ओजोन परत का क्षय तथा ३. कीटनाशकों के कारण पर्यावरण प्रदूषण।

वैश्विक ऊष्णता (ग्लोबल वार्मिंग)-ऐसा कहा जाता है कि मनुष्य इसी प्रकार अविवेकपूर्ण आचरण करता रहा तो आने वाले ५० वर्षों में विश्व की जलवायु इतनी बदल जायेगी जितनी पिछले २५०० वर्षों में नहीं बदली। इसकी विभीषिका का अनुमान इस प्रकार लगाया जा सकता है कि आज का जन्मा बच्चा जब १५ वर्ष का होगा तो उस समय तक अनेक बर्फीली चोटियाँ बर्फ से विहीन हो जायेंगी। जब वह बच्चा २५ वर्ष का होगा तो भारत के वनों का सफाया हो चुका होगा और ५० वर्ष की आयु में प्रवेश करते-करते विश्व के अनेक द्वीपीय राष्ट्र सागर की गोद में समा चुके होंगे। यह प्रलय जैसा चित्रण वैश्विक ऊष्णता के ही कारण होगा। मानव जनित तथा कुछ प्राकृतिक क्रियाओं से उत्पन्न गैसों में कुछ गैंसे जिन्हें हरित गृह गैसे कहते हैं, वायुमण्डल में एकत्र होकर ऐसी मोटी परत या ढ़ाल बन चुकी हैं जो पृथ्वी से निकलने वाली विकिरणों की ऊष्मा को वायुमण्डल से बाहर नहीं जाने देती जिस से वह वायु जिसमें हम साँस लेते हैं, वह भूमि जिस पर हम चलते फिरते हैं तथा वह समुद्र जिस में मछलियों का भण्डार है, उन सभी का तापमान बढ़कर सामान्य से अधिक हो जाता है। इसे हरित गृह प्रभाव कहते हैं। वैश्विक ऊष्णता के लिए कई कारण उत्तरदायी हैं-जीवाश्म ईंधन (पेट्रोलियम

पदार्थ) का दहन, वनों का कटना तथा क्लोरोफ्लोरोकार्बनों का प्रयोग।

ओजोन परत का क्षय - क्लोरोफ्लोरोकार्बन मानव शरीर के लिए हानिकारक नहीं है, किन्तु १९७० के दशक में ज्ञात हुआ कि ये हानिकारक प्रदूषक पृथ्वी के कवच या पृथ्वी के छतरी सदृश वायुमण्डल में काफी ऊँचाई पर विद्यमान ओजोन परत को क्षति पहुँचाते हैं। कारण यह है कि क्लोरोफ्लोरोकार्बन धीरे-धीरे ओजोन परत तक पहुँच कर वहाँ सूर्य की पराबैंगनी किरणों की बौछार से टूटकर क्लोरीन परमाणुओं में परिवर्तित होते हैं। ये क्लोरीन परमाणु ओजोन को विखण्डित करने लगते हैं। अनुमान है कि क्लोरीन का एक अणु ओजोन के एक लाख अणुओं को नष्ट कर सकता है। इस प्रकार ओजोन की परत पतली पड़ती जा रही है जिससे सूर्य की पराबैंगनी किरणें पृथ्वी तक सुगमता से पहुँच कर सभी प्राणियों के लिए घातक सिद्ध हो रही है। अतः कैंसर और चर्मरोग का संकट बढ़ रहा है।

कीटनाशी प्रदूषण - कीटनाशी ऐसे विषैले रसायन हैं जो कीटों को नष्ट करके फसलों की रक्षा करते हैं। बहुत से कीटनाशी मलेरिया, डेंगू आदि पर नियंत्रण करने के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं, किन्तु इनके लगातार प्रयोग से पारिस्थितिकी संतुलन तथा मानव स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ रहा है। इन विषैले रसायनों में भूमि, जल तथा वायु तीनों प्रभावित हो रहे हैं। इसीलिए आजकल रासायनिक कीटनाशियों के स्थान पर जैव कीटनाशियों के प्रयोग की संस्तुति की जाती है।

मानव अपनी लिप्सा, अपनी आंकाक्षाओं को नियंत्रित न करके पर्यावरणीय प्रतिक्रियाओं को शमन करने के लिए सतत् प्रयत्नशील दिखता है, किन्तु परिणाम क्या निकला? वही ढाक के तीन पात। १९७२ से निरंतर अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर छाये रहने के उपरान्त वैश्विक ताप तथा ओजोन परत का क्षय बढ़ते हुए प्रतीत हो रहे हैं।

पर्यावरण को बचाने के लिए वृक्षारोपण, नदियों तथा सागरों के प्रदूषण को कम करने के प्रयास, ऊर्जा बचत, जैविक स्त्रोतों का विकास, भूमि संरक्षण, जल प्रबन्धन, जैविक कृषि के प्रयास-ये सम्पूर्ण उपाय तभी सफल होंगे जब सामाजिक मूल्यों की स्थापना की जायेगी। जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इन्द्रियों को संयत रखना आवश्यक है, उसी प्रकार पर्यावरण को स्वस्थ एवं सुरक्षित रखने के लिए समाज के आचरण में सुधार आना आवश्यक है। समाज का अच्छा आचरण सामाजिक प्रक्रियाओं द्वारा ही बनाया जा सकता है। यहीं पर संस्कृति की आवश्यकता पड़ती है। संस्कृति समाज की अनुशासन शीलता का प्रदर्शन कराती है। पर्यावरण संरक्षण का यही मूल मंत्र प्राचीन भारतीय सभ्यता का अभिन्न अंग रहा है। पशुओं के प्रति दया, अहिंसा, वृक्षों की पूजा, वृक्षारोपण आदि विविध कृत्य धर्म के अंग रहे हैं। आज विकास के नाम पर प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का अभियान चल रहा है, जबकि परमात्मा ने प्रकृति को मानव सहित सभी जीवधारियों की पोषक के रूप में बनाया है। प्रकृति को माँ या जगदम्बा कहा गया है। इसके विभिन्न घटकों-जल, भूमि, सूर्य, चन्द्र आदि के पूजन का विधान प्रकृति के प्रति आदर भाव, इसके मर्यादित दोहन की ओर संकेत करते हैं। विद्यालयी पाठ्यक्रम में बढ़ते अंग्रेजी भाषा के प्रभाव के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के संस्कार समाप्त होते जा रहे हैं। देश-विदेश के शिक्षाविदों की मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा देने की संस्तुतियों के उपरान्त केन्द्रीय उच्च माध्यमिक शिक्षा मण्डल ग्रामीण क्षेत्रों में अंग्रेजी माध्यम के प्राथमिक विद्यालय खोलने की पूर्व सरकार योजना पर अमल कर भारत के ग्रामीण आंचलों में से भी रही सही पर्यावरण पोषक भारतीय संस्कृति को समाप्त करने पर तुला है, जिसे तुरन्त प्रभाव से रोकना नई सरकार का दायित्व है। पर्यावरण के क्षेत्र में विश्व में सभी उपाय असफल होते दिख रहे हैं जबकि संयम का उपदेश देने वाली भारतीय संस्कृति के विश्व संचार से ही इस समस्या का स्थाई निदान होने वाला है।

मिस्र, रोम, यूनान यहाँ तक कि मोहनजोदड़ो की सभ्यता का विनाश पर्यावरण की उपेक्षा का प्रतिफल रहा है, किन्तु भारत की आरण्यक सभ्यता ने उसे अभी तक जीवित रखा है। पर्यावरण को ठीक से समझ कर उसके संरक्षण का प्रयास ही हमारे अस्तित्व के सुरक्षा की प्रतिभूति है। त्याग तथा यज्ञमयी भारतीय संस्कृति के विश्वव्यापी संचार से ही पर्यावरण सुरक्षित रह सकता है। ●

पदचिन्ह

हर नेता के निधन पर उस के
पदचिन्हों पर चलने का आह्वान होता है।

क्या करे क्या न करे
इन्सान सोच-सोच कर हैरान होता है।

एक दिवंगत नेता ने
दल बदलने का रिकार्ड तोड़ा था।

दूसरे ने इकहत्तर की आयु में
सत्रह वर्षीया से नाता जोड़ा था।

एक अपने ओजस्वी भाषणों से
सांप्रदायिक वैमनस्य बढ़ाते रहे।

दूसरे जीवन भर भ्रष्टाचार में लिप्त
कमीशन और दलाली खाते रहे।

एक भारतीयता के तथाकथित हिमायती थे
दूसरे भीतर बाहर पूरे विलायती थे।

एक हिन्दी की रोटी खाते रहे
दूजे अंग्रेजी का गुणगान गाते रहे।

कुछ सदा छत्तीस का आंकड़ा बने रहे
आरोपों प्रत्यारोपों के कीचड़ में सने रहे।

कुछ अपने ही दल में फूट डालते रहे
कुरसी हथियाने के सपने पालते रहे।

कोई भी तो ऐसा नजर नहीं आता
जिसके पदचिन्हों पर कोई चल पाता!

-ओमप्रकाश बजाज

ओम् जप विधि

ओम् सच्चिदानन्द, ओम् निराकार, ओम् सर्वशक्तिमान, ओम् न्यायकारी, ओम् दयालु, ओम् अजन्मा, ओम् अनन्त, ओम् निर्विकार, ओम् अनादि, ओम् अनुपम, ओम् सर्वाधार, ओम् सर्वेश्वर, ओम् सर्वव्यापक, ओम् सर्वान्तर्यामी, ओम् अजर, ओम् अमर, ओम् अभय, ओम् नित्य, ओम् पवित्र, ओम् सृष्टिकर्ता।।

ओम् सच्चिदानन्द -हे ईश्वर! आप सच्चिदानन्द स्वरूप हैं।

ओम् निराकार - हे ईश्वर! आप निराकार हैं।

ओम् सर्वशक्तिमान - हे ईश्वर! आप सर्वशक्तिमान हैं।

ओम् न्यायकारी - हे ईश्वर! आप न्यायकारी हैं।

ओम् दयालु - हे ईश्वर! आप दयालु हैं।

ओम् अजन्मा - हे ईश्वर! आप अजन्मा हैं।

ओम् अनन्त - हे ईश्वर! आप अनन्त हैं।

ओम् निर्विकार - हे ईश्वर! आप निर्विकार हैं।

ओम् अनादि - हे ईश्वर! आप अनादि हैं।

ओम् अनुपम - हे ईश्वर! आप अनुपम हैं।

ओम् सर्वाधार - हे ईश्वर! आप सर्वाधार हैं।

ओम् सर्वेश्वर - हे ईश्वर! आप सर्वेश्वर हैं।

ओम् सर्वव्यापक - हे ईश्वर! आप सर्वव्यापक हैं।

ओम् सर्वान्तर्यामी - हे ईश्वर! आप सर्वान्तर्यामी हैं।

ओम् अजर - हे ईश्वर! आप अजर हैं।

ओम् अमर - हे ईश्वर! आप अमर हैं।

ओम् अभय - हे ईश्वर! आप अभय हैं।

ओम् नित्य - हे ईश्वर! आप नित्य हैं।

ओम् पवित्र - हे ईश्वर! आप पवित्र हैं।

ओम् सृष्टिकर्ता - हे ईश्वर! आप सृष्टिकर्ता हैं।

-श्रीमती सुषमा शर्मा वानप्रस्थी

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ (गुज.)

लेखिका परिचय - माता सुषमा जी ने **'ओम् जप विधि'** अपनी हस्त लिखीत रचना मुझे दिनांक १५ जून को वानप्रस्थ आश्रम में उनके कक्ष पर उनसे मैं जब भेंट करने गया तब दी। जब मैंने माताजी के कक्ष में प्रवेश किया मैं विस्मय से भर गया मैने देखा माताजी उपनिषद सार पुस्तक पढ़ रही थी। माताजी की कुछ स्मरण शक्ति कमजोर हो गई है। मेरे परिचय देने पर उन्हें याद आया कि मैं कौन हूँ। परिचय प्राप्त होने पर बहुत प्रसन्न हुई तथा मेरे सर पर स्नेह से करीब २-३ बार हाथ फेरते हुए कहा बहुत पुराने सम्बन्ध है, बहुत बड़ा कार्य (वैदिक संसार प्रकाशन) कर रहे हो। मैने माताजी की आयु पुछी उन्होंने अपना जन्म दिनांक २०.११.१९२० बताया। ९४ वर्ष की अवस्था में भी माताजी का स्वाध्याय व लेखन का कार्य जारी रहना तथा अपने छोटे-मोटे कार्य स्वयं कर लेना हतप्रभ करने वाला था।

कौन है माता सुषमा जी ? - माताजी अहमदाबाद के साबरमती क्षेत्र में निवास करने वाली श्रीमती सुषमा शिवलाल शर्मा है। आप १९०८ में प्रकाशित होने वाले अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण सभा के मुख पत्र **'जांगिड ब्राह्मण'** के प्रथम प्रकाशक ब्रजलाल जी राजोतिया अजमेर निवासी की सुपुत्री तथा जांगिड ब्राह्मण महासभा के प्रथम पटिकारा अधिवेशन का सम्पूर्ण खर्च वहन करने वाले भामाशाह श्री धनीराम जी की पौत्र वधु है। आपकी बड़ी बहन सरला जी भारत की प्रथम महिला विमान चालक थी। आपके बड़े भाई चन्द्रदेव जी राजोतिया वैदिक सिद्धांतों के चिन्तनशील साहित्य सृजनकर्ता थे। माताजी का स्वयं का जीवन भी वैदिक साहित्य के स्वाध्याय और लेखन को समर्पित रहा। यज्ञ-संध्या करना आपके जीवन का अभिन्न अंग था। आपने कुछ पुस्तकें भी लिखी है जिनमें **'जांगिड जाग्रति का प्रारम्भिक इतिहास'** प्रमुख है जिसमें आपने मुख्य रूप से महासभा के प्रारंभिक कार्यो में वैदिक धर्म प्रचार को समाज बंधुओं के समक्ष रख वैदिक धर्म सिद्धांतों को जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की है।

वैदिक संसार अक्टूबर २०१३ के पृष्ठ क्र. ५८ पर आपकी रचना **'जांगिड ब्राह्मण समाज की दशा-दिशा - एक संस्मरण'** तथा उसके पूर्व भी रचनाएं प्रकाशित की जा चुकी है। आपका हस्त लेखन अत्यन्त सुन्दर है आज भी आपके लिखे गये अक्षर मोती समान प्रतित होते हैं। आप प्रेरणा पुँज है जिनके जीवन से अनेकों लोगों ने वैदिक धर्म सिद्धांतों की प्रेरणा प्राप्त की है जिनमें से एक मैं भी हूँ।

माता जी की स्वस्थ दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ तथा परमपिता परमात्मा को धन्यवाद देता हूँ की माता जी की जीवन संध्या पर मुझे उस विभूति के दर्शन का सौभाग्य प्रदान किया जिनका जीवन जांगिड ब्राह्मण महासभा के कार्यो विशेष रूप से जांगिड समाज को वैदिक सिद्धांतों का अनुगामी बनाने हेतु समर्पित रहा।

- सुखदेव शर्मा, प्रकाशक-वैदिक संसार

वैदिक यज्ञ एवं वेदकथा

दिनांक १७ से २० जुलाई २०१४ तक

स्थान-मांगलिक भवन, आजाद चौक, सदर बाजार, धामनोद, जिला-रतलाम (म.प्र.)

आमंत्रित विद्वान् - सुश्री अंजलि आर्या करनाल, हरियाणा

रतलाम-बांसवाडा राज्य मार्ग पर धामनोद से करीब १५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित कृषक बहुल ग्राम में वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार हेतु प्रथम बार भव्य समारोह पूर्वक आयोजन आयोजित किया जा रहा है जिसमें समस्त धर्म प्रेमी महानुभाव सादर आमंत्रित है।

निवेदक एवं सम्पर्क

शान्तिलाल पटेल, ९००९७२१३९०

देश के प्रधान मंत्री जी एवं आम जनता के नाम संदेश

नरेन्द्र मोदी जी सुनों!

देश भक्त धर्मात्मा, चरित्रवान, विद्वान।
जन सेवी, त्यागी, विनम्र, शीलवन्त इंसान।।
शीलवन्त इंसान सत्यवादी, तपधारी।
वीर, साहसी, बलि, परिश्रमी, परोपकारी।।
करे सुजन की मदद, दंड दुष्टों को देता।
ऐसा नेता प्यार, सकल जग का पा लेता।।
नरेन्द्र मोदी जी सुनों! आप लगाकर ध्यान।
भारत के तुम बन गए, अब मंत्री प्रधान।।
अब मंत्री प्रधान, देश है दुखी हमारा।
अपमानित हर तरह, आज है भारत प्यारा।।
नेताओं ने जाति-पाति का रोग बढ़ाया।
देश द्रोही दुष्ट-जनों को गले लगाया।।
ऋषियों के इस देश में, गुन्डों का है जोर।
थानों के मालिक बने, जालिम डाकू-चोर।।
जालिम डाकू-चार मौज अब मार रहे हैं।
नाव देश की डुबा, बीच मझधार रहे हैं।
अगर रहा यह हाल, देश यह मिट जाएगा।
हम सबको नासमझ, जगत यह बतलाएगा।।
है नेता जी! आपका, नरेन्द्र मोदी नाम।
जैसा प्यार नाम है, ऐसे करना काम।।
ऐसे करना काम, वेद पथ को अपनाना।
राम, कृष्ण, चाणक्य, शिवाजी बन दिखलाना।।
सबके लिए समान, यहाँ कानून बनाना।
क्षेत्रवाद अरू वर्गवाद, का भेद मिटाना।।
वल्लभ भाई पटेल को, मान आप आदर्श।
लाल बहादुर शास्त्री, बन करना उत्कर्ष।।
बन करना उत्कर्ष, कभी भी मत घबराना।
बन कर वीर सुभाष, जगत में नाम कमाना।।
सभी भारती साथ, आपके हैं प्रिय नेता।
''निर्भय'' आगे बढ़ो, जगत में वीर-विजेता।।

-पं. नन्दलाल निर्भय

धर्म का पालन करो आर्यों!

भारत के सब नर-नारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
फैला था पाखण्ड जगत में, घोर अंधेरा छाया था।
भूल गए थे जगदीश्वर को, दया-धर्म बिसराया था।।
व्याकुल थी दुनियाँ सारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
धर्म समझकर यज्ञों में, नर बलि यहाँ दी जाती थी।
देवों को खुश करने को, गो हत्या नित की जाती थी।।
अज्ञान यहाँ था भारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
बाल विवाह, अनमेल विवाह, इस आर्यावर्त में होते थे।
ऋषियों के सुत-सुता हजारों, देव भूमि में रोते थे।।
तब थी दुर्दशा हमारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
लाखों विधवाएँ बेचारी, वेश्याएँ बन जाती थी।
यवन, ईसाई ले जाते थे, जीवन भर दुख पाती थी।।
था करूण-क्रंदन जारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
ईश्वर की कृपा से भारत में, ऋषि दयानन्द आए।
किया वेद प्रचार रात-दिन, कभी नहीं वे दहलाए।।
ऋषि थे अद्भुत ब्रह्मचारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
पोप, पादरी, मुल्ला, पण्डे, ढोंगी सभी पछाड़े थे।
वेद विरोधी नास्तिकों के, ऋषि ने होश बिगाड़े थे।।
ऋषि ने त्यागी-तपधारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
वेद विरोधी धूर्त कुचाली, जग में बढ़ते जाते हैं।
माँसाहारी, दुष्ट शराबी, भ्रष्टाचार बढ़ाते हैं।
है श्रेष्ठ जनों की ख्वारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
भारी है अफसोस आर्यों! आपस में तुम लड़ते हो।
धन दौलत अरू उच्च पदों पर, वृथा रोज झगड़ते हो।।
है फूट बुरी बीमारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
कुटुम्ब कबीला, माल खजाना, पड़ा यहीं रह जायेगा।
धर्म एक है सच्चा साथी, अन्तिम साथ निभाएगा।।
ऋषियों की शिक्षा प्यारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
''नन्दलाल'' ऋषि दयानन्द के, उपकारों को याद करो।
धर्म का पालन करो आर्यों! जीवन मत बर्बाद करो।।
बन जाओ परोपकारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।
ईश्वर के बनो पुजारी, अब वैदिक धर्म निभाओ तुम।।

आचारो हि परमं धनम्

-रामेश्वर दयाल शर्मा
गुरूकुल आर्ष विद्यापीठ, नजीबाबाद
जनपद-बिजनौर, उत्तरप्रदेश
चलभाष-९७६०९८२४३०

सत्य का आचरण करना ही सदाचार कहलाता है। सदाचारी पुरूष सदैव सत्य बोलते हैं, माता-पिता, गुरूजनो, वृद्धजनों एवं बड़ों का आदर करते हैं। उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और सत्कर्म में प्रवृत्त होते हैं।

मानव-समाज की सबसे मूल्यवान वस्तु 'आचार' ही है। कुछ विद्या को सभी धनों में श्रेष्ठ मानते हैं, क्योंकि व्यक्ति विद्या से समस्त सम्पदाएँ और शक्ति प्राप्त कर लेता है। परन्तु मेरे विचार में 'आचार' विद्या से भी श्रेष्ठ वस्तु है। सदाचार के सम्मुख विद्या का भी मस्तक झुक जाता है। देखिए, आरम्भ में लोग धन, शक्ति एवं विद्या के बल पर सन्तान प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु यदि वह सन्तान आचारवान् नहीं बनती तो शीघ्र ही धन, शक्ति और विद्या का पतन हो जाता है।

कहा जाता है कि संसार का सबसे अधिक नीच दुराचारी रोम का बादशाह 'नीरो' था। जब रोम महानगरी जल रही थी, जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी, तब वह बादशाह 'नीरो' मजे में चैन की बाँसुरी बजा रहा था। वह इतना दुराचारी एवं क्रूर प्रवृत्ति का था कि उसने अपनी माता, पुत्री और बहिन को भी अपनी वासना का शिकार बना डाला था। खाली मनुष्यों को सिंह आदि हिंसक प्राणियों से फड़वा डालना उसका नित्य का मनोरंजन था। इतने पर भी वह नर-पिशाच उस समय समस्त रोम में सबसे श्रेष्ठ विद्वान् और तत्ववेत्ता कहा जाता था।

अब रावण को ही ले लीजिए-यह व्यक्ति महात्मा पुलस्त्य ऋषि का पौत्र, विश्वश्रवा जैसे ऋषि का पुत्र और कुबेर का सम्बन्धी था। उच्चश्रेणी के ब्राह्मण वंश में उत्पन्न हुआ था। राजनीति और वेदों का धुरन्धर पण्डित था। इसने वेदों पर अलौकिक भाष्य लिखे। किन्तु आचरण के बिना वह घोर पतन को प्राप्त हुआ। कहा भी है-''**आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः**'' आचार शून्य व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं करते। जब उस पतित रावण का मृत्युकाल आया, तब भगवान् श्री राम ने आग्रह पूर्वक लक्ष्मण को उसके पास नीति की शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा था। इस रावण के परिवार में विभीषण जैसा धर्मात्मा भाई, सुलोचना जैसी पतिव्रता स्त्रियाँ थी। उसकी सामर्थ्य और वैभव की तो कोई हद ही न थी। फिर भी वह घोर दुराचारी और लम्पट होने के कारण, वह श्रेष्ठ कुल का वेद पण्डित होने पर भी राक्षस कहलाया और अन्त में अपने बन्धु-बान्धवों के सहित मारा गया।

भगवान् श्री राम एक सच्चे आचारवान् मर्यादापुरूषोत्तम थे। उन्होंने कठिन से कठिन समय में भी अपना बड़प्पन और धैर्य नहीं खोया। ऊँच-नीच को छोड़कर छोटे-बड़े सभी से आत्मीयता पूर्वक सम्बन्ध एवं मित्रता स्थापित की। योगिराज भगवान् श्री कृष्ण को मैं श्रेष्ठ आचारवान् महामानव समझता हूँ। जो पुरूष घनघोर युद्धस्थल में घोड़ों को मल-मल कर नहलाने और पानी पिलाने की हिम्मत रखता हो, जो विकट युद्ध के अवसर पर भी गीता का परम तत्व कहने की योग्यता और धैर्य रखता हो, जिसके हृदय में भगिनी-प्रेम की महान् प्रतिष्ठा हो, जो पाप और अनाचार के विध्वंस के लिए उत्कट प्रयत्न करता हो और कुरूक्षेत्र के मैदानों का सूत्रधार बन सकता हो-वह कभी इन्द्रियों का दास नहीं हो सकता। अपनी पत्नी रूकमणी के अतिरिक्त और किसी स्त्री से उनका प्रेमी-प्रेमिका जैसा कोई सम्बन्ध नहीं था। उनके चरित्र को योजना बद्ध तरीके से राधा एवं अन्य गोपियों से सम्बन्ध जोड़कर भ्रष्ट करने की चेष्टा की गयी है जो श्री कृष्ण के साथ बहुत अन्याय किया गया है।

आचार्य शंकर, महात्मा गौतम बुद्ध और महर्षि दयानन्द अपने समय के अपूर्व चिन्तक एवं दार्शनिक विद्वान् थे। सम्भव है कि उनके समय में कुछ लोग उनसे भी अधिक विद्वान् रहे होंगे। स्वयं आचार्य शंकर के गुरू श्रीमत्पाद गोविन्दाचार्य की उतनी पूजा नहीं हुई, जितनी शंकर की। इसका मुख्य कारण इन महापुरूषों का आचार ही है। आचार के बल पर ही उन्होंने वह प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त किया। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक केवल बी.ए., एवं एल.एल.बी थे। महात्मा गांधी केवल बैरिष्टर थे, परन्तु इन देव तुल्य व्यक्तियों की पूजा इनकी विद्या के कारण नहीं अपितु केवल चरित्रबल के कारण थी। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह प्रतिक्षण अपने सदाचार की रक्षा करता रहे।

काम संकल्प का मूल है और संकल्प से ही पुण्यकर्म होते हैं। जितने भी धर्मव्रत हैं, वे संकल्पों से ही पूर्ण होते हैं। निष्काम की कोई क्रिया नहीं होती। वेद, स्मृति, सदाचार और अपने अन्तःकरण की स्वीकृति, ये धर्म के चार प्रकार हैं। इन्द्रियों के घोड़ें तेजी से दौड़ना चाहते ही हैं पर उन्हें रोककर उन पर संयम रखना, उन्हें दबाकर रखना ही सिद्धि का मूल साधन है। काम की तृप्ति भोगों से कदापि नहीं हो सकती। ये भोग तो इच्छारूपी अग्नि में घी का काम करते हैं। स्वामी विवेकानन्द के गुरू परमहंस रामकृष्ण ने कभी द्रव्य और स्त्री को स्पर्श नहीं किया। कहा जाता है कि प्रगाढ़ निंद्रावस्था में भी यदि उनके शरीर से धातु या स्त्री स्पर्श कराया जाता था, तो उनका शरीर धनुषाकार होकर अकड़ने लगता था।

ब्रह्मचर्य पूर्वक यम और नियमों का पालन करना, स्वाध्याय और आत्मचिन्तन करना ही वास्तव में संयम है। ब्रह्मचर्य, शारीरिक यत्न, मानसिक अध्यवसाय, नैतिक न्याय परता इन तीनों से सम्पन्न होता है। ब्रह्मचर्य के पालन के लिए यम-नियमों का पालन करना आवश्यक है। पतञ्जलि ने लिखा है-'**तत्राहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः**। १. **अहिंसा**-मन वचन और कार्य से किसी प्राणी को न सताना। २. **सत्य**-जिस बात को जैसा जाना, उसी रूप में कथन करना। ३. **अस्तेय**-पराई वस्तु एवं स्त्री पर स्वार्थपूर्ण अन्याय की दृष्टि न डालना। ४. **ब्रह्मचर्य**-इन्द्रियों का संयम रखना, ५. **अपरिग्रह**-दूसरों के आश्रित न रहना अर्थात् स्वावलम्बी बनना। इसी प्रकार नियम भी पाँच हैं-''**शौच सन्तोष तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः**।'' १. **शौच**-शरीर को जल से और मन को सत्य से शुद्ध पवित्र रखना। २. **सन्तोष**-परिश्रम और उद्योग में उत्साह रखना एवं हानि होने पर भी सन्तुष्ट रहना। ३. **तप**-कष्ट सहकर भी धर्म और नीति का मार्ग न छोड़ना। ४. **स्वाध्याय**-सत्साहित्य को पढ़ना और सुनना। ५. **ईश्वर प्रणिधान**-ईश्वर में अटल भक्ति रखना। अतः यम और नियम दोनों का पालन करना आवश्यक है।

जिसके मन में द्वेष आदि की गाँठ होती है, उसका मन मैला होता है। जिसका मन सरल वृत्ति वाला होता है, वह साफ मन वाला होता है। सदाचार का पालन यम नियम बिना नहीं हो सकता। इसीलिए महाभारत में स्पष्ट कहा है-'**वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च। अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः**।।' चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए, धन तो आता और चला जाता है। धन की हानि से कोई विशेष हानि नहीं होती, परन्तु चरित्र के नष्ट होने से सब कुछ नष्ट हो जाता है। '**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युपाघ्नत्**।' ब्रह्मचर्य पालन और विशेष तप करने से देवताओं ने मृत्यु पर भी विजय प्राप्त की। अतः हमें अपने जीवन में अति सावधानी से सत्याचरण और शिष्टता का पालन करना चाहिए। ●

आत्मा-परमात्मा का शुद्ध स्वरूप एवं प्रकृति का गहन चिन्तन

–स्वामी डॉ. ओमानन्द सरस्वती
वेद मंदिर महर्षि दयानन्द संस्थान, चन्द्रखेड़ी
जिला-उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष : ०९७५४९३२९९१

१. इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख-दुःख ज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम्।
न्याय दर्शन १/१०

२-''**प्राणापान निमिषोन्मेषजीवन मनोगतीन्द्रियान्तर विकाराः सुख-दुःखेच्छा द्वेष प्रयत्नश्चात्मनो लिङ्गानि**''।। वैशेषिकदर्शन ३-२-४।।

अर्थात् :-१.इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख-दुःख और ज्ञान ये आत्मा के ६ लिंग न्याय दर्शन ने कहे हैं।

''२-प्राण-अपान, पलक मींचना-खोलना, जीवन, मन की गति, एक इन्द्रिय के प्रत्यक्ष करने पर दूसरे इन्द्रिय में विकार, उत्पन्न होना, सुख-दुःख, इच्छा द्वेष और प्रयत्न'' वैशेषिक दर्शन ने कहे हैं।

सारांश अथ :-''आत्मा शरीर से भिन्न एक चेतन तत्व है, क्योंकि श्वास को बाहर निकालना, अन्दर लेना, पलक झपकाना आदि क्रियाएँ उसी समय तक रहती हैं, जब तक उसका आत्मा से संयोग रहता है। आत्मा से संयोग छूटने पर मृतक में ये क्रियाएँ नहीं होती, इसलिये जहाँ ये क्रियाएँ होती हैं - वहाँ आत्मा सिद्ध होता है।'' **आत्मा का प्रत्यक्ष**- ''**आत्मन्यात्म मनसो संयोग विशेषादात्मप्रत्यक्षम्**।। वैशे.द. २/१/११

अर्थात्- आत्मा में आत्मा और मन के संयोग विशेष से आत्मा का प्रत्यक्ष होता है। अर्थात् आत्मा और मन का योग समाधि द्वारा जब संयोग प्रत्यक्ष होता है, तब उस संयोग विशेष से आत्मा का प्रत्यक्ष होता है।।

सूक्ष्म अन्य दर्शन - **तथा द्रव्यान्तरेषु प्रत्यक्षम्**''-वैशे. ९/१/१२ इसी प्रकार अन्य (सूक्ष्म अतीन्द्रि) द्रव्यों का भी प्रत्यक्ष होता है।

तत्वज्ञान - ''**समाधि विशेषाभ्यासात्**'' न्याय द. ४/२/३८।।

समाधि विशेष के अभ्यास से (तत्व ज्ञान) उत्पन्न होता है।

अपवग (मोक्ष)- ''**तद्भावश्चापवर्गे**''।। न्या.द. ४/२/४५।। और मोक्ष में उसका (इन्द्रिय और अर्थभूत शरीर का) अभाव हो जाता है।

उपाय - तदर्थ यम नियमाभ्यास संस्कारो योगाचाध्यात्म विध्युपायैः।। (न्या.द. ४/२४६) उस मोक्ष के लिये यम-नियम आदि अष्टांग योग का पालन शान्त-एकान्त स्थान में निरन्तर श्रद्धा-भक्ति पूर्वक अभ्यास-साधना करना चाहिये।

नित्य - ''**आकाशवत् सर्व गतश्च नित्यः।।**'' छा.उप.३/१४/३ आकाश के समान आत्मा व्यापक और नित्य है। **शुद्ध** जैसे सर्वत्र व्याप्त आकाश भी सुक्ष्म होने से लिपायमान नहीं होता, वैसे ही देही आत्मा तथा परमात्मा गुणातीत होने से लिपायमान नहीं होते हैं। अर्थात् आत्मा और परम्परा, दोनों नित्य, शुद्ध, बुद्ध और मुक्त स्वभाव हैं पर दोनों एक ही नहीं हैं। आत्मा अल्पज्ञ एकदेशी व अणु स्वरूप है। परमात्मा सर्वव्यापक, सर्वान्तर, सुक्ष्म से सूक्ष्मतर महानतम है। परन्तु (**इच्छाद्वेष**....न्या.द.१/१० और **प्राणापान निमेष** ..... वैशे.द. ३/२/४) में बताये हुए लिंग आत्मा के धर्म नहीं हैं और न इनका आत्मा के साथ समवाय सम्बन्ध है। यह आत्मा का शरीर के साथ सम्बन्ध-अस्तित्व बतलाने के लिए केवल लिंग (चिन्ह मात्र) है। जैसे राम का मकान निर्देश करने के लिये यह कहा जाय कि ''जिस मकान में आम का वृक्ष है, वही राम का मकान है, उपरोक्त इन दोनों सूत्रों में आत्मा के सगुण अर्थात् शबल स्वरूप को बतलाया है, जिसकी संज्ञा जीव (आत्मा) है क्योंकि प्राण, अपान, पलक मींचना, खोलना, जीवन यह सब प्राणों के धर्म हैं। इन्द्रियों का विकार इन्द्रियों का धर्म है। इच्छा द्वेष सुख-दुःख प्रयत्न और ज्ञान बुद्धि के धर्म हैं। ये सब तीनों गुणों के कायों के धर्म गुण रूप ही हैं।

इसी बात को गीता के अ. ५ के ८-९ श्लोक में स्पष्ट कहा है कि- ''**नैव किंचित् करोमीति, मुक्तोमन्येत् तत्ववित्**... अर्थात्-तत्वज्ञ सांख्य योगी तो देखता हुआ, सुनता हुआ स्पर्श करता हुआ, सूंघता हुआ, भोजन करता, गमन करता, शमन करता बोलता, चलता, लेता, त्यागता ... हुआ भी सब इन्द्रियाँ अपने अर्थों में बर्त रही है, इस प्रकार समझता हुआ, निःसन्देह ऐसे माने कि मैं कुछ भी नहीं करता हूँ। मैं ज्ञाता, अकर्ता, नित्य सनातन शुद्ध-बुद्ध-मुक्त स्वभाव हूँ।

''**आत्मा का शुद्ध स्वरूप**'':-वैशे.सू. ७/१/१२२ में बताया गया है''**विभवान्महानाकाश तथा तात्मा**''-अर्थात्-आत्मा विभुधर्मवान् महान् है आकाशवत्। वैसे-ज्ञान स्वरूप आत्मा है। वैशे.के-इस सूत्र के अनुसार ही श्रुति और स्मृतियों में आत्मा के शुद्ध स्वरूप को व्यापक और निष्कृय ही माना है, यथा: ''**आकाशवत् सर्वगतश्च नित्यः**'' (छा.उ. ३/१४/३) आकाश के समान व्यापक और नित्य है ''**नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽमं सनातनः**।। गीता २/२४'' यह आत्मा नित्य, व्यापक, स्थाणु तथा निष्कृय और सनातन है। और भी गीता से-

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मानोपलिप्यते। गीता. १३/३२-३३
यथा प्रकाशमत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयहि भारत।।

अर्थात् जिस प्रकार सर्वत्र व्याप्त हुआ आकाश भी सूक्ष्म होने से लिपायमान नहीं होता है, वैसे ही सर्वत्र देह में स्थित हुआ आत्मा भी, गुणातीत होने पर देह के गुणों से लिपायमान नहीं होता। हे अर्जुन! जिस प्रकार एक ही सूर्य सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार एक ही आत्मा सम्पूर्ण क्षेत्र (शरीर) को भी प्रकाशित करता है। परसारांश यह कि आत्मा केशबल स्वरूप की पिण्डरूप व्यष्टि शरीर में सिद्धि से ''**सामान्यतो दृष्ट प्रमाण द्वारा**'' परमात्मा के शबल स्वरूप की ब्रह्माण्ड रूप समष्टि जगत में सिद्धि होती है। अर्थात् आत्मा को प्रकृति-देह से भिन्न जानने वाला-वह पुनः नहीं लौटता है। गीता ३/२७ ''**प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणिसर्वशः**। गीता. ७/९०'' अर्थात्-प्रकृति के गुण गुणों में बर्त रहे हैं, इन्द्रियाँ, इन्द्रियों के अथो में बर्त रही है।

''**ब्रह्म का (चेतनतत्व का) शुद्धस्वरूपः-तद्व्यक्तमाहहि।** वेदान्तदर्शन ३/२/२३'' मूर्त-अमूर्त से परे ब्रह्म का अव्यक्त शुद्ध स्वरूप है, जैसा कि श्रुति में शुद्धमपापविद्धम (ईश. ८) वह शुद्ध है, पाप से रहित है, शुद्ध चेतन तत्व ज्ञान वाला नहीं किन्तु-ज्ञान स्वरूप है। **सत्यं ज्ञान मनन्तं ब्रह्म** ते.उ. २/९/९।।

शेष पृष्ठ २० पर....

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

-स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
कुलाधिपति, गुरुकुल प्रभात आश्रम,
भोलाझाल, मेरठ

वेदाध्ययन के पश्चात् समावर्तन संस्कार के समय आचार्य अन्तेवासी से कहते हैं -**स्वाध्यायान्मा प्रमदः** अर्थात् स्वाध्याय से प्रमाद मत करो। स्वाध्याय का शाब्दिक अर्थ **सुष्ठु अध्यायः स्वाध्यायः, स्वस्य अध्यायः स्वाध्यायः, सु अध्यायः स्वाध्यायः** है। अर्थात् इस प्रकार का अध्ययन, जिसमें मन सहित सभी इन्द्रियाँ समाहित हो जाएँ। तप के नाम से हमारे जितने भी कर्म कहे गये हैं या जिनका उपदेश दिया गया है, उन सबका एकमात्र उद्देश्य है - मन का समाहित होना। हम चाहे कितने ही धार्मिक प्रवचन या धार्मिक अनुष्ठान कर रहे हों, किन्तु यदि उसमें मन समाहित नहीं हुआ अथवा चित्तवृत्तियाँ निरुद्ध नहीं हुईं तो हमको उस धार्मिक कृत्य का कोई वास्तविक लाभ नहीं मिला। अन्ततः हमारे जितने भी क्रियाकलाप हैं, उनके अनुष्ठान का एकमात्र उद्देश्य भी तो यही है कि हम मानसिक स्थिति से पुष्ट एवं संतुष्ट हों। स्वाध्याय की महिमा शतपथ ब्राह्मण के अन्दर की गई है।[1] मैं समझता हूँ कि स्वाध्याय के महत्व को दर्शाने के लिए सम्भवतः इससे अधिक प्रबल युक्ति और महत्व कहीं अन्यत्र वर्णित हो।

स्वाध्याय का क्षेत्र व्यापक है। जिस विषय में जिस विद्वान् या जिज्ञासु की रुचि है तत्सम्बन्धी ग्रन्थों या शास्त्रों का अध्ययन उसकी ज्ञानवृद्धि में सहायक होता है और अध्येता को उससे आह्लाद प्राप्त होता है। इसी ओर राजर्षि मनु ने इन शब्दों में संकेत किया है-

यथा यथा ही पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति।
तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते।।

स्वयं तत्तत् ग्रन्थों का अध्ययन न करके उस विषय में लोकश्रुति के अनुसार कथन या लेखन निश्चय ही श्रोता एवं अध्येता को यथार्थ से बहुत दूर ले जाता है। **उदाहरणार्थ** - महाभारत की एक घटना जो प्रायः लोक में विश्रुत है कि द्रौपदी ने दुर्योधन का यह कहकर **अन्धे का पुत्र अन्धा होता है** उपहास किया था। जबकि वर्तमान महाभारत के संस्करणों में इस प्रकार का वर्णन नहीं मिलता। महाभारत के वर्णन से तो यह स्पष्ट है कि जब दुर्योधन मयनिर्मित भवन को देखते हुए द्वार से टकराता है या पानी में गिरता है, तब वहाँ द्रोपदी नहीं थी। जब राजसूय यज्ञ समाप्त हो गया, तो सभी राजा-महाराजा अपने-अपने देश की ओर प्रस्थान कर गये। यहाँ तक कि योगेश्वर श्री कृष्ण जी भी द्वारिका चले गये थे।[2] उसके पश्चात् दुर्योधन के मन में विशेषरूप से उस भवन को देखने की इच्छा हुई और वह शकुनि के साथ उस भवन में घूमने लगा[3] और भ्रमवश जल को स्थल, स्थल को जल, जहाँ द्वार नहीं वहाँ द्वार, जहाँ द्वार वहाँ खुला समझकर व्यवहार करता रहा, जिससे उसको विपरीत फल मिला। इसी प्रकरण में जब जल को स्थल समझकर उसमें प्रवेश किया तो वह जल में गिर गया। तब अर्जुन, भीम, नकुल तथा सहदेव इस दृश्य को देखकर हँस पड़े, जो एक स्वाभाविक व्यवहार है। उन्होंने दूसरा वस्त्र मंगवाकर दुर्योधन को आदरपूर्वक दिया भी। इस घटना के उपरान्त हस्तिनापुर लौटने पर दुर्योधन ने जो ऐश्वर्य पाण्डवों का देखा था, उससे व्यथित होता हुआ अत्यन्त विषाद में पड़ गया तथा अपनी इस मनोव्यथा को शकुनि से कहा और शकुनि ने धृतराष्ट्र से उसकी मनोव्यथा जानने के लिए साग्रह निवेदन किया। धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को बुलाकर कष्ट का कारण पूछा। तब दुर्योधन ने धर्मराज युधिष्ठिर के ऐश्वर्य को देखकर जो उसके अन्दर हीन भावना तथा भय व्याप्त हो गया था, उसको प्रकट किया और उसी प्रसंग में उसने भीम के द्वारा उपहास[4] अन्य स्त्रियों सहित द्रौपदी के हँसने की बात भी कही, जो यथार्थ से सम्बन्ध ही नहीं रखती। दुर्योधन तो उपहास करने वालों में श्री कृष्ण का भी नाम जोड़ देता है।[5] जबकि श्री कृष्ण जी तो पहले ही द्वारिका प्रस्थान कर गये थे।

दुर्योधन जैसे ईर्ष्यालु एवं असत्यवादी व्यक्ति ने अपने पिता को उत्तेजित करने के लिए जो मनगढंत बाते कहीं, वे तो सर्वथा असत्य हैं ही, किन्तु आज भी ये मिथ्या बातें कथावाचकों के द्वारा कही एवं सुनी जाती है। इसी प्रकार कर्ण के दानं की महिमा भी निराधार प्रचारित की जाती है कि अर्जुन के बाणों से कर्ण के धराशायी होने के बाद श्री कृष्ण जी के कहने पर अर्जुन उसके पास पहुँचे और उससे दान मांगा। उस दान की सर्वथा मिथ्या कथा को जोर-शोर से प्रसारित किया जाता है। जबकि महाभारत में यह वर्णन है कि अर्जुन के तीक्ष्ण बाणों से कर्ण का सिर धड़ से अलग हो गया था और उसके सारथि शल्य कटी हुई ध्वजा वाले रथ को लेकर युद्ध से भाग खड़े हुए थे।[6] अब उससे श्री कृष्ण द्वारा दान मांगने का इस सच्ची घटना से कैसे सम्बन्ध हो सकता है? वस्तुतः स्वाध्याय में प्रमाद करने के कारण हमें सच्चे इतिहास का बोध ही नहीं रहता।

ऐसे ही रामायण के सम्बन्ध में भी यह बात निराधार कही जाती है कि श्री रामचन्द्र जी ने लक्ष्मण जी से कहा है-

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

यह श्लोक किसी अन्य कवि का हो सकता है, क्योंकि रामायण में तो यह श्लोक उपलब्ध ही नहीं होता। इसी प्रकार की अन्य ऐतिहासिक घटनाएँ स्वाध्याय में प्रमाद के कारण सत्य से बहुत दूर हो जाती हैं। मुझे इस बात का ध्यान है कि हमारे ही किसी विद्वान ने श्री राम जी के प्रसंग में यह कहा कि जिस प्रकार से सत्यवती को महाराज शान्तनु उसके पुत्र को राज्य देने की प्रतिज्ञा करके निषाधराज से लाए थे, उसी प्रकार महाराज दशरथ भी केकय नरेश से कैकयी के पुत्र को ही राजा बनाने के पणिबन्ध से कैकेयी को लाए थे। प्रबुद्ध श्रोताओं में से किसी ने उस वक्ता से प्रश्न कर दिया कि यह बात कहाँ लिखी है? वक्ता महाशय महीनों नहीं; अपितु वर्षों में भी उसका उत्तर नहीं दे सके। मेरे सामने भी उसी जिज्ञासु श्रोता ने यह प्रश्न रखा। तब मैनें कहा कि वाल्मीकि रामायण में साक्षात् तो इसका वर्णन कहीं नहीं है, किन्तु वनवास के समय भरत को समझाते हुए श्रीराम ने स्वयं भरत से कहा है कि **'भरत तुम्हें निरर्थक शोक नहीं करना चाहिए, क्योंकि तुम्हारी माता जी 'राज्यशुल्का' थी'**।[7] राज्यशुल्का का अर्थ है राज्य ही जिसका शुल्क हो। जैसे सीताजी के सम्बन्ध में आया है कि सीता जी वीर्यशुल्का थी

अर्थात् पराक्रम ही जिसका मूल्य हो। इससे स्पष्ट हो जाता है कि केकय नरेश ने महाराज दशरथ से अपने दौहित्र के लिए राज्य का वचन ले लिया था। रोचक बात तो यह है कि जिस श्रोता ने यह प्रश्न किया था, उसने वक्ता की अन्य कृतियों से प्रसन्न होकर उनको पुरस्कार देने की घोषणा भी कर दी थी, किन्तु वर्षों बाद भी न उन्होंने जिज्ञासु को सन्तोषजनक उत्तर ही दिया और न ही जिज्ञासु ने उन्हें एक धेला। स्वाध्याय के अभाव में वक्ता महोदय इसका उत्तर नहीं दे सके।

इसलिए आचार्य के '**स्वाध्यायान्मा प्रमदः**' इस निर्देश का मनसा-वाचा-कर्मणा पालन करना चाहिए, जिससे स्वाध्यायनिष्ठ व्यक्ति स्वयं निर्भ्रान्त हो दूसरों को भी निर्भ्रान्त कर सके।

[1] शतपथ में कथित स्वाध्याय का लाभ तो स्वाध्यायकर्ता को प्राप्त होगा ही।

(क) अथातः स्वाध्यायप्रशंसा। प्रिये स्वाध्यायप्रवचने भवतो युक्तमना भवत्यपराधीनोऽहरहर्थान्त्साधयते सुखं स्वपिति परमचिकित्सक आत्मनो भवतीन्द्रियसंयमश्चैकारामता च प्रज्ञावृद्धिर्यशोलोकपक्तिः। - (श. ब्रा. ११/५/७/१)

(ख) ये ह वै के च श्रमाः। इमे द्यावापृथिवी अन्तरेण स्वाध्यायो हैव तेषां परमता काष्ठा य एवं विद्वान्त्स्वाध्यायमधीते तस्मात्स्वाध्यायोऽध्येतव्यः। - (श. ब्रा. ११/५/७/२)

(ग) यदि ह वा अप्यभ्यक्तः। अलंकृतः सुहितः सुखे शयने शयानः स्वाध्यायमधीत आहैव स नखाग्रेभ्यस्तप्यते य एवं विद्वान्त्स्वाध्यायमधीते। - (श. ब्रा. ११/५/७/४)

(घ) यन्ति वा आपः एत्यादित्यः एति चन्द्रमा यन्ति नक्षत्राणि यथा ह वा एता देवता नेयुर्न कुर्युः एवं हैव तदहर्ब्राह्मणो भवति यदहः स्वाध्यायं नाधीते तस्मात्स्वाध्यायोऽध्येतव्यस्तमादप्यृचं वा यजुर्वा साम वा गाथां वा कुंब्यां वाभिव्याहरेद् व्रतस्याव्यवच्छेदाय। - (श. ब्रा. ११/५/७/१०)

[2] गते द्वारवतीं कृष्णे सात्वतप्रवरे नृप।
- (महा. सभापर्व ४५/६७)

[3] वसन् दुर्योधनस्तस्यां सभायां पुरूषर्षभ।
शनैर्ददर्श तां सर्वां सभां शकुनिना सह।।
- (महा. सभापर्व ४७/१)

[4] भीमसेनेन तत्रोक्तो धृतराष्ट्रात्मजेति च।
सम्बोध्य प्रहसित्वा च इतो द्वारं नराधिप।।
- (महा. सभापर्व ५०/३५)

[5] तत्र मां प्राहसत् कृष्णः पार्थेन सह सुस्वरम्।
द्रौपदी च सह स्त्रीभिर्व्यथयन्ती मनो मम।।
- (महा. सभापर्व ५०/३०)

[6] शरोत्तमेनाञ्जलिकेन राजस्तदा महास्त्रप्रतिमन्त्रितेन।
पार्थोऽपराह्णः शिर उच्चकर्त वैकर्तनस्याथ महेन्द्रसूनुः।।
कर्णं तु शूरं पतितं पृथिव्यां शराचितं शोणितदिग्धगात्रम्।
दृष्ट्वा शयानं भुवि मद्रराजश्छिन्नध्वजेनाथ ययौ रथेन।।
- (महा. कर्णपर्व ११/५१,६६)

[7] पुरा भ्रातः पिता नः स मातरं ते समुद्वहन्।
मातामहे समाश्रौषीद् राज्यशुल्कमनुत्तमम्।।
(वा. रामा. अयोध्याकाण्ड १०७/३)

आस्था चैनल पर देखें वैदिक प्रवचन

जैसे कि सभी आर्य बंधु जानते हैं कि विचार टी.वी. द्वारा निर्मित वैदिक कार्यक्रमों का पिछले डेढ़ वर्ष से भी अधिक समय से साप्ताहिक प्रसारण आस्था चैनल पर प्रत्येक शनिवार रात्रि ९:३० बजे से एवं पिछले दस मास से दैनिक प्रसारण आस्था भजन चैनल पर प्रतिदिन रात्रि ८:०० बजे से किया जा रहा है।

इसी श्रृंखला में अब विचार द्वारा निर्मित सभी कार्यक्रम आस्था चैनल पर दैनिक रूप से प्रतिदिन रात्रि ९:३० से १०:०० बजे तक प्रसारित किए जाएँगे।

इन कार्यक्रमों के दैनिक प्रसारण का विवरण निम्न अनुसार है।

दिन	विषय	वक्ता
सोमवार	क्रियात्मक योगाभ्यास	आचार्य ज्ञानेश्वरार्य
मंगलवार	ईशोपनिषद्	स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक
बुधवार	मधुर सम्बन्धों के स्वर्णिम सूत्र	आचार्य आशीष जी आर्य
गुरूवार	व्यक्तित्व विकास	डॉ. विनय विद्यालंकार
शुक्रवार	पातंजल योग दर्शन	आचार्य सत्यप्रकाश जी
शनिवार	सोलह संस्कार	डॉ. वागीश आचार्य
रविवार	दस्तावेजी चलचित्र (डॉक्युमेण्ट्री)/लघु चलचित्र (शॉर्ट फिल्म)	

सभी आर्य बन्धुओं से विनम्र निवेदन है कि इसका लाभ लेवें एवं अपनी प्रतिक्रिया विचार को info@vichaar.tv पर जरूर लिख भेजें। इसकी अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु विचार की वेबसाईट www.vichaar.tv अवश्य देखें।

पृ. १८ का शेष **आत्मा-परमात्मा का शुद्ध स्वरूप....**

शुद्ध ब्रह्म-सत्य, ज्ञान और अनन्त है। **तच्छुभ्रं ज्योतिषांज्योतिः** - मुण्डक उप.।। वह शुभ्रज्योतियों का ज्योति है।

सारांश :- ब्रह्म का शुद्ध स्वरूप प्रायः नेति-नेति निषेध मुख से वर्णन किया गया है, क्योंकि-उसका स्वरूप क्या है? यह बात तो आत्मानुभव (तदन्तः करणेन) समाधि से जाना जा सकता है, उपदेश केवल यही हो सकता है कि, ज्ञात वस्तुओं से उसका परे होना जँचा दिया जाय, जैसा कि महर्षि याज्ञवल्क्य ने देवी गार्गी को उपदेश किया है। **अव्यज्ञं अशब्दं अरूपं नाद बिन्दु कलाऽतीतं च न जाने किं तस्मै नमो-नमः** वह ब्रह्म-पृथ्वी सूर्यादि सब में है पर ये जानते नहीं। ऐसे ही शरीर में आत्मा-परमात्मा दोनों है-पर शरीर जानता नहीं। **अणोरणीमान् महतोमहीमान्** (श्वेता.उप. ३/२०/कठ. २/२०/ तै.आ. १०/१२/९) अर्थात् अणु से अणु-(सुक्ष्म से सुक्ष्मतर) है और महान से महत्तर है। **महान्तं विभुमात्मानंमत्वा धीरो न शोचति।** कठ. १/२/२२- उस महान् विभु आत्मा (परमात्मा) को जानकर धीर पुरूष शोक नहीं करता-शोक से परे हो जाता है। शुद्ध-चेतन-अपरिणामी निर्विकार निष्क्रिय (केवल ज्ञान स्वरूप) कूटस्थ नित्य है।

प्रकृतिः-जड़ तत्व तो विकारी सक्रिय और परिणामी, नित्य है, जड़ तत्व में ज्ञान, नियम और व्यवस्थापूर्वक क्रिया, चेतनतत्व की सन्निधि मात्र से है। -महसिद्धान्त सांख्य और योग के समान, वेदान्त को भी अभिमत है। जैसे: **''निष्कलं निष्क्रियं शान्तं निरवद्यं, निरंजनम्''** श्वेता.उप. ६/१९। वह निरवभव, निश्चल, शान्त, निर्दोष, निर्लेप, एकरस है।●

सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास ईश्वर, जीव

-सुरेशचन्द्र दीक्षित
से.नि. प्राचार्य, माणक भवन
न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)

महर्षि दयानन्द कहते हैं कि संसार में पौराणिक लोग वेदों में अनेक ईश्वर का बखान करते हैं। यह गलत है। चारों वेदों में केवल एक ही ईश्वर के बारे में लेख है। वेदों में देवता शब्द का उल्लेख दिव्य गुणों से युक्त होने के अर्थ में आया है। शतपथ ब्राह्मण में तैंतीस देव अर्थात् आठ वसु, ग्यारह रूद्र, संवतसर के बारह माह, इन्द्र और यज्ञ (प्रजापति) का उल्लेख है। ये सब कल्याणकारी हैं। शतपथ के चौदहवें कांड में परमात्मा इन सबसे बड़ा होने के कारण चौतीहसवाँ उपास्य देव है। ईश्वर जगतपति है। हम सब उसकी संतान हैं। वह मृत्यु से परे है।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

यह यजुर्वेद का मंत्र है। ईश्वर ही लोकों की उत्पत्ति स्थान व आधार है। वह पृथ्वी से लेकर सूर्य लोक तक सृष्टि को धारण किये है। जैसे रूप, रस, गंध, स्पर्श का ज्ञान होने से पृथ्वी का ज्ञान प्रत्यक्ष किया जाता है वैसे ही सृष्टि की रचना में ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर भी प्रत्यक्ष है। शुद्ध जीवात्मा, परमात्मा के ऐश्वर्य को जानता है। ईश्वर व्यापक है। इसलिए वह सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वनियंता, सृष्टा-धर्ता और प्रलयकर्ता कहलाता है। वह दयालु है परन्तु कर्मानुसार उचित फ्ल दाता व न्यायकारी है, ईश्वर ने सकल पदार्थ उत्पन्न कर दान स्वरूप दे रखें हैं। ईश्वर निराकार है। अगर साकार होता तो व्यापक नहीं होता। साकार होने पर इन्द्रियाधीन होता। निराकार होने से सब जगत को सूक्ष्म कारणों से स्थूलाकार बना देता है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है। वह उत्पत्ति, पालन, प्रलय, जीवों के पाप-पुण्य की यथा योग्य व्यवस्था में किसी की सहायता नहीं लेता, वह अनादि है। सबकी भलाई चाहता है परन्तु स्वतन्त्रता के साथ किसी को बिना पाप किये पराधीन नहीं करता इन सब गुणों के कारण उसकी प्रार्थना व स्तुति करना चाहिए। जिससे इसके गुण, कर्म व स्वभाव से अपने गुण, कर्म व स्वभाव को सुधार सकें। हमें परमात्मा से बुद्धि, प्रकाश, शिव संकल्प, धैर्य की प्रार्थना करते हुये अविद्या व क्लेशों से दूर रहने की प्रार्थना करनी चाहिए। हमें इन्द्रियों को धर्माचरण में लगाने का प्रयास व प्रार्थना करनी चाहिए। हम असत् मार्ग से सत् मार्ग पर चलें और मोक्ष के आनन्द रूप अमृत को प्राप्त करें। परमेश्वर से गलत मांगों की प्रार्थना न करें। वह उसको स्वीकार नहीं होगी। हम शुभ कर्म और जीवंत जीवन जीते हुये सौ वर्ष तक जीयें। पुरूषार्थी जीव को ईश्वर भी सहारा देता है। उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होता है। अष्टांग योग के द्वारा हमें उसकी उपासना व सामिप्य की प्रार्थना करनी चाहिए। राग, द्वेष छोड़ना, सत्पुरूषों का संग व ओ३म् के जाप द्वारा हम ईश्वर को समर्पित हों। उपासना शुद्ध स्थान पर एकान्त में करें। इसमें अन्तःकरण की पवित्रता आवश्यक है। जैसे अग्नि के पास जाने से शीत दूर होती है। वैसे ही परमेश्वर के समीप होने से हम परमेश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को प्राप्त कर जीवात्मा के गुण, कर्म व स्वभाव को पवित्र कर सकते हैं। जो परमेश्वर की उपासना नहीं करता वह कृतघ्न व महामूर्ख है। ईश्वर इन्द्रिय रहित है फिर भी उसकी रचना में कही भी कमी नहीं है। सब तरह के जीव, पेड़ व ब्रह्माण्ड की रचना कर कितना कमाल दिखाया है।

जो परमेश्वर निष्क्रिय होता तो जगत् की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय नहीं कर सकता। वह उचित क्रिया कर उचित कार्य करता है। परमात्मा अनंत है, उसका ज्ञान अनंत है। ईश्वर की स्थिति में प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है और न ईश्वर जगत् का उपादान कारण है किन्तु निमित्त कारण है। ईश्वर न जन्म लेता है और न अवतार। जो जन्म लेगा उसकी मृत्यु अवश्य है। जैसे आकाश अनंत और सब में व्यापक है वैसे ही परमात्मा अनंत व सर्वव्यापक है। ईश्वर प्रत्येक जीव को कर्मों का फल यथावत् देता है, क्षमा नहीं करता। जीव अपने कर्तव्य और कर्मों में स्वतंत्र और ईश्वरीय व्यवस्था में परतंत्र है। जीव कभी भी उत्पन्न नहीं हुआ और अनादि है। जीव का शरीर तथा इन्द्रियों के गोलक परमेश्वर बनाये हुये हैं परन्तु वह सब जीव के अधीन हैं। कर्मों के फल ईश्वर नहीं जीव भोगता है। ईश्वर व जीव चेतन स्वरूप हैं परन्तु जीव को पाप-पुण्य का फल देना आदि धर्म युक्त कर्म है। जीव इन्द्रियों के कारण क्षुधा, तृष्णा, हर्ष, शोक होना ये जीवात्मा के गुण परमात्मा से भिन्न हैं। जब तक आत्मा देह में होती है तब तक ये गुण प्रकाशित रहते हैं। मृत्यु पर ये गुण लुप्त हो जाते हैं। परमेश्वर का ज्ञान सदा एक रस और अखंडित है। भूत, भविष्य व वर्तमान तो जीवों के लिए हैं भूत, भविष्य और वर्तमान के ज्ञान और फल देने में परमेश्वर स्वतंत्र और जीव किन्चित वर्तमान और कर्म करने में स्वतंत्र है। ब्रह्म और जीव अलग-अलग हैं, परन्तु जीव समाधिस्थ परमेश्वर में प्रेम बद्ध होकर निमग्न होता है वह कह सकता है कि मैं और ब्रह्म एक अर्थात् अविरोधी एक अवकाशस्थ हैं। जो जीव परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल अपने गुण, कर्म, स्वभाव करता है वही साधर्म्य से ब्रह्म के साथ एकता कर सकता है।

स्वामी जी अनुशब्द की व्याख्या करते हुये बताते हैं कि परमेश्वर शरीर में प्रविष्ठ हुए जीवों के साथ अनुप्रविष्ठ के समान होकर वेद द्वारा सब नाम रूप आदि की विद्या को प्रकट करते हैं और शरीर में जीव को प्रवेश करा आप जीव के भीतर अनुप्रविष्ठ हो रहा है। परमेश्वर अनंत ज्ञान, आनंद, बल, क्रिया और व्यापक हैं जबकि जीव अल्प ज्ञान, अल्पबल, अल्पस्वरूप ब्रह्म से भिन्न होने से जीव व परमेश्वर एक नहीं हैं। जड़ में रूपादि गुण हैं और चेतन में ज्ञानादि गुण। जो गुणों से युक्त है वह सगुण और जो गुणों से रहित वह निर्गुण कहाता है। कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है कि जिसमें केवल निर्गुणता व केवल सगुणता हो किन्तु एक ही में सगुणता और निर्गुणता सदा रहती है। वैसे ही परमेश्वर अपने अनंत ज्ञान, बलादि गुणों से सहित होने से सगुण और रूपादि जड़ के तथा द्वेषादि जीव के गुणों से पृथक होने से निर्गुण कहलाता है। परमेश्वर न रोगी है और न विरक्त। वह तो न्यायकारी है। जीव के समान परमेश्वर में कोई इच्छा नहीं है किन्तु ईक्षण अर्थात्, सब प्रकार की विद्या का दर्शन और सब सृष्टि का निर्माता है। परमेश्वर निराकार है। वेद विद्या का ज्ञान देने के लिए ईश्वर को सर्वशक्तिमान एवं व्यापक होने के कारण मुँह से कुछ बोलने की आवश्यकता नहीं है। उसे अन्य इन्द्रियों की भी आवश्यकता नहीं है। प्रथम सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा इन ऋषियों के आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया। यह ज्ञान ब्रह्म की आत्मा में अग्नि आदि के द्वारा स्थापित कराया। जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्य को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराया और उस

शेष पृष्ठ २३ पर....

योगाभ्यास के उपयोगी साधन एवं योगाभ्यास की सरल विधि

१. योगाभ्यास में रूचि होना हमारे शुभ कर्मों का फल है। श्रद्धा-उत्साह एवं विवेक पूर्ण अभ्यास से इस रूचि का विकास करना प्रत्येक साधक/साधिका का मुख्य उद्देश्य है।

२. सात्विक वृति से योगाभ्यास में उन्नति सम्भव है। अत: सादा जीवन-उच्च विचार, शान्तिप्रिय, सरल एवं मधुर स्वभाव बनाऐं।

३. कम बोलें, सत्य बोलें एवं प्रिय बोलें, इससे वाणी की शक्ति बढ़ेगी, क्रोध पर विजय प्राप्त होगी।

४. प्रत्येक कार्य पूर्ण मनोयोग से करें, पुरूषार्थ करने पर कार्य सिद्ध न हो, तभी किसी व्यक्ति या ईश्वर से प्रबल प्रार्थना करके आत्मिय शांति बढ़ाऐं।

५. आवश्यक काम अपना नैतिक कर्तव्य समझ कर करें, किसी के प्रति राग, द्वेष या मोह न करें, प्राणीमात्र में समदृष्टि बनाने का अभ्यास करें।

६. अहंकार पूर्ण-कार्य भाव को हटाकर ईश्वरीय प्रेरणा से कार्य करने का सेवक-स्वामी भाव बनाऐं।

७. पहले देखें-सुनें विषयों, खाए-पिये पदार्थों तथा भोगे हुए भोगों को बार-बार याद न करें, तथा मृत्यु को याद रखते हुए वैराग्य भाव बनाऐं।

८. मन को सदाचार तथा सत्कर्मों में व्यस्त रखें, खुला या खाली न छोड़ें।

९. मन के बुरे संकल्प पूरे होने से बल घटता है, बुरे कर्म के फल का विचार कर सत्कर्मों में लगने से आत्मिक बल बढ़ता है।

१०. मोक्षदायी ग्रन्थ-वेद, उपनिषद, वेदों में योग विद्या, योगदर्शन आदि का स्वाध्याय नित्य करें, आत्मचिंतन से निज उद्देश्य को याद रखें।

११. शीघ्र पचने वाले सात्विक, पौष्टिक, ऋतु अनुकूल-हितकारी, भूख से थोड़ा कम भोजन करें।

१२. लाल मिर्च, खटाई, प्याज, लहसन आदि पित्त-प्रकोषक तथा अण्डा-मांस, चाय, कॉफी आदि उत्तेजक पदार्थ तथा विरूद्ध भोजन तेल, दूध, नमक, जामुन आदि एक साथ न खाऐं, का परित्याग करें।

१३. सब प्रकार का धूम्रपान, मद्यपान आदि नशीली वस्तुओं का परित्याग करें।

१४. सप्ताह में एक दिन उपवास रखें, उपवास के समय फल-दुग्ध सूक्ष्म आहार लें, धीरे-धीरे उपवास को बढ़ाऐं।

१५. मन-वचन-कर्म से अहिंसा-सत्य-अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह, यमों का पालन व्यवहार में रखना आवश्यक है।

१६. अन्दर-बाहर की शुद्धि, संतोष रखना, मान-अपमान, हानि-लाभ तथा शीत-उष्ण में साधना न छोड़ना आदि तप करें, इनका आत्म निरीक्षण करके प्रतिदिन (योग दैनन्दिनी) में लिखें।

आध्यात्मिक जिज्ञासा/प्रश्न आपके, जवाब वैदिक विद्वानों के

ईश्वर, प्रकृति, जीवात्मा तथा अध्यात्म (धर्म) से संबंधित आपकी कोई जिज्ञासा अथवा प्रश्न हो तो उठाइये कलम और वैदिक संसार को लिखिए पत्र, उत्तर वैदिक विद्वान् महानुभावों से प्राप्त कर प्रकाशित किये जावेंगे। - सम्पादक

१. नित्य प्रात: ४ बजे आलस्य त्याग कर उठ जायें और सौभाग्य बढ़ाने वाली प्रार्थना करें। उष: पान, शौच, दंतधावन, स्नान आदि नित्यकर्म शीघ्रकर साधना के लिए समय बचाऐं।

२. प्रात: नियत समय में रूचिकर नियत स्थान पर एक आसन से बैठकर श्रद्धा सहित कम से कम एक घण्टा योगाभ्यास करें। साधना करने में प्रमाद, लज्जा एवं संकोच न करें।

३. सिद्धासन, पद्मासन, सुखासन तथा स्वस्तिकासन में से एक आसन पर संकल्प को दृढ़ बनाते हुए रीढ़ की हड्डी और गर्दन को सीधा रखकर अभ्यास करें।

४. ईश्वर-स्तुति, प्रार्थनोपासना के लिए मंत्र, श्लोक, भजनों द्वारा भक्ति-उपासना की भूख पैदा करें।

५. नाड़ी-शोधन, बाह्य-स्तम्भवृति (रेचक सहित कुम्भक) का क्रमिक अभ्यास मन की एकाग्रता विधिवत् सीख कर ही करें।

६. स्तम्भवृत्ति प्राणायाम के साथ बाह्य विषयों से मन को हटाते हुए प्रत्याहार के द्वारा मन को भ्रकुटि में केन्द्रित करने का प्रयास नित्य करें।

७. मन केन्द्रित करते हुए प्रारम्भिक अवस्था में गायत्री मंत्र का जाप २१ से १०१ बार जपें।

८. मूर्धा, भ्रूमध्य, कण्ठ, हृदय आदि स्थानों पर मन एकाग्र करते हुए ''ओ३म्'' का मानसिक जप करें। जप सूक्ष्म होकर बुद्धि में स्थायी (स्थिर) हो जाय तो अपनी चेतना को खोजें।

९. आत्म चेतना के साथ ओत-प्रोत परमात्मा की उन्नत शक्तियों एवं गुणों को विचारते हुए उन्हें अपने अन्दर धारण करें और स्वभाव में अपनाऐं।

१०. साधना के बाद में परमात्मा की दया का अनुभव करते हुए प्रसन्नता पूर्वक धन्यवाद करें।

११. साधना के बाद शारीरिक आसन, प्राणायाम, भ्रमण शक्ति के अनुसार नित्य करें।

१२. योगाभ्यासियों का संग करते रहें, परस्पर प्रेरणा प्राप्त करके साधना बढ़ाऐं। साधना न करने वाले या साधना की उपहास करने वालों का साथ कभी न करें।

१३. उचित आहार, निद्रा एवं ब्रह्मचर्य के पालन से शरीर को स्वस्थ एवं मन को सदैव प्रसन्न रखें। कामवासना को उत्तेजित करने वाले साधनों को त्याग दें।

१४. धर्मात्मा, दीन दुखियों की सेवा से साधना में सफलता मिलती है।

१५. मारण, मोहन उच्चाटन या किसी निन्दित कर्म के लिए साधना न करें। किसी के भी शत्रु, चुगलखोर, कलंक लगाने वाले या अनिष्ट चिन्तन करने वाले न बनें।

१६. साधक आजीविका के लिए आवश्यक परिश्रम तथा परोपकार में दिन का समय लगायें। यही द्विज जीवन का उत्तम कार्य एवं प्रभु प्राप्ति का उपाय है।

-सत्यपाल शर्मा
वैदिक पुरोहित, प्रवक्ता एवं भजनोदेशक
आर्य नगर, देहरी, जिला-मन्दसौर म.प्र.
चलभाष- ०८४३५७४६४७४

योगदर्शन का विभूतिपाद

– कृपालसिंह वर्मा
२५३, शिवलोक, कंकरखेड़ा
मेरठ (उ.प्र.)-९९२७८८७७८८

(१) **योगश्चित्तवृति निरोधः** ।। समाधि पाद-२
चित्तवृत्तियों के विरोध करने को योग कहते हैं।
(२) **तदा द्रष्टुः स्वरूपे अवस्थानम्** ।। समाधिपाद-३
उस समय दृष्टा आत्मा की परमात्मा के आनन्दस्वरूप में स्थिति होती है।

(३) **प्रमाणविपर्यविकल्पनिद्रास्मृतयः** ।। समाधिपाद-६ ।।
चित्तवृत्तियाँ निम्नलिखित पाँच प्रकार की होती हैं।

१. प्रमाण – ज्ञान प्राप्त करने की वृत्ति, जब हम प्रत्यक्ष अनुमान तथा आगम से ज्ञान प्राप्त करते हैं।
२. विपर्य – जब विपरीत ज्ञान में चित्त लगता है।
३. विकल्प – जब चित्त कल्पना करता है।
४. निद्रा – जब निद्रा आ जाती है तो चित्त प्राणों में स्थिर हो जाता है।
५. स्मृति – जब चित्त स्मृति में लगता है।

जब तक हमारा चित्त उपरोक्त पाँच वृत्तियों में लगा है तब तक वह वृत्तिस्वरूप होता है। उपरोक्त वृत्तियों के अभाव में हमारा चित्त आत्मस्वरूप होकर परमात्मा के आनन्द में स्थिर हो जाता है। यह योग है।

योग दो प्रकार का होता है – **१. सम्प्रज्ञात योग, २. असम्प्रज्ञात योग**

१. सम्प्रज्ञात योग :- सम्प्रज्ञात योग में चित्त की भूमि (अवस्था) एकाग्र होती है। चित्त की सभी वृत्तियों का लय हो जाता है। एक ध्येय स्वरूप वृत्ति को छोड़कर अर्थात् चित्त में केवल एक वृत्ति शेष होती है। धारणास्वरूप इस एक वृत्ति का ही ध्यान करता है और उस वृत्ति में ही पूर्ण रूप से मग्न होकर समाधि अवस्था को प्राप्त होता है। जब योगी किसी एक विषय को धारण कर, उसी का ध्यान करता है तथा उस विषय के साक्षात्कार में अपने को भी भूल जाता है तो उसके मन में उस विषय का विज्ञान प्रकट होता है। ऐसा ही योग दर्शन में कहा है–

त्रयमेकत्र संयमः ।। विभूतिपाद-४

धारणा, ध्यान, समाधि तीनों एक विषय में होना संयम कहा जाता है। जो विषय धारणा किया जाय उसी का ध्यान तथा उसी में, उसी के प्रत्यक्षीकरण में मग्नता रूपी समाधि होनी चाहिए–

तज्जयात् प्रज्ञालोकः ।। विभूतिपाद-५

संयम के सिद्ध होने पर योगी को विषय का विज्ञान का प्रकाश होता है तथा उस विज्ञान के बल पर ही वह अनेक प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त करता है जिनका वर्णन विभूतिपाद में किया गया है। योग के बल से योगी सिद्धि विशेष का विज्ञान प्राप्त करता है तथा उस विज्ञान के बल से उस सिद्धि को प्राप्त करता है। ऐसा नहीं समझना चाहिए कि समाधि के बल से योगी का शरीर रूई के समान हल्का होकर आकाश में उड़ने लगेगा क्योंकि समाधि चित्त का धर्म है शरीर का नहीं। जो परिवर्तन होता है वह चित्त में होगा शरीर में नहीं। समाधि में योगी को प्रत्येक सिद्धि का विज्ञान प्राप्त होता है। समाधि का फल प्रज्ञा आलोक अर्थात् ज्ञान का प्रकाश होता है शरीर का हल्का या भारी होना नहीं। योगी योग से विज्ञान को प्राप्त करता है तथा विज्ञान से सिद्धि को प्राप्त करता है।

इस प्रकार के योगियों को प्रकृतिलय योगी कहा जाता है क्योंकि वे प्रकृति के रहस्य जानने के लिए ही अपनी मानसिक शक्ति को एकाग्र करते हैं।

विभूतिपाद में वर्णित सभी विभूतियाँ प्रकृति के विज्ञान पर निर्भर करती हैं। किसी भी विभूति को मन तभी स्वीकार करता है, जब उसका विज्ञान समझ में आ जाये। अधिकतर विभूतियों के पीछे छिपा विज्ञान समझ में आ जाता है। महर्षि पतंजलि ने कहा है–

ते समाधावुपसर्गा व्युत्थाने सिद्धयः ।। विभूतिपाद-३७

ये सिद्धियाँ परमतत्व तक पहुँचने में तो विघ्न है। व्युत्थान अर्थात् सांसारिक दृष्टि से ही सिद्धियाँ हैं। ये उन योगियों के लिए सिद्धियाँ हैं जिनका योग केवल लौकिक सुखों तक सीमित है।

असम्प्रज्ञात योग :– जिनका लक्ष्य परम आनन्द को प्राप्त करना है उनके लिए कैवल्यवाद लिखा गया है। बिना संसार के त्याग के मोक्ष सुख संभव नहीं। संसार का त्याग ज्ञान से होता है क्योंकि ज्ञान से राग का नाश होता है जैसा कि व्यास जी ने कहा है– **ज्ञानस्य पराकाष्ठः वैराग्यम्।** जैसा कि अन्य दर्शन में कहा है– **वीतराग जन्म अदर्शनात्।**

रागरहित व्यक्ति का जन्म नहीं देखा जाता। राग ही संसार में बांधने वाला है। राग का नाश केवल ज्ञान से होता है, जैसा कि महर्षि कपिल ने कहा है– **''ज्ञानात् मुक्ति, बन्ध विपर्यात् ।''** ज्ञान से मुक्ति तथा विपरीत ज्ञान से बन्धन होता है। इस रागनाशक ज्ञान का हृदय में प्रकाश केवल परमात्मा की उपासना से ही होता है, जिसमें संसार के बीज राग का नाश होता है उसे निर्बीज समाधि कहते हैं। जिसमें योगी केवल परम आनन्द का आस्वादन करता है तथा अन्त में राग समाप्त होने पर मोक्ष सुख को भोगता है। ●

पृ. २१ का शेष **सत्यार्थ प्रकाश का सप्तम समुल्लास....**

ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को ग्रहण किया। ये चारों अन्य जीवों से अधिक पवित्र आत्मा थे। अतः पवित्र विद्या का प्रकाश उन्हीं में किया। वेदों का ज्ञान संस्कृत भाषा में ही दिया। वेदों में ईश्वर के गुण, कर्म स्वभाव निहित हैं अतः वह ईश्वरकृत है। चारों ऋषियों को ईश्वर ने संस्कृत का ज्ञान दिया। ऋक्., यजु., साम. और अथर्व. मंत्र संहिताओं को वेद कहते हैं। वेद में किसी का इतिहास नहीं किन्तु विशेष जिस-जिस शब्द से विद्या का बोध होवे उस-उस शब्द का प्रयोग किया है।

वेद की एक हजार एक सौ सत्ताईस शाखाऐं हैं जैसे माता-पिता अपनी संतानों पर कृपा दृष्टि कर उन्नति चाहते हैं वैसे ही परमात्मा ने सब मनुष्यों पर कृपा करके वेदों को प्रकाशित किया है। वेद नित्य है क्योंकि ईश्वर के नित्य होने से उसके ज्ञानादिगुण भी नित्य हैं। वेद पुस्तक नित्य नहीं है परन्तु वेदों में शब्द अर्थ और संबंध नित्य है। ज्ञान ज्ञेय के बिना नहीं होता। गायत्री छन्द का निर्माण सर्वज्ञ के बिना संभव नहीं है। वेद को पढ़ने के बिना पश्चात् व्याकरण, निरूक्त और छन्द आदि ग्रन्थ ऋषि मुनियों ने विद्याओं के प्रकाश के लिए किये हैं। जो परमात्मा वेदों का प्रकाश न करे तो कोई कुछ न बना सके इसलिए वेद परमेश्वरोक्त है। इन्हीं के अनुसार सबको चलना चाहिए। ●

सृष्टि का सही गणनाक्रम

-आचार्य दार्शनेय लोकेश
सी-२७६, गामा-१, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
चलभाष-०९४१२३५४०३६

महोदय,

आर्यावर्त केसरी के वर्ष गाँठ स्मारिका अंक (पृ.१९) में वैद्य श्री आनन्द प्रकाश आर्य का **'सृष्टि का सही गणनाक्रम'** नामक लेख पढ़कर आश्चर्य हुआ कि आर्य समाज के लोग, इस विषय से जुड़े भ्रम का, आखिर कब तक दामन पकड़े हुए रहेंगे। मैं, यहाँ विषयांतर्गत कुछ तथ्यों को उजागर करना चाहता हूँ।

सर्वप्रथम श्री वैद्य के लेख में आई हुई तीन विषम उक्तियों पर चर्चा कर ली जाये। पहली बात संकल्प मंत्र से संदर्भित -

१. ''..... शुभ कार्य अवसर पर पुरोहित कर्म कर्ता से उच्चारित कराता आ रहा है......''

वस्तुतः ऐसा नहीं है। ये कहना स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (ऋ.भा.भू.) में दिये कथन से ठीक उल्टा कथन है। समाज को भ्रामक दिशा दर्शाता है।

स्वामी जी के अनुसार प्रत्येक वैदिक व्यक्ति के लिए संकल्प पाठ का पहला उद्देश्य **'कुतो हि अयं नित्यम्** अर्थात् आज का दिन कौन है' इसे ठीक-ठीक जानने की, ज्योतिष शास्त्र सम्मत, नित्यचर्या है। किसी शुभ कार्य या कर्मकाण्ड की या किसी परिवार या संगठन की नहीं अपितु प्रत्येक व्यक्ति की दैनिक चर्या है यह संकल्प पाठ। अगर आर्यजन ऐसा नहीं कर रहे हैं तो ये उनका पतन हैं, अनार्यत्व है।

२. '..... ब्रह्म दिन का समय एक हजार चतुर्युगियों में तथा १४ मन्वन्तर के अन्तर्गत विभक्त है......'

वास्तव में ऐसा भी नहीं है। १००० चतुर्युगी केवल १४ मन्वन्तर में पूर्ण विभाजित हो ही नहीं सकती है। सत्य ये है कि १४ मन्वन्तर और १५ सन्धियां अर्थात् १४×७१+१५×१७२८०० बराबर होता है एक हजार चतुर्युगियों (१०००×४३२००००) के। इसी बात को सूर्य सिद्धांत इस प्रकार विवेचित करता है -

ससन्थयस्ते मनवः कल्पे ज्ञेयाश्चतुर्दश।
कृतप्रमाणः कल्पादौ सन्धिः पञ्चदशः स्मृतः।।

३. .... शेष ६ का आधा समय सृष्टि के निर्माण तथा खण्डित होने में लगता है.....।

पहली बात तो यह है कि ऐसा कहाँ और किस शास्त्र में लिखा है और उस लिखे का सन्दर्भ श्री वैद्य ने क्यों नहीं दिया है? वास्तव में ऐसा कोई सन्दर्भ है भी नहीं। उनको समझ लेना होगा कि सृष्टि निर्माण लगे समय के बाद जब सब कुछ प्रचलन में आ चुका होगा तो उतना समय छोड़कर क्या सृष्ट्यादि (सृष्टि का आरम्भ) का समय तब माना जावेगा? कुछ लोग तो और भी आगे बढ़कर, यहाँ तक कहते हैं कि महर्षि जी ने जो 'सृष्ट्यादि कहा है वह उन्होंने ''मानव सृष्ट्यादि के लिए कहा है। अगर स्वामी जी को यही अभिप्रेत होता तो वे मानव सृष्ट्यादि ही लिखते, उसके स्थान पर सृष्ट्यादि क्यों लिखते? एक अन्य सज्जन कहतें हैं कि वेदोत्पत्ति मनुष्य उत्पत्ति के लिए ही है। जब मनुष्य हो चुका होगा तब, वही तो कालगणना को शुद्ध करेगा। उनकी दृष्टि में मानव उत्पत्ति से पूर्व जो जल, थल, पवन, प्रकाशादि रहा होगा वह जैसे सृष्टि के आवश्यक अंग ही नहीं थे।

अस्तु मेरे लिए अतीव आवश्यक है कि मैं सर्वदा स्मरणीय श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के कहे कुछ कथनों (ऋ.भा.भू.) को आर्यावर्त केसरी के पाठकों की जानकारी या सूचना हेतु चित्रित करूँ। सम्भव है कि समाज में एक सद्बुद्धि का विकास हो पाये।

कथन स्वामी जी के -

१. जैसे मनुष्यों के शरीर से श्वास बाहर आकर फिर भीतर को जाता है इसी प्रकार सृष्टि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता है, और प्रलय में संसार में वेद नहीं रहते परन्तु उसके ज्ञान के भीतर वे (अर्थात् ईश्वर में वेद) सदा बने रहते हैं, बीजांकुरवत्।

कोष्ठ में लिखे चार शब्द मेरे अपने हैं।

२. वेद ईश्वर के ज्ञान में सर्वदा बने रहते हैं। उनका नाश कभी नहीं होता क्योंकि वह ईश्वर की विद्या है इससे उसको नित्य ही जानना।

३. सृष्टि के आदि में (कृपया इन चार शब्दों पर विशेष ध्यान दें) भी परमात्मा वेदों का उपदेश नहीं करता तो आज पर्यन्त किसी मनुष्य को धर्मादि पदार्थों की यथार्थ विद्या नहीं होती।

४. जानना चाहिए कि उन्हीं चार पुरुषों (अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा) को ऐसा पूर्व पुण्य था कि उनके हृदय में वेदों का प्रकाश किया है।

५. जिसने ब्रह्मा को उत्पन्न किया और ब्रह्मादि को सृष्टि के आदि में अग्नि आदि के द्वारा वेदों का उपदेश भी किया है उसी परमेश्वर की शरण को हम लोग प्राप्त होते हैं।

६. पूर्वोक्त अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ब्रह्मा ने वेदों को पढ़ा था।

७. एक हजार चतुर्युगियों की ब्राह्म दिन संज्ञा रखी है और उतनी ही चतुर्युगियों की रात्रि संज्ञा जानना चाहिए। सो सृष्टि की उत्पत्ति करके हजार चतुर्युगी पर्यन्त ईश्वर इसको बना रखता है, इसी का नाम ब्राह्म दिन रखा है। (यह **'ब्रह्मदिन'** शब्द विशेष ध्यातव्य है। इसी की कुल अवधि १०००×४३२०००० संवत् है और यह भी कि इसके अन्तर्गत किसी भी काल खण्ड में भुक्त और भोग्य वर्षों का कुल योग हमेशा एक हजार चतुर्युगी के बराबर होगा।)

८. क्योंकि जैसा प्रथम लिख आयें हैं जब तक हजार चतुर्युगी व्यतीत न हो चुकेंगी तब तक ईश्वरोक्त वेद की पुस्तक, यह जगत और हम मनुष्य लोग भी ईश्वर के अनुग्रह से सदा वर्तमान रहेंगे। (यहाँ भी स्वामी जी के अनुसार सिद्धांततः भुक्त भोग्य वर्षमान का कुल योग एक हजार चतुर्युगी के बराबर ही होना अति आवश्यक है।)

आशा है उपरोक्त सभी तथ्यों से पाठक वृन्द जिनमें श्री वैद्य जी भी शामिल हैं, सृष्टि कालगणना के यथार्थत्व को ठीक-ठीक समझ पायेंगे। इस गणना का ठीक-ठीक हीसाब मैंने अपने वैदिक पंचांग **"मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक''** सं. २०७१ के पृष्ठ १८ पर स्पष्ट किया है। सभी को चाहिए कि इस पंचांग को अवश्य ही प्राप्त करें और कालगणना ही नहीं विविध पंचांगीय तथ्यों को ठीक से समझ लेने का प्रयास करें। अब तक सृष्ट्यादि से १९७२९४९११५ वर्ष बीत चुके हैं। अस्तु ये ही गतवर्ष हुए। इस ब्राह्म दिन के २३४७०५०८८५ वर्ष भोग्य वर्ष कहे जायेंगे। सम्प्रति सृष्ट्यादि से १९७२९४९११६वां संवत् चल रहा है। ●

विश्वकर्मा कौन ?

– जगदीश प्रसाद शर्मा (भा.व.से),
अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक-म.प्र.शासन
उपाध्यक्ष-डी.ए.व्ही. शिक्षा समिति, भोपाल
उप प्रधान-आर्य समाज, टी.टी. नगर, भोपाल
योग प्रशिक्षक-पतंजलि योग समिति,भोपाल
दूरभाष – ०९४२५०२९९९८

ऋग्वेद के मन्त्र-१०/८१/२,५,६,७ और १०/८२/२, यजुर्वेद के मन्त्र-१७/१८,२१,२२,२६ और अथर्ववेद के मन्त्र-२/३५/१ से ५ इस तरह कुल १४ मन्त्रों में लिखे अनुसार इस सृष्टि का निर्माण करने वाले शिल्पकार ईश्वर को विश्वकर्मा कहते हैं। विश्वकर्मा ऋषि भी हुए हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल, सूक्त-८१ और ८२ के सभी १४ मन्त्र एवं यजुर्वेद के अध्याय-१७, मन्त्र-१७ से ३२ के सभी १६ मन्त्र, इस तरह इन ३० मन्त्रों के ऋषि और देवता दोनों ही विश्वकर्मा हैं। यह सम्मान बृहस्पति और अग्नि ऋषियों के अतिरिक्त विश्वकर्मा ऋषि को ही प्राप्त है। इस प्रकार विश्वकर्मा ऋषि वैदिक भारत के तीन उत्कृष्ट एवं सर्वश्रेष्ठ ऋषियों में से एक हैं। अथर्ववेद के उपवेद अर्थवेद की रचना करने के फलस्वरूप ऋषि विश्वकर्मा आदि शिल्पाचार्य भी हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी संस्कारविधि पुस्तक के वेदारम्भ संस्कार अध्याय के अन्त में और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पुस्तक के '**ग्रन्थ-प्रामाण्याप्रामाण्यविषयः**' अध्याय के प्रारम्भ में अर्थवेद उपवेद को शिल्प-शास्त्र कहा है और इसमें विश्वकर्मा, त्वष्टा, दैवज्ञ और मय कृत संहिता ग्रन्थ सम्मिलित होना बताया है।

ऐसे श्रेष्ठतम एवं उत्कृष्ट ऋषि विश्वकर्मा के वंशज वर्तमान युग में विश्वकर्मा उपाधि/उपनाम लगाते हैं, जो पूर्वोक्तानुसार वर्तमान भारत में प्रचलित जन्मना जाति प्रथा के आधार पर सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण ही हैं। शिल्पज्ञ विश्वकर्मा ब्राह्मणों में विश्वकर्मा उपनाम के अतिरिक्त धीमान, खाती, पांचाल, बढ़ई, सुतार, सुथार, तरखाण, तरखान, शर्मा आदि कई और उपनाम भी प्रचलित हैं। इन उपनामों में कुछ की व्याख्या निम्नानुसार है:-

(क) धीमान शब्द धीवान का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ है तीक्ष्ण बुद्धि वाले (अथर्ववेद-३/५/६)। धीवान और धीमान शब्दों में धी का अर्थ है बुद्धि।

(ख) 'पांचाल' शब्द का अर्थ यह है कि उन्हें वैदिक काल में लोहा, काष्ठ, ताम्बा, पाषाण तथा सोने से निर्माण करने की पाँचों शिल्प-विद्यायें आती थी।

(ग) 'खाती' शब्द ख्याति का अपभ्रंश है और ख्याति का अर्थ है-प्रसिद्धि। प्रसिद्धि केवल विद्वान् लोगों को ही प्राप्त होती है। वैदिक काल में चारों वेदों और उपवेदों को जानने वाले सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण लोग ही शिल्पविद्या में निपुणता पाकर ख्याति अर्जित करते थे। ऐसे ख्याति प्राप्त शिल्पज्ञों को कालान्तर में लोगों ने खाती कहना प्रारम्भ कर दिया।

(घ) बढ़ई शब्द बड़ाई शब्द का अपभ्रंश है। बड़ाई श्रेष्ठ, बुद्धिमान और विद्वान् स्त्री-पुरूषों की ही होती है। वैदिक काल में सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण रहे विश्वकर्मावंशी शिल्पकारों की सर्वत्र (चारों दिशाओं में) बड़ाई होती थी। ऐसे बड़ाई प्राप्त शिल्पज्ञों को लोग कालान्तर में बढ़ई कहने लगे।

(ङ) सुतार और सुथार शब्द सूत्रधार के अपभ्रंश हैं। शब्दकोश के अनुसार सूत्रधार का अर्थ है-रंगमंच का प्रबंधक, नाट्यसूचक, बीजदर्शक, धागे को पकड़ने वाला, शिल्पी और बढ़ई। इसमें 'धागे को पकड़ने वाला' जो अर्थ बताया है वह व्यवहारिक नहीं है क्योंकि किसी अनाड़ी या अज्ञानी को धागा पकड़ा दो तो वह सूत्रधार नहीं हो जाता। इसके बदले सूत्रधार का वास्तविक अर्थ 'सूत्र/धागे/सूत की दिशा/धार/सीध में काम करने वाला व्यवहारिक ज्यामिति/रेखागणित (Geometry) का ज्ञाता' होना उचित है। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि ज्यामिति/रेखा गणित का ज्ञान विश्वकर्मा वंशियों की ही देन है। सूत्र को अंग्रेजी में Formula भी कहते हैं। गणित और विज्ञान में विभिन्न विषयों पर गणितज्ञों और वैज्ञानिकों द्वारा खोजे गये भिन्न-भिन्न सूत्र (Fourmula) होते हैं। अतः सूत्रधार का तात्पर्य सूत्र के अविष्कारक से भी होता है। सूत्र/सूत से निशान लगाकर उसकी सीध में काम करने के कारण ही सूत्रधारका अर्थ शिल्पी और बढ़ई भी है।

(च) अथर्ववेद में तक्षन् शब्द का अर्थ काष्ठ को काटने वाला है। अतः पंजाब में तरखान/ तरखाण शब्द तक्षन् शब्द के ही अपभ्रंश हैं। इन शब्दों में तर अर्थात् तार का अर्थ सूत्र/सूत होता है। अतः तरखान का अर्थ सूत की सीध में लकड़ी को काटना होने से सुतार/सुथार के अर्थ से मेल खाता है।

(छ) कुछ विश्वकर्मा ब्राह्मण अपने नाम के साथ शर्मा उपनाम (उपाधि) भी लगाते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखी गई 'संस्कार विधि' पुस्तक के 'नामकरण संस्कार' अध्याय में ब्राह्मण वर्ण के लिये शर्मा शब्द लगाकर देवशर्मा जैसे नाम रखने हेतु लिखा है। शर्मा शब्द शर्मन् शब्द से बना है, जिसका तात्पर्य है-कल्याण, आनन्द, हर्ष, घर, आश्रय, शरण, रक्षा और आधार। विश्वकर्मा ब्राह्मण ही कलम, दवात, तलवार, हल, बैलगाड़ी, ठेला, फावड़ा, तसला, खड्डी, पहिया, वाहन,

शिल्पी ब्राह्मण – पुस्तक एवं लेखक परिचय

आर्य समाजी संन्यासी स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती ने सन् १९४१ में एक पुस्तक लिखी थी-'**शिल्पी ब्राह्मण**'।

कुरैव, जिला-बुलंदशहर (उ.प्र.) के जाट परिवार में जन्में रामरूप ने आर्य समाजी संन्यासी रामेश्वरानन्द बनकर १७ अप्रैल १९३९ को घरोंडा, जिला-करनाल (हरियाणा) में गुरूकुल की स्थापना की।

सन् १९६२ में करनाल संसदीय क्षेत्र से सांसद बने स्वामी जी ने अनेक पुस्तकों का लेखन किया।

संकलन-आचार्य राम गोपाल शास्त्री
फतेहपुर, सीकर (राज.)
चलभाष-९८८७३९३७१३, ७७९०८०३८०४

वही विश्वकर्मा परमात्मा एक ही अद्वितीय है। उसी से जब डरेगा तब धर्मात्मा होगा अन्यथा कभी नहीं।

रापी, सूई आदि का निर्माण करके समाज के सभी वर्णों के लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने में सहायक होकर उनका कल्याण करके उन्हें आनन्दित एवं हर्षित करते हैं। घर बनाकर उन्हें आश्रय एवं शरण स्थल उपलब्ध कराते हैं तथा तलवार आदि हथियारों का निर्माण करके उनकी, समाज की और देश की रक्षा करने में भी सहायक होते हैं। इस तरह पूरे समाज के कल्याण हेतु विश्वकर्मावंशी ही आधार स्तम्भ हैं। अत: विश्वकर्मा ब्राह्मणों के लिये शर्मा उपाधि (उपनाम) का उपयोग करना उनके गुण, कर्म और स्वभाव के अनुरूप होने के कारण युक्तिसंगत और सही है। यजुर्वेद के मन्त्र ४/१० में शिल्पक्रिया को यज्ञ कहा गया है और शर्म शब्द के अर्थ को शिल्पक्रिया द्वारा सुख उपलब्ध कराने से जोड़ा गया है। इससे स्पष्ट है कि शिल्पक्रिया विकसित करके समाज को सुख पहुँचाने वाले कारीगरों को अपने नाम के साथ शर्मा उपनाम लगाने का अधिकार इस वेदमन्त्र के माध्यम से ईश्वर द्वारा दिया गया है।

(ज) उपरोक्त मुख्य उपनामों के अतिरिक्त कुछ विश्वकर्मा ब्राह्मण अपने नाम के साथ उपनाम के रूप में जांगिड, जाँगिड़, जांगड़ा, झा, ओझा, मैथिल, रामगढ़िया, मालविया, स्वर्णकार, सुनार, सोनी, शिल्पी, मेवाड़ा, दक्षिण भारत में आचार्य आदि भी लिखते हैं। कुछ लोग ऋषिगोत्र, प्रवर और उपाधि तो बहुत से लोग उत्पत्ति वाले स्थान (गाँव और शहर) के नाम के अनुरूप शासन लिखते हैं, जैसे इन्दौर से निकले लोग इन्दुरिया तथा इन्दौरिया लिखते हैं, दोसोद से निकले दोसोदिया लिखते हैं आदि-आदि।

वेद, उपनिषद् और मनुस्मृति जैसे आर्ष ग्रन्थों के प्रमाणों के सामने अन्य प्रमाण अतिगौण (बौने एवं छोटे) होते हैं, फिर भी पुष्टि के लिये वर्तमान में प्रचलित अन्य प्रमाण देना भी उचित एवं युक्तिसंगत होगा। शिल्पकारों के ब्राह्मण होने की पुष्टि में अन्य तथ्य एवं प्रमाण निम्नानुसार है:-

(१) विश्वकर्मा ब्राह्मणों के ऋषि गोत्र, प्रवर और उपाधि अन्य ब्राह्मणों के अनुरूप ही होते हैं। उदाहरणार्थ विश्वकर्मा ब्राह्मणों में जांगिड ब्राह्मणों के १८ गोत्र हैं- १. भारद्वाज, २. उपमन्यु, ३. वशिष्ठ, ४. कश्यप, ५. मुद्गल, ६. जातूकर्ण्य, ७. शांडिल्य, ८. कौडिन्य, ९. गौतम, १०. अघमर्षण, ११. वात्स्य, १२. वामदेव, १३. ऋक्ष, १४. लौगाक्षि, १५. वत्स, १६. गविष्ठर, १७. विद् और १८. दीर्घतमा। (स्त्रोत-अंगिरा प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित और गुरूदेव श्री जयकृष्ण मणिठिया द्वारा लिखित **'जांगिड ब्राह्मण गोत्रावली'**।) धीमान, पांचाल आदि अन्य विश्वकर्मा ब्राह्मणों और गैर विश्वकर्मा ब्राह्मणों के ऋषि गोत्र भी इसी तरह होते हैं, जिनकी संख्या कहीं कम है तो कहीं ज्यादा।

(२) बौद्ध धर्म के फैलाव के समय भारत में वैदिक धर्म की पुन: स्थापना करने वाले जगद्गुरू आदि शंकराचार्य ने पैदल चलकर देश के चारों कोनों में चार मठ (पुरी-ओडिसा में बंगाल की खाड़ी के तट पर **गोवर्धन मठ**, कर्नाटक में तुंगभद्रा नदी के तट पर **शृगेरी मठ**-गुजरात में गोमती नदी के तट पर **कालिका मठ** और हिमालय पर्वत की गोद में बद्रीकाश्रम-उत्तरांचल में **ज्योतिर मठ**) स्थापित किये। जब वे दक्षिण भारत में मछलीपट्टम पहुँचे तो वहाँ के विश्वकर्मा ब्राह्मणों ने उनसे जगद्गुरू होने का प्रमाण मांगा क्योंकि (चारों वेद और चारों उपवेद पढ़े ऋषियों के वंशज होने के कारण) जगद्गुरू की उपाधि का अधिकार केवल विश्वकर्मा ब्राह्मणों को ही होता है। इस पर आदि शंकराचार्य ने उत्तर दिया:-

आचार्य: शंकरो नाम त्वष्टापुत्रो न संशय:।
विप्रकुले गुरूदीक्षा विश्वकर्मान्नतु: ब्राह्मण:।।

अर्थात् :-''मेरा नाम शंकराचार्य है। मैं त्वष्टा वंश में जन्मा हूँ तथा मैं विश्वकर्मा वंशी ब्राह्मण हूँ।'' आदि शंकराचार्य ने विश्वकर्मा ब्राह्मण विश्वरूपाचार्य को शृंगेरी मठ का प्रथम शृंगेरीपीठाधीश्वर बनाया। इसके बाद यहाँ के दूसरे आचार्य पृथ्वीधराचार्य भी विश्वकर्मा ब्राह्मण ही थे। जगद्गुरू आदि-शंकराचार्य के बाद शिवपन्थ के नियुक्त प्रथम ७३ प्रमुख आचार्य धर्मोपदेशकों में से ५९ आचार्य विश्वकर्मा ब्राह्मण ही थे तथा १४ आचार्य अन्य ब्राह्मण हुये हैं। (स्त्रोत-अंगिरा प्रकाशन, दिल्ली द्वारा वर्ष १९७५ में प्रकाशित और आनन्दस्वरूप भारद्वाज द्वारा लिखित 'जांगिड ब्राह्मण निर्देशिका'।)

इससे स्पष्ट है कि विश्वकर्मा ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण होते हैं।

(३) विश्वकर्मा ब्राह्मणों द्वारा प्राचीन भारत देश में निर्मित वास्तुकला (Architecture) के ऐसे बेहतरीन नमूने हैं, जिन्हें देखकर और सुनकर लोग दाँतों तले अँगुली दबा लेते हैं। **'लखनऊ के नवाब के दरबारी हॉल'** में एक माचिस की तिल्ली जलाने की आवाज हॉल के किसी भी कोने में सुन सकते हैं। **'गोलकुण्डा (हैदराबाद) किले'** के दरवाजे पर बजाई गई ताली की आवाज ऊपर किले पर सुनाई देती है। आधुनिक अभियांत्रिकी (Engineering) पढ़ें अभियंताओं ने अभी तक ऐसा एक भी भवन नहीं बनाया है। प्राचीन **'सोमनाथ मन्दिर'** में हवा में लटकी हुई मूर्ति से तत्समय भारत में चुम्बकीय ज्ञान का होना सिद्ध होता है। दिल्ली में बनी लोहे की लाट को आज तक जंग नहीं लगना विश्वकर्मा वंशियों के उत्कृष्ट धातु-ज्ञान का द्योतक है। तमिलनाडु में मदुराई शहर का **'मीनाक्षी मन्दिर**, उत्तर प्रदेश में आगरा शहर में स्थित **'ताजमहल'**, दिल्ली की **'कुतुब मीनार'**, कर्नाटक प्रान्त के मैसूर शहर का **'मैसूर पैलेस'** एवं जयपुर (राजस्थान) का **'हवा महल'**, उनमें बनी उत्कृष्ट तस्वीरें (Paintings) और **'जयगढ़'** किले में पहियों पर रखी दुनियाँ की सबसे भारी तोप **'जयबाण'** तथा नेपाल देश के काठमाण्डौ एवं जनकपुर शहरों में स्थित विश्व धरोहर (World Heritage) **'हनुमान ढोका दरबार एवं जानकी मन्दिर'** उत्कृष्ट वास्तुकला के नमूने हैं। माउन्टआबू (राजस्थान) में ११वीं सदी से १५वीं सदी के बीच संगमरमर से बनाया गया **देलवाड़ा जैन मन्दिर** तो सचमुच में विचित्र लोक ही है। इस मन्दिर की उत्कृष्ट कारीगरी के सामने नेपाल के हनुमान ढोका दरबार एवं जानकी मन्दिर की कारीगरी भी फीकी पड़ जाती है। इन सबके निर्माण में उच्च कोटि का मस्तिष्क चाहिये, जो ब्राह्मण वर्ण के लोगों में ही होता है। कोई शूद्र अथवा मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा करने की असत्य घोषणा करने वाला पौराणिक पुजारी इन्हें नहीं बना सकता। कला के क्षेत्र में अनेक विश्वकर्मा ब्राह्मणों को राष्ट्रपति पुरस्कार मिल चुके हैं लेकिन मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठित कर देने की झूठी घोषणा करने और धरती में गड़े हुये सोने का खजाना मिलने की मिथ्या अफवाह फैलाने वाले किसी भी पुजारी को आज तक राष्ट्रपति पुरस्कार नहीं मिला है और मिल भी नहीं सकता क्योंकि झूठे लोग ऐसे पुरस्कार पाने के हकदार नहीं होते। किसी देश में की गई खुदाई में मिले भवनों और अन्य वस्तुओं की वास्तुकला से वहाँ की प्राचीन सभ्यता की जानकारी प्राप्त होती है। प्राचीन काल में भवन और अन्य वस्तुओं का निर्माण विश्वकर्मा-

वंशी विद्वान् ही करते थे, अतः विभिन्न सभ्यताओं के प्रवर्तक विश्वकर्मा ऋषि और उनके वंशज ही हैं। महाभारत के युद्ध के बाद दुनियाँ में सबसे पहले अग्निबाण (Rocket), जो प्रक्षेपणास्त्र (Missile) का ही लघुरूप है, का उपयोग भारतीय राजा टीपू सुल्तान की सेना ने अंग्रेजों के विरूद्ध लड़े गये युद्ध में किया था। इसका निर्माण करने वाले भी विश्वकर्मा ब्राह्मण ही थे।

(४) राय साहब लाला गोपालदास बी.ए. आनरेरी मजिस्ट्रेट, दर्जा अव्वल, सूबा दिल्ली के न्यायालय में श्री दीनदयाल शर्मा, मंत्री, जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली द्वारा श्री हनुमान दत्त जोशी, एडीटर, प्रिन्टर और पब्लिशर, **'मारवाड़ी ब्राह्मण'** साप्ताहिक पत्रिका, कलकत्ता के विरूद्ध भारतीय दण्ड संहिता की धारा ५०० एवं ५०१ के अन्तर्गत दायर फौजदारी मुकदमा क्रमांक १२०/२-१९२८ में विद्वान् न्यायाधीश द्वारा दिनांक १२.०२.१९३० को दिये गये फैसले के अनुसार जांगिड (बढ़ईगिरी आदि का काम करने वाले शिल्पकार) लोग ब्राह्मण ही हैं, जिन्हें शूद्र बताने के जुर्म में अपराधी व्यक्ति को दो अपराधों के लिये १००-१०० रूपये का जुर्माना लगाया गया तथा जुर्माना अदा न करने पर प्रत्येक अपराध के लिये २-२ माह की साधारण कारावास की सजा सुनाई गई। (स्त्रोत-अंगिरा प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित **'देहली अदालत का फैसला'**।) एक अन्य मुकदमे में पण्डित मोहनलाल बल्द छज्जुराम गुड़गावन, नई दिल्ली द्वारा राव सुमन सिंह यदु, दिल्ली निवासी के विरूद्ध अतिरिक्त जज के दिल्ली स्थित न्यायालय में दायर वाद क्रमांक ३०६४/१९३५, दिनांक २०/११/१९३५ में दिनांक २९ जनवरी १९३६ को दिये गये फैसले के अनुसार जांगिड ब्राह्मण शिल्पकार/ कारीगर (Artisan) होते हुये भी ब्राह्मण है। (स्त्रोत-डॉ. विद्या प्रकाश असीम द्वारा लिखित पुस्तक 'जांगिड ब्राह्मण और गोत्रावली')

(५) मनु-स्मृति के श्लोक क्रमांक-२/३ से स्पष्ट है कि ब्राह्मण का सबसे महत्वपूर्ण गुण सत्यता (सत्यभाषणादि नियम पालना, सत्य का ग्रहण करना, असत्य का त्याग और सत्य विद्याओं का दान देना) है। तैत्तिरीय आरण्यक उपनिषद् के मन्त्र क्रमांक-७/९/१ के अनुसार धर्म के बारह लक्षणों में से सत्य दूसरा लक्षण है। मनुस्मृति के श्लोक क्रमांक-६/९२ में बताये गये धर्म के १० लक्षणों में से ९वाँ लक्षण 'सत्यता' है। जब कोई विश्वकर्मा ब्राह्मण उत्कृष्ट कला और विज्ञान का प्रदर्शन करते हुये लोहे, लकड़ी, ताँबे, पत्थर अथवा सोने की श्रेष्ठ मूर्ति बनाता है तो उस श्रेष्ठ कलाकृति को देखकर लोगों को ऐसा लगता है कि वह मूर्ति अभी बोल उठेगी अर्थात् उस मूर्ति में प्राण न होने पर भी लोगों को उसमें जान होने अर्थात् उसके जीवित होने का भ्रम होता है और उनके मुँह से शब्द निकल जाते हैं-**''इस मूर्ति को बनाने वाले शिल्पकार ने तो इसमें प्राण डाल दिये हैं, लगता है यह अभी बोल उठेगी।''** जबकि शिल्पकार अपने मुँह से यह कभी नहीं कहता कि उसने मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठित कर दिये हैं अर्थात् जान डाल दी है। दूसरी तरफ जब इस मूर्ति को किसी मन्दिर में स्थापित किया जाता है तो पौराणिक कर्मकाण्डी पुजारी किसी निश्चित दिन संस्कृत के कुछ श्लोक और वेदमन्त्रों का उच्चारण और हवन-पूजन करने के पश्चात् मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठित कर दिये जाने की घोषणा करता है। इस घोषणा के पश्चात् ही लोगों को उस मूर्ति की पूजा-अर्चना करने की अनुमति दी जाती है। प्राण-प्रतिष्ठा का सीधा-सरल अर्थ है कि मूर्ति में जान आ जाना। अतः प्राण-प्रतिष्ठित कर दिये जाने की घोषणा के बाद उस मूर्ति के द्वारा मनुष्यों की तरह बोलना, हँसना-रोना, गुदगुदी करने पर उछलना, भूख और प्यास लगने पर भोजन और पानी का ग्रहण करना, मल-मूत्र का त्याग करना आदि कर्म करने चाहियें। आज तक दुनियाँ के किसी भी कोने में प्राण-प्रतिष्ठित किसी भी मूर्ति ने ऐसा नहीं किया है। सन् १९९० के दशक में भारत में मूर्तियों द्वारा दूध पीने की अफवाहें अवश्य फैलाई जा चुकी हैं, जिसके फलस्वरूप पढ़े-लिखे लोगों ने भी हजारों टन दूध व्यर्थ ही बहा दिया था। अतः स्पष्ट है कि मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठित कर दिये जाने की घोषणा करने वाले पुजारी का कथन झूठा होता है। अब ब्राह्मण और धर्म के पूर्वोक्त सबसे महत्वपूर्ण गुण एवं लक्षण **'सत्यता'** को ध्यान में रखते हुये पाठक स्वयं ही तय कर लें कि मूर्ति बनाने वाले शिल्पकार और मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठित कर देने की झूठी घोषणा करने वाले पौराणिक कर्मकाण्डी पुजारी में से कौन श्रेष्ठ ब्राह्मण है। स्पष्ट है कि आदरणीय एवं सम्मानित व्यक्ति मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठित कर देने की झूठी घोषणा करने वाला पुजारी नहीं बल्कि सत्य कर्म करने वाला मूर्तिकार अर्थात् शिल्पकार है। असलियत तो यह है कि जिस तरह इस सृष्टि का निर्माण करने वाला ईश्वर सृष्टि से बड़ा है और पूजनीय है, उसी तरह मूर्ति को बनाने वाला मूर्तिकार भी उसके द्वारा बनाई गई मूर्ति से निश्चित ही बड़ा भी है और आदरणीय एवं सम्माननीय भी है। इसीलिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के एकादशसमुलास में लिखा है-**''देव मानो तो उन्हीं कारीगरों को मानो कि जिन शिल्पियों ने मन्दिर बनाया।''**

प्रवेश सूचना

आर्षकन्या गुरूकुल, दाधिया, राजस्थान राज्य के अलवर जिले में साबी नदी के किनारे स्थित एक रमणीक संस्था है। यह गुरूकुल दिल्ली से १०० किलोमीटर एवं जयपुर से १५० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः आपसे निवेदन है कि आप गुरूकुल में अधिक से अधिक संख्या में कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

गुरूकुल की विशेषताए

१. कक्षा ६ से ९ तक तथा ११वीं व शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रवेश प्रारम्भ।
२. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त।
३. विस्तृत भू-भाग एवं आधुनिक सुविधायुक्त विशाल भवन।
४. पोष्टिक भोजन।
५. कम्प्यूटर शिक्षा।
६. योग्य एवं अनुभवी आचार्यगण।
७. शान्त सुरम्य एवं एकान्त वातावरण।
८. तरण ताल।
९. २४ घंटे बिजली हेतु सौर ऊर्जा संयंत्र।

सम्पर्क करें

आचार्या प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरूकुल, दाधिया
जिला अलवर, राजस्थान-३०१४०१
दूरभाष-०१४९५-२७०५०३, चलभाष-०९४१६७४७३०८

समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए - एक अमूल्य चिन्तन

-गंगाशरण आर्य, चरित्र निर्माण मण्डल
ग्राम-शाहबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-६१
चलभाष-९८७१६४४१९५

वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से नित्य एवं स्वतः प्रमाण है। जिनकी उत्पत्ति सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वर मानव मात्र के कल्याण के लिए करता है। जब तक मानव समाज में इनका समान रूप से पठन्-पाठन तथा तदानुकूल आचरण बना रहता है, तब तक मानव समाज भिन्न-भिन्न शाखाओं में न बटकर एक सूत्र में बंधा हुआ प्रेम पूर्वक अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है। जैसे दिन में किसी को दीपक जलाने की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु रात्रि होने पर भिन्न-भिन्न दीपकों की भरमार होने लगती है, इसी प्रकार से जब वेदों के पठन्-पाठन होने की अपेक्षा मानवकृत ग्रन्थों का पठन्-पाठन शुरू हो जाता है, तब मानव समाज में बुद्धि भ्रम होकर अज्ञान रूपी रात्रि छाने लगती है जो कि धीरे-धीरे मानव समाज में साम्प्रदायिक दीपक जलवाकर उसके प्रेम रूपी दीपक को बुझाकर द्वेष अग्नि को भड़काकर देवासुर संग्राम के द्वारा उसका सर्वनाश कराने पर तुल जाती है। इस अवस्था में नदी-नालों को ही समुद्र से अधिक मान लिया जाता है, यही इस अल्पज्ञान की पहचान है। आज संसार में जो भी उपयोगी यंत्र, मशीनें, कम्प्यूटर आदि तथा अन्य उपकरण बनाएँ जा रहे हैं उनके बनाने वाला उनके निर्माण संरचना तथा उपयोग के दिशा-निर्देश पुस्तिका में देता है, तो वह यंत्र, मशीन, उपकरण आदि अच्छी तरह से अधिक समय तक यथावत् कार्य करते हैं। उसी प्रकार जब उस दिव्य शक्ति ईश्वर द्वारा ब्रह्माण्ड की रचना की गई तो उसने भी सृष्टि के ज्ञान से परिपूर्ण वेद ज्ञान मानव को दिया। इसलिए वेद ज्ञान पर चलने से मानव जाति का कल्याण संभव हो सकता है।

जैसे सूर्य, तारे, चंद्रमा, वायु, जल, अन्न आदि प्रत्येक मानव के लिए है वैसे ही वेद ज्ञान भी मानव मात्र के हित के लिए है दुर्भाग्यवश हम लोग आज ईश्वरीय ज्ञान कहे जाने वाले वेद को सर्वथा त्याग कर अन्य अनेकों ग्रन्थों की भूल-भूलैया में भ्रमित हैं। वेद में समस्त ज्ञान मूल रूप से उपलब्ध हैं। वेद में किसी घटना, स्थान व व्यक्ति विशेष का उल्लेख नहीं है। वेद का समस्त ज्ञान पूर्णतया वैज्ञानिक, तर्कपूर्ण तथा प्रकृति क्रम के अनुरूप होकर सार्वभौमिक है। वेद में दिए गए ज्ञान का अवलम्बन लेकर ही समस्त विश्व के मनुष्य समस्त प्रकार से सुखी रह सकते हैं तथा विश्व में शांति स्थापित हो सकती है। वास्तव में वेद में सभी समस्याओं का समाधान उपलब्ध है। अतः मानव मात्र का कल्याण वेदानुकूल चलने में ही है। इसी गूढ़ रहस्य को समझाने के लिए प्रत्येक ऋषि-महर्षि प्रयत्न करता रहा है। दर्शन-शास्त्र, उपनिषद् आदि समस्त वैदिक साहित्य का निर्माण हुआ है किन्तु मन्द बुद्धि मानव फिर भी इस गूढ़ रहस्य को न समझ कर आपस की खीचतान करता रहता है तो फिर व्यर्थ के लेखन कार्य में समय लगाने से क्या लाभ? जैसा आप समझते हैं वैसा नहीं है! देखो भोजन करने से मनुष्य की तृष्णा भले ही न मिटे, किन्तु कार्य करने की शक्ति तो भोजन से प्राप्त होती है। इसी के आधार पर संसार का कार्य सदा ही चलता है। इसी प्रकार से पुस्तकादि के द्वारा आपस की खीचतान सर्वथा भले ही न मिटे किन्तु विचार शक्ति तो बढ़ती ही है। ज्ञान की परम्परा का मुख्य आधार यह लेखन क्रिया ही है तथा बहुत से व्यक्ति वास्तविकता को समझकर इस खीचतान से ऊपर उठकर संसार सागर से पार भी होते हैं। जब छोटे से छोटा कार्य भी अपना फल प्रदान करता है तो फिर इतना महान कार्य निष्फल कैसे जा सकता है। अतः उत्तम पुरुषों को इस प्रकार के उत्तम कार्यों से कभी विमुख नहीं होना चाहिये, किन्तु अपने पूर्ण (सामर्थ्य) पुरुषार्थ से आगे बढ़ाना चाहिये यही उनका मुख्य कर्तव्य है। यही सब सुधारों का आधार है और यही उत्तम पुरुषों की विशेषता है। क्या देखते नहीं कि संसार में दुष्ट व्यक्ति अपनी शक्ति का विस्तार करने के लिए कितना भारी प्रयत्न करते हैं। जब दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता को भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते तो फिर सज्जन व्यक्ति अपनी सज्जनता कैसे छोड़ सकते हैं। इस सज्जनता रूपी अमोघ शस्त्र को अपनाकर ही सब बुराइयों को जीता जा सकता है। इसलिए इस अमोघ शस्त्र को अपनाकर आपस की खीचतान को समाप्त करके सारे विश्व को अपना परिवार समझकर प्रेम का बीज बिखेर कर जाओ तभी मानव जन्म सफल होगा। यही परमपिता परमात्मा की पक्षपात रहित अमृत वाणी वेद का मानव मात्र के लिए संदेश है। ●

यूँ जीवन कृतार्थ कर ले

जीवन मिला है मानवी का चरितार्थ कर ले,
पहुँचना है मोक्ष तक पुरूषार्थ कर ले।
गुजारा कर किसी को कष्ट पहुँचाये बिना,
यूं ही सहजता से अहिंसा साथ कर ले।
वेद पढ़कर मार्गदर्शन प्राप्त कर ले,
औरों को भी बोध देकर कृतार्थ कर ले।
भूलना नहीं उपासना सृष्टि बनाने हार की,
ध्यान, सन्ध्या व हवन से ये फलितार्थ कर ले।
ध्यान कर लो सारी चीजों से, राग रखना नहीं,
वितराग हो, यूं जीवन कृतार्थ कर ले।

-रमण नावलीकर
झण्डा चौक, नावली, जिला-आणंद (गुज.)

आप अपने साथ हुए छोटे-मोटे अन्याय को ईश्वर के न्याय पर छोड़ दें और कहें- ''कोई बात नहीं।''

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ का वार्षिक प्रगति विवरण

मंगलाचरण – जगन्नियता मंगलमय भगवान् सर्वभूतान्तर्यामी की असीम अनुकम्पा से उसकी ही सहजकृपा में पलपल आनन्दित साधना-स्वाध्याय-प्रेमी, अध्यात्मपथानुगामी, सुहृद्, महानुभावों के समक्ष दर्शन योग महाविद्यालय का विक्रम संवत् २०७० का वार्षिक प्रगति विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है इसे जानकर आप सभी को सुखद अनुभूति होगी।

उत्सव – चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत् २०७१ तदनुसार ३१ मार्च २०१४ को आर्यवन विकास क्षेत्र न्यास का वार्षिकोत्सव सुन्दर ढंग से सम्पन्न हो गया। यद्यपि आर्यवन की स्थापना सन् १९८१ में हो चुकी थी किन्तु वार्षिकोत्सव तो दर्शन योग महाविद्यालय के स्थापना काल सन् १९८६ से मनाना आरम्भ हुआ है। अतः दर्शन योग महाविद्यालय का भी यह अट्ठाइसवाँ वार्षिकोत्सव साथ में सम्पन्न हो गया। इसी के साथ **विद्यालय अब तक की विविध सफलताओं के साथ अपने अट्ठाइसवें वर्ष को पार कर उन्नीसवें वर्ष में प्रवेश कर गया**। उत्सव में पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज का प्रेरक तथा ओजस्वी उपदेश हुआ। साथ में यथाकाल अन्य अनेक विद्वानों के भी प्रवचन हुए। संस्था के कार्यों का अभिज्ञापन, दिवंगत न्यासी संस्थापक प्रधान श्री धनजीभाई वेलाणी तथा न्यासी श्री मोहनभाई जी वेलाणी के प्रति श्रद्धा-समर्पण एवं उनके परिवार जनों का सम्मान, स्मृतिपत्र वितरण आदि अनेकविध कार्यक्रम शान्तिमय, सुचारू रूप से एवं पूरे उल्लास के साथ सम्पन्न हुए।

अधिकारी – अब विद्यालय से सम्बद्ध गतिविधि का वर्णन प्रस्तुत है। आपको विदित हो कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत् २०६८ तदनुसार ४ अप्रैल २०११ से हुए व्यवस्था परिवर्तन के अनुसार अब विद्यालय को **निर्देशक के रूप में श्री स्वामी विवेकानन्द जी संचालित कर रहे हैं** और विद्यालय अपने गौरवपूर्ण अतीत को सुरक्षित रखते हुए सतत् प्रगतिशील हो रहा है। इनके साथ आचार्य के रूप में सुमेरू प्रसाद जी दर्शनाचार्य है। आपने अपनी डेढ़ वर्ष की मौन साधना सम्पन्न करके १२ जनवरी २०१४ को गुरूदेव **पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की है और अब आपका नाम स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती हो चुका है। इनके साथ महाविद्यालय के स्नातकों में से संन्यास दीक्षा ग्रहण करने वालों की संख्या तेरह हो गई**। ज्ञानविज्ञान, वैराग्य से सम्पन्न युवा संन्यासियों का होना आर्य जगत् की यह एक विशेष उपलब्धि है। इससे आर्य जगत् में संन्यास परम्परा की सुरक्षा व वृद्धि हुई है। अतः महाविद्यालय अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

आगे उपाचार्य के रूप में स्वामी ध्रुवदेव जी व अध्यापक के रूप में ब्र. ईश्वरानन्द जी स्थायी रूप से कार्यशील हैं। प्रबन्धक के रूप में मैं (ब्र. दिनेश कुमार) विद्यालय की सेवा कर रहा हूँ तथा ब्र. प्रियेश जी भी अपने अध्ययन-अध्यापन सहित व्यवस्था में पूर्णतः सहयोग कर रहे हैं। अभी वे भी मार्च-अप्रैल इन दो महीनों के लिए साधना, स्वाध्याय हेतु आर्यवन से अन्यत्र गए थे और कुछ विशेष उपलब्धि के साथ अब वापस आ गए हैं। यहाँ आकर भी उनका अनुष्ठान पूर्ववत् चल रहा है।

वैधता – आर्थिक सुव्यवस्था, प्रमाणिकता, सुरक्षा व राजकीय वैधता की दृष्टि से विद्यालय अब **दर्शन योग धर्मार्थ न्यास** (पंजीकृत) के अन्तर्गत संचालित किया जा रहा है तथा सर्वकार की ओर से इस न्यास को आयकर मुक्ति का स्थायी प्रमाण पत्र भी उपलब्ध हो गया है। **विदेशी सहयोग ग्रहण का पंजीकृत अधिकार भी मिल गया है।**

कार्य – आप सबको विदित है कि विगत अट्ठाइस वर्षों से विद्यालय के द्वारा छोटे-बडे अन्य अनेक कार्य सम्पन्न हुए जिनमें सबसे उत्तम व लोकोपकारी कार्य विद्वानों का निर्माण रहा। वर्तमान में **ईश्वर की महती कृपा, पू. गुरूदेव स्वामी सत्यपति जी के शुभाशीर्वाद व उनकी लोक में प्रतिष्ठा के प्रभाव, अन्यान्य आचार्यों, विद्वानों, विद्यालयों के स्नातकों, ब्रह्मचारियों, आर्यवन विकास के सहृदय न्यासियों तथा आप सदृश सुहृत् सहयोगियों के तन-मन-धन रूप सहयोग से यह पुनीत कार्य अभी भी अनवरत संचालित हो रहा है।**

पठन्-पाठन – विद्यालय में अभी पठन-पाठन का कार्य मुख्य रूप से चल रहा है। जिसमें विद्यार्थियों की संख्या ग्यारह है। इनमें **मॉरीशस के एक भद्र, सुशील, जिज्ञासु, सज्जन श्री ब्रह्मदेव जी संलग्न हैं।** निर्देशक स्वामी विवेकानन्द जी सतत् मार्गदर्शन करते रहते हैं तथा प्रतिमास विद्यालय में पधारकर वेद प्रवचन व शंका-समाधान आदि की कक्षाएँ लेते रहते हैं। इनके अतिरिक्त स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक का अध्यापन आदि सहयोग भी विद्यालय को प्राप्त होता रहता है। इस प्रकार समस्त कुलवासी प्रसन्न व सन्तुष्ट होकर अध्ययन व साधना में संलग्न हैं। दैनिक यज्ञ, वेद स्वाध्याय, क्रियात्मक योगाभ्यास, दर्शन अध्ययन, आत्मनिरीक्षण आदि की कक्षाएँ निरन्तर चल रही हैं। वर्तमान अष्टम सत्र में योग, सांख्य,

---

पढ़े विचारें व जीवन में उतारें-

संध्या-उपासना (ईश्वर भक्ति करने के लाभ)

१. ज्ञान, विद्या, बुद्धि, आयु, बल, यश, कीर्ति में वृद्धि होती है।
२. मन को शान्ति, दुःखों से निवृत्ति तथा एकाग्रता, प्रसन्नता एवं निर्भयता की प्राप्ति होती है।
३. अपने कुसंस्कारों का नाश एवं सुसंस्कारों का उदय होता है।
४. व्यक्ति धार्मिक, आस्तिक, ईश्वर भक्त, परोपकारी, सरल, विनम्र व गुणवान बनता है।
५. पहाड़ के समान दुःख आने पर भी व्यक्ति घबराता नहीं है।
६. मन इन्द्रियों को वश में करने में व्यक्ति समर्थ होता है।
७. व्यक्ति हमेशा आशावादी बने रहता है, कभी भी हताश निराश नहीं होता।
८. माता-पिता, गुरू-आचार्य तथा समाज व राष्ट्र की सेवा करने हेतु व्यक्ति तत्पर रहता है।
९. उपासना करने से आत्मा की चार्जिंग होती है अर्थात् ईश्वर से विशेष शक्ति की प्राप्ति होती है जिससे व्यक्ति अपनी बुरी आदतों को छोड़ने में समर्थ होता है।
१०. उपासना करने से व्यक्ति सहनशील, निरभिमानी व दयालु बनता है तथा विशेष आनन्द को प्राप्त करता है।
११. व्यक्ति जन्म-मरण के बन्धन से छूटने एवं मोक्ष प्राप्त करने हेतु अग्रसर होता है।

– स्वामी शान्तानन्द सरस्वती,
एम.ए., दर्शनाचार्य, वैदिक गुरुकुल
भवानीपुर, जिला-कच्छ, गुजरात
चलभाष- ०९९९८५९४८१०

वैशेषिक और न्याय इन चार दर्शनों का अध्यापन, लिखित परीक्षा सहित सम्पन्न होने जा रहा है और वेदान्त दर्शन तथा उपनिषद् का पाठ चल रहा है। उपनिषद् में ईश आदि आठ उपनिषदों का एक बार अध्यापन हो चुका है, शेष का पाठ चल रहा है।

सहयोगी – वर्तमान में विद्यालय के साथ पुराने व उत्साही सहयोगी के विधिवत् रूप से जुड़ जाने से ब्रह्मचारियों की दिनचर्या व अध्ययन, योगाभ्यास का अवसर सुरक्षित रखते हुए विद्यालय के द्वारा अब प्रकाशन का कार्य भी विस्तृत रूप से किया जा रहा है। इसका दायित्व डॉ. राधावल्लभ जी चौधरी जबलपुर ने सहर्ष व श्रद्धया स्वीकार किया है। अत: विद्यालय की ओर से उनको **सेवासाहित्यप्रचारप्रमुख** के रूप में नियुक्त किया गया है। अब वे विद्यालय की ओर से प्रकाशन तथा साहित्य सृजन हेतु भी अधिकृत माने जाएँगे।

धर्मप्रचार – स्वामी विवेकानन्दजी के द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार ऊँचे स्तर पर देश के अनेक प्रान्तों में अनवरत चलता रहता है। जिनमें निम्नलिखित कार्यक्रम महत्वपूर्ण रहे हैं-

१. अहमदाबाद नगर के विशाल वातानुकूल सभागृहों में एक दिवसीय शिविरों का अनेक बार आयोजन हो चुका है। जिनमें **कर्मफल-सिद्धान्त, गृहस्थ जीवन को सुखी कैसे बनाएँ** जैसे विषयों पर प्रवचन तथा शंका-समाधान हुआ और अधिकतम ग्यारह सौ तक शिविरार्थियों ने भाग लेकर ज्ञान लाभ लिया। इन कार्यक्रमों की विडियो सी.डी. तथा एक पुस्तक **अपने भाग्यनिर्माता आप** भी तैयार हो चुकी है तथा दूसरी पुस्तक **सुखी गृहस्थ** तैयार होकर प्रकाशित होने जा रही है।

२. इसी प्रकार दिल्ली की संस्कृत अकादमी में योग व आयुर्वेद विभाग में योगदर्शन का व्यासभाष्य सहित आंशिक रूप में अध्यापन किया गया। इस कार्यक्रम में दिल्ली स्थित चार विश्वविद्यालयों के संस्कृत व दर्शन के प्राध्यापकों, शोध छात्रों तथा प्रशासनिक अधिकारियों ने भाग लिया और विशुद्ध वैदिक योग के स्वरूप को जाना। आगे अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाने हेतु व्रत-संकल्प भी धारण किए।

३. चोटीपुरा कन्या गुरूकुल में सतत् बीस दिनों तक चार-चार दर्शनों का अध्यापन व योग प्रशिक्षण किया।

इसी प्रकार अन्य अनेक तीन-चार दिनों के योगप्रशिक्षण शिविर व वेदप्रवचन के कार्यक्रम भी पूरे वर्ष चलते रहे।

संस्था के अन्य विद्वानों यथा स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी, ब्र. ईश्वरानन्द जी, ब्र. प्रियेश जी, ब्र. दिनेश कुमार तथा श्री ब्रह्मदेव जी ने अनेक स्थानों में आध्यात्मिक प्रवचन, यज्ञ, संस्कार तथा सत्संग आदि के रूप में प्रचार किया। संस्था के द्वारा दूरभाष, ई.मेल, वेब साइट तथा फेस बुक आदि संचार-माध्यमों से जिज्ञासुओं के लिए मार्गदर्शन तथा शंका-समाधान का कार्य होता रहा है।

आशीर्वाद – पूज्य गुरूदेव स्वामी सत्यपति जी का आशीर्वाद व दिशानिर्देश विद्यालय को सतत् उपलब्ध रहता है। अनेक बार विद्यालय में पधारकर अथवा ब्रह्मचारियों को अपने पास बुलाकर भी प्रेरणा व उपदेश से अनुप्राणित करते रहते हैं। इसी प्रकार अन्य संन्यासियों, विद्वानों का भी आगमन विद्यालय में होता रहा है जिससे उनकी प्रेरणा, उपदेश, आशीर्वाद तथा शुभ सम्मति का लाभ विद्यालय व आर्यवन परिवार को भी प्राप्त हुआ। इनमें **स्वामी धर्मानन्द जी** – गुरूकुल आमसेना उड़ीसा, **स्वामी ब्रह्मानन्द जी** – वडलू, आन्ध्रप्रदेश, **स्वामी अमृतानन्द जी** – योग आश्रम जमानी, मध्यप्रदेश, **स्वामी सुमेधानन्द जी** – श्रुतिन्यास राउरकेला, उड़ीसा, **डॉ. सोमदेव जी शास्त्री** – मुम्बई, **डॉ. कमलेश कुमार जी शास्त्री** – अहमदाबाद व **डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी शर्मा** (डी.ए.वी. प्रकाशन के निर्देशक) प्रमुख रहे।

विशेष सूचना – आर्यवन के वार्षिक उत्सव के अवसर पर पूज्य स्वामी सत्यपति जी ने जो प्रेरणा व आशीर्वाद प्रदान किए थे उसे तथा विद्यालय के अन्य विद्वानों के प्रवचनों को देखने के लिए कृपया इण्टरनेट पर हमारी youtube site (darshanyog) पर जाएँ।

प्रकाशन – वर्तमान सत्र में मुख्य रूप से आज का सुविचार कालान्तर (कैलेण्डर) का प्रकाशन हुआ जिसकी लोक में बहुत अधिक ख्याति हुई तथा मांग बढ़ी। इसी प्रकार जीवनोपयोगी सन्देश, सन्तान निर्माण, अपने भाग्यनिर्माता आप, सत्योपदेश भाग १ तथा भाग २ आदि की बहुत ही लोकप्रियता सामने आई। कर्मफल से सम्बद्ध दो आलेख (पोस्टर) तथा सरल योग से ईश्वर साक्षात्कार एवं तत्वज्ञान के नवीन संस्करण का प्रकाशन हो गया है। इनके अतिरिक्त प्रवचनों की विडियों सी.डी. भी प्रकाशित हुई है।

वितरण – विद्यालय में पधारने वाले देश-विदेश के सैकड़ों अतिथियों व अन्य जिज्ञासुओं में साहित्य का वितरण हाथों हाथ होता ही है तथा सूचित करने के साथ-साथ हजारों महानुभावों की सेवा में डाक एवं ट्रांसपोर्ट के माध्यम से साहित्य का प्रेषण हुआ। जैसे कि **इस वर्ष की अवधि में लगभग पन्द्रह हजार पत्र, पैकेट व पार्सल भेजे गए।** पुनरपि सामूहिक अवसरों पर यह लोकोपकार विशेष स्तर पर प्राय: सम्पन्न किया जाता है। जैसे कि दिसम्बर मास में साबरकांठा जिले के माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के आचार्य संघ के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर स्वामी विवेकानन्द जी को आशीर्वचन हेतु आमन्त्रित किया गया था, जिसमें लगभग पांच सौ आचार्यों, अतिथि विशेषों एवं अधिकारी गण को गुजराती भाषा का सत्यार्थ प्रकाश, विद्यालय से प्रकाशित अन्य पुस्तकें तथा पत्रक भेंट किए गए जिनका मूल्य लगभग एक लाख रूपये था। इसके अतिरिक्त विद्वत्सम्मान, गोसेवा तथा अन्त्येष्टि कर्म में तथा प्राकृतिक आपदा में सहयोग किया गया।

सम्मानप्राप्ति – आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के समारोह पर विद्यालय को गुरूकुल संचालन हेतु पुरस्कार राशि, शॉल व स्मृतिचिह्न, आदि से सम्मानित किया गया।

आगामी योजना – विद्यालय की स्तर वृद्धि व योगविद्या की रक्षा हेतु एक उच्चस्तरीय वार्षिक सघन योगसाधना शिविर का आयोजन अक्टूबर मास से होने जा रहा है। इसमें विशेष योग्यता वाले साधक शिविरार्थी भाग ले सकेंगे।

कृतज्ञता – विगत सत्ताइस वर्षों से विद्यालय को आर्यवन न्यास की ओर से सम्यक् निवास, भोजन, पानी एवं सुरक्षा प्राप्त होती रही है। उसके इस सहयोग से ही विद्यालय सतत् अग्रसर हो रहा है। आज भी विद्यालय आर्यवन न्यास की ओर से निश्चिन्त है। अत: हृदय से हम उन सभी न्यासी महानुभावों के प्रति शुभकामना व कृतज्ञता व्यक्त कर रहे हैं। इनके साथ विद्यालय के अन्य आप सभी शुभचिन्तकों अर्थात् सब प्रकार के तन-मन-धन से सहयोग करने वालों के प्रति धन्यवाद और हमारी शुभकामनाएँ ज्ञापित कर रहे हैं।

-ब्र. दिनेश कुमार
प्रबन्धक-दर्शन योग महाविद्यालय
आर्यवन, रोजड़ (गुज.), दूरभाष- २७७०-२८७४१८,

संसदीय क्षेत्र सीकर (राज.) से निर्वाचित सांसद

आर्य संन्यासी स्वामी सुमेधानंद जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

नाम - स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
पिता का नाम - श्री मायाराम जी
पता - वैदिक आश्रम पिपराली,जि.-सीकर (राज.)
जन्म तिथि -१ अक्टूबर १९५१ को किसान (जाट) परिवार में जन्म हुआ।
सम्पर्क सूत्र - ०१५७२२२६३७४, ९४१४०३८७५५, ९९२८४७०१३१
ई.मेल. - sss.piprali@gmail.com
शिक्षा -एम.ए. संस्कृत, विद्यावाचस्पति, वेद-दर्शनादि का विशेष अध्ययन।

पारिवारिक पृष्ठ भूमि - हरियाणा के रोहतक जिले के ग्राम बालन्द में किसान (जाट) परिवार में जन्म हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के विद्यालय में हुई पश्चात् रोहतक में विद्यालय एवं महाविद्यालय में अध्ययन किया। **अध्ययन काल में महर्षि दयानन्द सरस्वती, अमर शहीद क्रान्तिकारी रामप्रसाद 'बिस्मिल' के जीवन से प्रेरणा पाकर संस्कृत का अध्ययन करने का निश्चय किया।** संस्कृत का अध्ययन करने के लिए गुरुकुल में प्रवेश लिया। गुरुकुल आर्यनगर हिसार (हरि.), संस्कृत महाविद्यालय दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) में अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त अनेक संस्थाओं में विद्वानों से **संस्कृत व्याकरण, वेद, दर्शन आदि शास्त्रों का अध्ययन किया।** लगभग ९ वर्ष तक अध्यापन कार्य किया।

राजनीतिक पृष्ठ भूमि - सन् १९८६ में माननीय स्व. श्री भैरोसिंह शेखावत जी के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी की सस्यता ग्रहण की। उसी समय से समय-समय पर पार्टी की गतिविधियों में भाग लेते रहे। राजस्थान प्रान्त के अतिरिक्त हरियाणा में भी विभिन्न चुनावों में प्रचार-प्रसार किया। इस वर्ष राजस्थान प्रान्त में माननीया श्रीमती वसुन्धरा राजे के नेतृत्व में विधान सभा चुनाव के कार्यक्रमों में सक्रिय रहे। विशेषकर सीकर जिला तथा चुरु, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, बीकानेर व जयपुर जिलों में विशेष भागीदारी रही।

सीकर जिले व राजस्थान प्रान्त में कार्य - सन् १९८६ से ही सीकर क्षेत्र में सम्पर्क रहा। इस क्षेत्र में निरन्तर कार्यक्रमों में आते रहे। सन् १९९६ में **नशाबन्दी का विशेष अभियान चलाया। तत्पश्चात् सन् १९९७ में ग्राम-पिपराली में वैदिक आश्रम की स्थापना की।** वैदिक आश्रम को केन्द्र बनाकर इस क्षेत्र में विशेषकर युवा पीढ़ी को शिक्षित व संस्कारित करने का अभियान चलाया गया। अब तक राजकीय तथा निजी विद्यालयों व महाविद्यालयों में अनेकों योग शिविर, संस्कार शिविर, व्याख्यान माला, साहित्य वितरण आदि के माध्यम से हजारों विद्यार्थियों को संस्कारित किया। विद्यार्थियों में राष्ट्रभक्ति के साथ-साथ माता-पिता व गुरुजनों के प्रति श्रद्धाभाव जागृत किया। हजारों युवकों ने नशामुक्ति का संकल्प लिया।

ग्रामीण क्षेत्र में यज्ञ व योग के माध्यम से अनेक आयोजन किये। **गोरक्षा अभियान चलाया गया।** इस क्षेत्र में मृत्युभोज, अस्पृश्यता व नशे जैसी बुराइयों को छुड़ाने हेतु अनेक बड़े-बड़े सम्मेलनों का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों में हजारों की उपस्थिति रही। इस अभियान में जिले की सभी सामाजीक संस्थाओं का सराहनीय सहयोग रहा। इस अभियान में जिले का कोई भी क्षेत्र वंचित नहीं रहा। जिले की सभी जाति व मत-पंथों के लोग निरन्तर सम्पर्क में रहते हैं। इन्हीं सेवाओं के फलस्वरूप अनेक संस्थाओं द्वारा सार्वजनिक अभिनन्दन आयोजित किये गये जिनमें हजारों की उपस्थिति रही। सम्पूर्ण राजस्थान प्रान्त में भी इसी प्रकार के अभियान चलाये।

भारत स्वाभिमान आन्दोलन - योगऋषि परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के सानिध्य में भारत स्वाभिमान ट्रस्ट व पतंजलि योग समिति के माध्यम से अनेक कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका रही।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ - विद्यार्थी काल से ही संघ की गतिविधियों में सक्रिय भूमिका रही। परम पूज्य **श्री सुदर्शन जी पूर्व सरसंघचालक के सीकर आगमन पर प्रान्तीय शिविर में अध्यक्षता की।** परम पूज्य श्री मोहन भागवत जी वर्त्तमान सरसंघचालक के सीकर आगमन पर दोनों कार्यक्रमों में सक्रिय रहे। जयपुर प्रान्त में संघ के विभिन्न कार्यक्रमों में सहभागिता।

विश्व हिन्दू परिषद - विश्व हिन्दू परिषद द्वारा संचालित गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी रही। रामजन्म भूमि आन्दोलन में भागीदारी निभाई तथा अन्य सभी आन्दोलनों में सक्रिय रहे। **वर्तमान में राजस्थान प्रान्त के मार्गदर्शक मण्डल में सदस्य।**

आर्य समाज में विभिन्न पदों को सुशोभित किया - आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के कार्यकारी प्रधान रहे। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर में प्रान्तीय अध्यक्ष व महामंत्री रहे। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के संस्थापक सदस्य व महर्षि दयानन्द स्मारक अजमेर के संरक्षक हैं।**

सामाजिक पृष्ठभूमि - सन् १९७५ से ही अध्ययन कार्य के साथ-साथ सामाजिक व राजनैतिक कार्यों में भी सक्रिय रहे। जे.पी. आन्दोलन में सक्रिय भूमिका रही। १९७५ से १९८० तक हरियाणा के हिसार को केन्द्रित कर कार्य किया। इस अवधि में अनेक महापुरुषों का सानिध्य मिला। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज, माननीय जयप्रकाश नारायण जी, स्व. चौधरी चरण सिंह जी, स्व. चौ. देवीलाल जी, चौ. कुम्भाराम आर्य जी, पूर्व उपराष्ट्रपति माननीय भैरोसिंह जी शेखावत, स्व. श्री साहिब सिंह वर्मा, सन्त विनोबा भावे से सम्पर्क हुआ।

सन् १९८१ से राजस्थान प्रान्त के अतिरिक्त भारत तथा विदेशों में वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में सक्रिय रहे। ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक कुरीति उन्मूलन अभियान चलाये, यथा-मृत्यु भोज, बालविवाह, अन्धविश्वास, नशामुक्ति अभियान।

शिक्षा कार्यों में सहयोग - ९ वर्ष शिक्षण कार्य किया तत्पश्चात् अपना अधिकाधिक समय शिक्षा के प्रचार-प्रसार में लगाया। हजारों विद्यार्थियों को ज्ञानार्जन हेतु प्रेरित किया, उनको संस्कारित करने का प्रयास किया।

गो सेवा - विगत ३० वर्षों से गो सेवा के कार्यों में सक्रीय रहे। अनेक गोशालाओं की स्थापना की तथा उनका संचालन किया।

सम्मान व अभिनन्दन - विभिन्न संस्थाओं व समाजों द्वारा सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का संयोजन व अध्यक्षता की तथा सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया।

आपके द्वारा सांसद पद की शपथ संस्कृत में ग्रहण कर भारतीय संस्कृति का मान बढ़ाया गया है। आप जैसे महानुभावों की सदन में उपस्थिति से भारतीय संस्कृति के मूल्यों के पुनर्स्थापन की आशा का संचार आर्यों में हुआ। ●

भारत का दूसरा राज्य है असम-एक परिचय

(१) इसका पुराना नाम आसाम है। यह पूर्वोतर का सबसे बड़ा राज्य था।

(२) देश विभाजन में, १९४७ में, आसाम का सीमावर्ती मुस्लिम बहुल सिलहट जिला, पूर्वी पाकिस्तान (बंगला देश) को दिया गया।

(३) १९४७ में आसाम के मुख्यमंत्री गोपानाथ बोर डोलोई थे जिन्होंने प्रधानमंत्री नेहरू से मुस्लिम घुसपैठियों को आसाम में अवैध रूप से आने पर रोक लगाने के लिए कहा था किन्तु मुस्लिम समर्थक नेहरू ने कोई कार्रवाई नहीं की।

(४) परतन्त्रता काल में आसाम में सरकारी कार्य अंग्रेजी व बंगला में होता था। स्वतन्त्र भारत में भी यही व्यवस्था १९६० तक चली।

(५) असमिया भाषियों के दबाव में १९६० के दशक में राज्य की सरकारी भाषा असमिया बना दी गई जिसका बंगला भाषियों ने प्रबल विरोध किया।

(६) समझौता वार्ता में सिलचर और आसपास के इलाकों के लिए बंगला भाषाको भी मान्यता दी गई।

(७) असम के पहाड़ी क्षेत्रों में ईसाई मिशनरी धर्म प्रचार और धर्मान्तरण का कार्य जोर-शोर से करने लगे। दुष्परिणाम यह हुआ कि प. नेहरू को असम को विभाजित करके ईसाई बहुल नागालैण्ड राज्य १-१२-१९६३ को बनाना पड़ा।

(८) स्वर्गीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने ताशकन्द जाने से पूर्व कहा था कि वे लौटकर आने पर आर्य समाज को सहयोग करेंगे ताकि असम में धर्मान्तरण रूके।

(९) असम को दुबारा विभाजित कर स्वर्गीय इंदिरा गांधी ने २१-१-१९७२ को मेघालय नाम से दूसरा ईसाई बहुत राज्य बनाया।

(१०) स्वर्गीय राजीव गांधी ने असम को तीसरी बार विभाजित करके २०-२-१९८७ को मिजोरम नाम का तीसरा ईसाई बहुल राज्य बनाया।

(११) अब असम में २३ जिले हैं और इसका क्षेत्रफल ७८४३८ वर्ग किलोमीटर है।

(१२) इसकी सीमाएँ अरूणाचल प्रदेश-नागालैण्ड-मणिपुर-मिजोरम-त्रिपुरा-मेघालय-भूटान-पश्चिम बंगाल और बंगलादेश से मिलती ह।

(१३) अविभाजित आसाम की राजधानी शिलांग थी और अब विभाजित असम की राजधानी गुवाहाटी है।

(१४) जनसंख्या के हिसाब से यह पूर्वोत्तर भारत का सबसे बड़ा राज्य है। यहाँ कामाख्या मंदिर बहुत प्रसिद्ध व प्राचीन है। इसमें पशुओं की बलि दी जाती है।

(१५) गुवाहाटी में ईसाई मिशनरियों का बड़ा प्रचार केन्द्र है जहाँ से धर्मान्तरण का कार्य जोर-शोर से किया जाता है।

(१६) रोजगार-दैनिक मजदूरी करने के लिए पूर्वी पाकिस्तान/बंगला देश से मुस्लिम सीमा पार करके १९४७ से आते रहे बाद में वे धीरे-धीरे खाली सरकारी जमीनों पर झुग्गियाँ डालकर बसते गये और स्थानीय मुस्लिमों ने उन्हें सहयोग दिया।

(१७) देश में मुस्लिम घुसपैठियों की संख्या असम और पश्चिम बंगाल में सर्वाधिक है। कुल संख्या करीब एक करोड़ के आसपास है।

(१८) असम के युवाओं और छात्रों ने घुसपैठियों को निकालने के लिए संघर्ष किया। असम गण संग्राम परिषद बनाई। आई.एम.डी.टी. नाम का कानून बनवाया। असम में सरकार भी बनी लेकिन घुसपैठियों को नहीं निकाला जा सका है।

(१९) श्रीमती अनवरा तैमूर मुस्लिम धर्मी को कांग्रेसियों ने असम का मुख्यमंत्री भी बनवाया और घुसपैठियों के समर्थक फखरूद्दीन अहमद को देश का राष्ट्रपति बनाया तब मुस्लिम घुसपैठियों को कौन और कैसे निकाल सकता है?

(२०) असम के चार सटे हुए जिलों में बोड़ो की संख्या ६० प्रतिशत है। इन्होंने प्रबल आन्दोलन करके बोड़ोलैण्ड स्वायत्तशासी परिषद बनवा ली है जिसका मुख्यालय कोकराझार में हैं। बोड़ोलैण्ड के जिलों में हिन्दी भाषी मजदूरों की हत्याएँ बोड़ो उग्रवादियों द्वारा समय-समय पर कर दी जाती हैं।

ईश्वर हिन्दू को सद्बुद्धि दे। **-सावरकर वाद प्रचार सभा**

२६, के.पी. रोड़, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

चलभाष-०८९५८७७८४४३

स्वामी सुधानन्द जी उड़ीसा का सम्मान एवं प्रवचन जांगिड ब्राह्मण समाज वाड़ी अहमदाबाद में

ऋषि दयानन्द बोधोत्सव पर टंकारा में अपनी गरिमामयी उपस्थिति तथा प्रवचन से आर्यजनों को उपकृत करने के पश्चात् उड़ीसा लौटते समय स्वामी सुधानन्द जी ने अहमदाबाद के महेन्द्रभाई आर्य तथा श्रीमती सुमित्रा शर्मा के विनम्र आग्रह को स्वीकारते हुए रूके तथा अपने प्रवचन से अहमदाबाद निवासी बंधुओं को लाभान्वित किया। इस अवसर पर पं. कमलेश कुमार जी अग्निहोत्री, आर्यवन रोजड़ से स्वामी मुक्तानन्द जी तथा ब्र. प्रियेश जी भी उपस्थित थे गणमान्य विद्वान् महानुभावों के प्रवचनों का लाभ उपस्थितों ने प्राप्त किया। समस्त विद्वानों का सम्मान किया गया।

आयोजन के मुख्य सूत्रधार श्री महेन्द्र भाई आर्य, श्री ओमप्रकाश जी शर्मा, श्रीमती सुमित्रा शर्मा ने उपस्थितों के प्रति आभार व्यक्त किया।

केन्दीय आर्य युवक परिषद एवं

मध्यप्रदेश प्रान्तीय सभा के तत्वावधान में

वैदिक धर्म महासम्मेलन एवं गायत्री महायज्ञ इन्दौर में

दिनांक २६ से २८ दिसम्बर २०१४ तक

सन्त औधवराम गुरुकुल, भवानीपुर के तत्वावधान एवं स्वामी शांतानन्द जी दर्शनाचार्य के गुरुत्व में

षष्ठ मासिय विशिष्ट प्रशिक्षण शिविर

उपरोक्त छः माह के शिविर द्वारा वैदिक धर्म के प्रवक्ता, पुरोहित आदि कार्यों हेतु विशेष प्रशिक्षण एक जुलाई २०१४ से गुरुकुल भवानीपुर में प्रारंभ किया जा रहा है।

प्रवेश के इच्छुक सम्पर्क करें - ९९९८५९४८१०

सामवेद यज्ञ एवं वेदकथा

दिनांक १४ से २० जुलाई २०१४ तक

आर्य समाज गंगापुर सिटी के तत्वावधान में श्रावणी के उपलक्ष्य में वैदिक यज्ञ एवं सत्संग का भव्य आयोजन दिनांक १४ से २० जुलाई तक आयोजित किया जा रहा है जिसमें समस्त आर्यजन सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान्

यज्ञब्रह्मा - डॉ. हरिशंकर जी अग्निहोत्री, आगरा (उ.प्र.)

भजनोपदेशक - पं. नरेशदत्त जी आर्य, बिजनौर (उ.प्र.)

सम्पर्क

हरिचरण कोसवाल, मंत्री-आर्यसमाज गंगापुर सिटी-०८८२४३१०९९७

मोहित आर्य, नगर मंत्री- आर्यवीर दल गंगापुर सिटी-०७६१००४३१५६

वैदिक विद्यापीठ का प्रारम्भ

सत्यानन्द सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास एवं पातंजल योगाश्रम, भाखरियाँ तहसील-फलौदी, जिला-जोधपुर (राज.) के तत्वावधान में तथा स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुखानन्द जी सरस्वती, आचार्य शिवकुमार जी शास्त्री एवं श्री चम्पालाल जी खत्री (अध्यापक व योग शिक्षक) के सानिध्य एवं मार्गदर्शन में आवासीय 'वैदिक विद्यापीठ' का प्रारम्भ किया जा रहा है।

विद्यापीठ में आधुनिक शिक्षा के साथ योग-अध्यात्म की शिक्षा द्वारा बालक के मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक, चारित्रिक एवं नैतिक विकास का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। विद्यापीठ पूर्ण रूपेण प्राकृतिक, शुद्ध जलवायु के वातावरण में आर्य जगत् के संन्यासियों एवं योग्य विद्वानों के मार्गदर्शन में संचालित होगा।

बाहर से आने वाले बालको के आवास की तथा नगर के बालकों के आवागमन हेतु वाहन की समुचित व्यवस्था विद्यापीठ द्वारा की जावेगी।

बालकों के प्रवेश हेतु इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें।

९९५०४४००१७, ९५३००५३०८६, ९७९९४०२४०१

नि:शुल्क योग साधना चिकित्सा एवं शंख प्रक्षालन शिविर

दिनांक - ०९ से १५ जुलाई २०१४ तक

समय-प्रात: ७ से ९ बजे तथा सायं ५ से ७ बजे तक

शिविर स्थल - आर्य समाज (ए. सी. हाल) मंगलदीप शॉपिंग सेन्टर भट्टार रोड, सूरत (गुजरात)

वर्तमान में तेजी से बढ़ते जा रहे फास्ट फूड एवं जंक फूड उपयोग एवं अन्न, फल, सब्जी एवं दूध उत्पादन में रासायनिकों के इस्तेमाल से आज मनुष्य के शरीर में जहरीले तत्वों का प्रवेश होने से अनेक बीमारियों से ग्रसित हो रहा है अत: उपरोक्त शिविर का आयोजन योगाचार्य उमाशंकर जी सूरत के द्वारा किया जाकर योग साधना एवं शंख प्रक्षालन (काया कल्प) द्वारा आरोग्यता प्रदान करने हेतु नि:शुल्क किया जा रहा है।

स्थान सीमित है इच्छुक शिविरार्थी अपना पंजीयन अतिशीघ्र करवायें।

सम्पर्क

योगाचार्य उमाशंकर महाराज-०९४२६१४०८२९, २२३४०८४

श्रीमती गीता आर्य, मंत्री-आर्य समाज भट्टार रोड, सूरत ९४२७४१४५०४, २२७३६७६

श्री समीर भाई ईस्लाम मत को त्याग मानव मात्र के मूल वैदिक धर्म में लौटे

कहा जाता है सुबह का भुला शाम को घर लौट आवें तो उसे भटका हुआ नहीं कहते। मानव मात्र को वास्तविक सुख-शांति प्रदान करने वाला वैदिक धर्म प्रत्येक मनुष्य का मूल है किंतु वह मत-मतान्तरों में भटक रहा है वही पर अनेक आत्माए पूर्व जन्म संस्कारों के परिणामत: अपने मूल स्थान को प्राप्त कर लेती है।

श्री समीर बाबू भाई, निवासी-बिल्डिंग नं.-४, फ्लेट नं. ५४, करीमाबाद सोसाईटी, घोड़ दौड़ रोड़ सूरत (गुजरात) ने **ईस्लाम धर्म से सत्य सनातन वैदिक धर्म में परिवर्तन स्वयं की इच्छानुसार जिलाधीश बडौदा के अनुमति आदेश क्र. ई.सी.एम.जी. धर्म परिवर्तन वशी १०८१/१४ दिनांक २१.०४.१४ के द्वारा दिनांक २१.०५.१४ को बुधवार सायं ६ बजे आर्यसमाज बड़ौदा में अपना धर्म परिवर्तन कर लिया है। पुरोहित श्री नारायण प्रसाद जी मिश्रा द्वारा पूर्ण वैदिक विधि विधान से आपको शुद्ध कर वैदिक धर्म में प्रवेश करवाकर सुमेर आर्य नाम से अलंकृत किया है।** इस पवित्र अवसर पर सुमेर आर्य के चार मित्र भी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि श्री सुमेर सुशिक्षित होकर इंजीनियरिंग महाविद्यालय में व्याख्याता है **श्री सुमेर आर्य को मानव मात्र के मूल वैदिक धर्म की ओर लौटने पर वैदिक संसार परिवार हार्दिक बधाई देता है तथा इहलोक और परलोक के उज्जवल भविष्य की शुभकामना प्रेषित करता है।**

आर्य जगत् का गौरव-आर्य समाज लूढ़वा

आर्य समाज लूढ़वा, तालुका-माँडवी (श्याम जी कृष्ण वर्मा का जन्म स्थान) जिला-कच्छ की स्थापना करीब ८० वर्ष पूर्व ग्राम लूढ़वा में वैदिक धर्म निष्ठ ऋषि दयानन्द भक्तों द्वारा की गई। जिनमें श्री खेतसी प्रेमजी भाई लिंबानी एवं शिवगुण कानजीभाई वेलाणी का प्रमुख योगदान था

ग्राम-लूढ़वा करीब १५०० की जनसंख्या का छोटा सा गाँव है जिसमें करीब ४० परिवार वैदिक सिद्धांतों को समर्पित है। एक समय में ८० प्रतिशत लोग आर्य समाजी थे जो यहाँ से व्यवसाय आदि हेतु मुम्बई, पूना, नासिक, दहाणू रोड़ आदि देश के अनेक स्थानों के साथ-साथ कई बन्धु विदेश चले गये तथा अपने-अपने स्थानों पर आज भी सक्रियता से आर्य समाज की गतिविधियों को संचालित कर रहे हैं। आर्य समाज भुज का मूल प्रेरक अथवा उद् गम स्थल आर्य समाज लूढ़वा है। आर्य वन रोजड़, आर्य समाज घाटकोपर, आर्य समाज डोंबीवली-मुम्बई, आर्य समाज वारजे-पूना तथा आर्य समाज अघाई रोड़ लंदन की स्थापना में आर्य समाज लूढ़वा के सदस्य महानुभावों का विशेष योगदान है।

आर्य समाज लूढ़वा करीब ५५ वर्षों से अपने निजी भवन में संचालित है भू तल पर एक हाल तथा उसके ऊपर दो कमरे अतिथि निवास हेतु स्नानागार एवं शौचालय की सुविधा से युक्त नवनिर्मित भवन में उपलब्ध है, जहाँ प्रति शनिवार को साप्ताहिक सत्संग तथा प्रतिवर्ष एक दिवसीय एवं प्रत्येक तृतीय वर्ष तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव का आयोजन आयोजित किया जाता है।

वर्तमान में श्री मोहन भाई बोकार प्रधान पद पर, श्री जयंजी भाई बोकार मंत्री पद पर तथा श्री जेठाभाई वेलाणी कोषाध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएं आर्य समाज लूढ़वा को प्रदान कर रहे हैं। इतने छोटे से ग्राम में वैदिक धर्म का प्रचार केन्द्र होकर अन्य स्थानों पर आर्य जगत् की गौरवशाली संस्थाओं की स्थापना का प्रेरणा केन्द्र होने का गौरव आर्य समाज लूढ़वा प्राप्त करता है जो आर्य जगत् के लिये गौरव की बात है। **-वैदिक संसार**

आर्यों का पीछा नहीं छोड़ रही है गुटबाजी

ग्यारह सौ ग्यारह कुण्डिय राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ गुटबाजी की भेंट चढ़ा - आँखों देखी

संगठन सूक्त के मंत्रों का वाचन कर समूचे विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाने का संकल्प मन में संजोने तथा अपने आपको वैदिक धर्म निष्ठ, ऋषि दयानन्द के परम् शिष्य एवं अपने आपको आर्य कहलाने का दम भरने वालो का ईश्वर एक जिसका निज नाम **ओ३म्**, धर्म एक **वैदिक धर्म**, धर्म ध्वजा एक **ओ३म् ध्वज**, पहचान एक **आर्य**, ऋषि एक **दयानन्द** तथा लक्ष्य एक **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** (समूचे संसार को श्रेष्ठ बनाओ) जरूर हो सकता है किन्तु गुण कर्म स्वभाव से श्रेष्ठ कहलाने वाले आर्यों के मन-मस्तिष्क अनैक्यवाद की भेंट चढ़े होकर स्वयं उसी गुटबाजी के शिकार हो रहे हैं जिसके कारण महाभारत और महाभारत पश्चात् आर्य संस्कृति का पतन होकर आर्यो पर अनार्यो का आधिपत्य हुआ।

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से देव दयानन्द नाम की महान् आत्मा का इस सुवर्ण भूमि पर अवतरण हुआ। जिसने आर्यो को ओ३म् ध्वज के तले एकत्रित कर संगठन सूक्त का पाठ पढ़ा गुण-कर्म-स्वभाव से श्रेष्ठ आर्य बना वैदिक धर्म की हुँकार भर स्वराज्य का नाद बजाया।

उसी ऋषि ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा **मनुष्यों का आत्मा सत्य को जानने और मानने वाला होता है किन्तु हठ और दुराग्रहके कारण सत्य को छोड़ बैठता है।** इसी हठ और दुराग्रह के कारण आज अपने आपको आर्य और ऋषि भक्त कहलाने वाले भी गुटबाजी के शिकार हो रहे हैं।

इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखने को मिला इन्दौर महानगर में ग्यारह सौ ग्यारह कुण्डिय राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ आयोजन **दिनांक २५ अप्रैल से १ मई २०१४ तक में।**

इन्दौर महानगर में अनेक वर्षो बाद वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार की बृहद योजना बनी, जिसमें राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विभूतियों स्वामी आर्यवेश जी दिल्ली, स्वामी ऋतस्पति जी होशंगाबाद, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती इन्दौर, स्वामी शंकर मुनि जी, डॉ. सोमदेव जी शास्त्री मुम्बई, वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय दिल्ली, सारस्वत मोहन मनीषी जी दिल्ली, चन्द्रशेखर जी शास्त्री दिल्ली, पं. अमरसिंह जी विद्यावाचस्पति अजमेर, योगाचार्य उमाशंकर जी सूरत, विनय जी विनम्र दिल्ली, डॉ. वीरपाल जी वेदालंकार गाजियाबाद, डॉ. आनन्द स्वामी जी यमुनोत्री, पं. जयदेव जी शास्त्री-छत्तिसगढ़, आर्येन्द्र मुनि एटा, आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामकुमार जी, महामंत्री डॉ. अनिल आर्य दिल्ली, आचार्य रजनीश जी भोपाल, श्रीमती मनीषा विद्यालंकार-ग्वालियर, विकास जी खत्री नरसिंहपुर (तबलावादक) आदि। वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार को समर्पित अनेक महानुभावों के साथ-साथ इन्दौर शहर के ख्यातनाम लालाराम जी आर्य के परिवार की बहु तथा दिल्ली के गोविन्द राम हासानन्द परिवार की बेटी स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. निरजा पौराणिक जैसी अनेक विभूतियों को सुनने और लाभ प्राप्त करने का सुअवसर गुटबाजी की भेंट चढ़ गया।

जानकारी में आया कि आर्य परिवार के प्रमुख पद पर विराजमान तथा राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पदाधिकारी ने आर्य समाज के क्षेत्रीय पदाधिकारियों को फोन द्वारा आयोजन में जाने तथा किसी भी प्रकार का सहयोग करने से मना किया। हम यह नहीं कहते कि आयोजनकर्ता की कोई गलती नहीं थी, गलतियां रही भी होंगी क्योंकि मनुष्य मात्र अल्पज्ञ है और कार्य करने वाले से ही गलतियां होती भी है किन्तु मिल-बैठकर चर्चा से गलतियां सुधार कर व्याप्त गुटबाजी और मलिनता को दूर कर दोनों पक्षों की ऊर्जा को नकारात्मक व्यय किये जाने के स्थान पर सकारात्मक कार्यो में व्यय कर आर्य जगत् के हितार्थ उपयोग किया जा सकता था। इसके लिए अहम जिम्मेदारी परिवार के प्रमुखों की होती है कि वे परिवार के सदस्यों को साथ लेकर चलने का यत्न करें अगर कोई सदस्य बाहर जाने की कोशिश कर रहा है तो प्रथम व्यक्तिगत चर्चा कर समझाये न मानने पर जिम्मेदार लोगों को साथ लेकर सामूहिक चर्चा कर समझाये न मानने पर जिम्मेदार लोगों को साथ लेकर सामूहिक चर्चा कर समझाये फिर भी न माने तो खुलकर मैदान में आकर डटकर इस प्रकार विरोध करें कि आयोजन ही स्थगित करना पड़े। अगर आप परिवार के किसी सामान्य सदस्य को त्रुटीपूर्ण आयोजन से नहीं रोक सकते अथवा सुधार नहीं करवा सकते तो अन्यों के द्वारा फैलाये जा रहे अंधविश्वास-पाखण्ड को कैसे रोक सकोगे?

व्यक्ति सज्जन हो अथवा दुर्जन उसको उसकी विचारधारा के लोग मिल ही जाते हैं। क्या रावण, कंस, दुर्योधन तथा आज समाज में व्याप्त अनाचारियों-व्यभिचारियों को सहयोगी नहीं मिलते? उत्तर होगा जैसे को तैसे मिल ही जाते हैं। तो फिर हम यह गलत फहमी क्यों पाल लेते हैं कि एक पवित्र आध्यात्मिक आयोजन के सहयोगी नहीं मिलेंगे ऊपर से हमें यह भी चिन्तन करना चाहिये कि हमारी स्वयं की कार्य शैली से अनेक लोग संतुष्ट नहीं होते इस कारण हम जिनके कार्य का विरोध करते है उनके साथ हमसे असंतुष्ट लोग लगकर एक विरोधी गुट बन जाता है जिसके कारण कभी खत्म न होने वाली वैमनस्यता और गुटबाजी का जन्म हो एक-दूसरे को नीचा दिखाने की अंतहीन प्रतिस्पर्धा शुरू हो जाती है। जिसका परिणाम भोगना पड़ता है धर्म, जाति, राष्ट्र, सिद्धांत और आमजन को वही कुछ इस समारोह से भी हुआ। मिल-जुलकर समारोह को जो भव्य स्वरूप देकर वैदिक धर्म सिद्धांतों का व्यापक प्रचार-प्रसार इन्दौर महानगर एवं समीपवर्ती क्षेत्र में किया जाकर समारोह में पधारी ख्यातनाम विभूतियों के प्रवचनों/व्याख्यानों ताथा भजनों के लाभ से अधिक-से-अधिक आर्यजनों को लाभान्वित किया जा सकता था किन्तु विद्वान लोग आये भी आयोजन की तैयारियों में बड़े पैमाने पर खर्च भी हुआ, सहयोग देने वालों ने खुले मन से सहयोग और उपस्थिति भी दी इन सबके बावजूद आर्य जगत् को जो लाभ प्राप्त होना था वह नहीं हुआ और आयोजन वेदना, कटुता, वैमनस्यता तथा गुटबाजी के विषबिज बो गया।

आयोजन के मुख्य सूत्रधार पं. भानुप्रताप वेदालंकार प्रदेश अध्यक्ष-आर्य युवक परिषद, मध्यप्रदेश ने विरोधों को झेलते हुए इस आठ दिवसीय भव्य आयोजन का व्यापक प्रचार-प्रसार तथा व्यवस्थाऐं जुटाई। करीब एक माह पूर्व से दो छोटी गाड़ियों पर ध्वनी विस्तारक यंत्र लगवाकर तथा प्रचार पत्रक वितरित करवाकर तथा अनेक स्थानों पर बैनर लगवाकर एवं समाचार पत्रों के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया।

करीब १०,००० वर्ग फूट का पांडाल तथा ४०० वर्ग फूट का मंच बनाया ध्वनी विस्तारक यंत्रों, कुलर, कुर्सीयों, बिछावन आदि की समुचित व्यवस्था की, निर्धारित ग्यारह सौ ग्यारह की तो व्यवस्था नहीं जुटा पायें किन्तु करीब ५१ यज्ञ वेदियों पर समिधा, घी, सामग्री आदि व्यवस्था के साथ ही आयोजन स्थल के समीप ही भोजनशाला तथा भोजन हेतु करीब २,७०० वर्ग फूट के पांडाल की व्यवस्था पृथक की जहाँ सुबह-शाम प्रत्येक के लिये आठ दिन तक सुचारू रूप से भोजन व्यवस्था की गई।

आयोजन में विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन, पूर्ण रूप से दृष्टि बाधित एक कन्या का निःशुल्क विवाह, मातृशक्ति सम्मेलन, गो रक्षा एवं शाकाहार सम्मेलन, नशामुक्ति सम्मेलिन, कवि सम्मेलन, वीर सावरकर जयन्ति, महाराणा प्रताप एवं वीर छत्रसाल जयन्ति आदि पर विशेष आयोजन आयोजित

शेष पृष्ठ ३९ पर....

आर्यों के आधुनिक तीर्थ - आँखों देखी

मन को व्यथित कर निराशा उत्पन्न करने वाले कुछ समाचारों के बीच मन को अहल्लादित करने वाले भी समाचार यह है कि हमने वैदिक संसार के माह अप्रैल २०१३ अंक में पृष्ठ २५ पर आचार्य योगेन्द्र जी शास्त्री का लिखा लेख **'आर्यों के तीर्थ'** प्रकाशित किया था

इस लेख में महर्षि के जन्म-मृत्यु तथा शिक्षा से जुड़े अहम् स्थान टंकारा, मथुरा तथा अजमेर पर लेखक ने प्रकाश डाला था जो निःसंदेह आर्यों के तीर्थ कहे जा सकते हैं। किन्तु वर्तमान के पाश्चात्ययीकरण और भोगवाद के अंधानुकरण की आंधी में क्या आर्य क्या अनार्य सब बहे जा रहे प्रतित होते हैं और आवाजे सुनाई देती है कि आर्य समाज मरणासन्न को प्राप्त हो वैदिक धर्म सिद्धांत विलुप्त होने को है ऐसे वातावरण में **आर्यों में चेतना का संचार करने वाले अनेक केन्द्र भी फल-फूल रहे हैं जिन्हें आर्य जगत् के आधुनिक तीर्थ भी कहा जावे तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।** हमारी जानकारी में आये अनेक उत्कृष्ट संस्थानों से समय-समय पर हम अवगत करवाते रहते हैं किन्तु जिन्हें आधुनिक तीर्थ कहा जावें वे तीन हमारी जानकारी में निम्न है **आर्य वन विकास रोजड़, आर्य समाज गांधीधाम और सर्वहिताय सर्वोदय उच्च प्राथमिक प्राचीन वेद शिक्षा मन्दिर 'गुरूकुल' मलारना चौड़ (राज.)** आर्य समाज गांधीधाम के द्वारा संचालित प्रकल्प जीवन प्रभात तथा अन्य प्रकल्पों के विषय में समय-समय पर हमने पाठको को अवगत करवाया है। तथा मलारना चौड़ के विषय में भी हमने पूर्व में प्रकाशित किया है। किन्तु पिछले दिनों रोजड़ और मलारना चौड़ में आयोजित आयोजनों में जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ **जो देखा वह वैदिक संसार की आँखों देखी के रूप में प्रस्तुत है।**

आर्यवन रोजड़

गुजरात प्रान्त के साँबरकाठा जिले में मोड़ासा-अहमदाबाद राज्य मार्ग पर स्थित रोजड़ से करीब १ किलोमीटर की दूरी पर सुविधाजनक पहुँच मार्ग पर करीब १०० एकड़ भूमि पर चिकु आदि अनेक प्रजातियों के वृक्षों से आच्छादित है **आर्यवन रोजड़।** आर्य वन रोजड़ पर **दर्शन योग महाविद्यालय वानप्रस्थ साधक आश्रम एवं दयानन्द आर्य विद्यालय** नामक संचालित प्रकल्प कार्य कर रहे हैं दर्शन योग महाविद्यालय तथा वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्य जगत् के अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वे नाम है जो वैदिक सिद्धांतों को विश्व में आर्य विद्वान तैयार कर उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों एवं प्रचार-प्रसार द्वारा, उच्चकोटि का साहित्य बृहद मात्रा में प्रकाशित किया जाकर, समय-समय पर आर्य वन एवं अनेक स्थानों पर आयोजित शिविरों, कार्यक्रमों के माध्यम से टी.वी. तथा इण्टरनेट के माध्यम से गुंजायमान किया जा रहा है।

दर्शन योग महाविद्यालय

आर्यवन के प्राण माने जाने वाले स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक का संक्षिप्त परिचय दिये बगैर संस्था का परिचय देना अपूर्ण है।

स्वामी सत्यपति जी का जन्म नाम मुन्शी था आपका जन्म विक्रम संवत् १९८४ के लगभग हरियाणा के रोहतक जिले के फरमाना ग्राम में हुआ। आपके जन्म समय से लगाकर देश के विभाजन काल तक आपका परिवार इस्लाम मत का अनुयायी था। आपका परिवार अत्यन्त निर्धन और अशिक्षित था। परिणामतः आप विद्यालयीन शिक्षा से विमुख रहे।

देश के विभाजन काल में घटित हिंसक घटनाओं से उत्पन्न मृत्यु भय ने आपके मन में प्रश्न उत्पन्न किये कि **यह जीवन क्या है और मृत्यु क्या है? क्या यह शरीर सदा रहेगा अथवा इसका विनाश होगा? इस शरीर को सदा बनाये रखने के लिए संसार में कोई उपाय है वा नहीं? क्या मैं सदा जीवित रहना चाहता हूँ वा मरना चाहता हूँ? ये भूमि आदि लोक क्या सदा से विद्यमान है अथवा कभी इनकी उत्पत्ति हुई है? क्या ये अनन्त काल तक जैसे के तैसे बने रहेंगे अथवा कभी इनका विनाश होगा? यदि विनाश होगा तो पुनः ये किस अवस्था में चले जाएगें? क्या इन सबका अभाव हो जाएगा, सुक्ष्मावस्था हो जाएगी? धन-सम्पत्ति, शरीर भूमि आदि का स्वामी कौन है? इत्यादि जिज्ञासाओं ने आपको वैराग्य की ओर प्रवृत्त किया।**

पूर्व जन्म के उत्तम संस्कारों से युक्त महान् आत्माओं के जीवन में संसार में घटित घटनाएँ आकस्मिक परिवर्तन लाती है यह हमने अनेकों महापुरूषों के जीवन चरित्रों से अनुभव किया है वैसा ही कुछ स्वामी जी के जीवन में घटित हुआ। वैराग्य की ओर प्रवृत्त होने के बाद **आपके जीवन का प्रमुख अंग स्वाध्याय हो गया प्रारंभिक क्षणों में महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश ने आपको अत्यन्त प्रभावित किया** यद्यपि उस समय आपका भाषा ज्ञान (लिखना-पढ़ना) अत्यन्त न्यून था।

आपने अनेक आर्य विद्वानों के संग, गुरूकुलों के माध्यम से तथा वैदिक साहित्य स्वाध्याय से वैदिक धर्म का विस्तृत ज्ञान अर्जित किया। **आप करीब १२ वर्ष गुरूकुल झज्जर में रहे तथा करीब १३ वर्ष गुरूकुल सिंहपुरा, जिला-रोहतक में रहकर पठन-पाठन किया मीमांसा दर्शन का अध्ययन अजमेर में किया। गुरूकुल सिंहपुरा में स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक जी से आपने दिनांक ७ अप्रैल १९७० को संन्यास की दीक्षा ग्रहण की** संन्यास के पूर्व अनेक वर्षों तक आपने श्रद्धापूर्वक संन्यासी जीवन नियमों का पालन कर अपने आपको दृढ़ किया।

स्वामी जी ने देश-विदेश में सैकड़ों क्रियात्मक योग शिविर लगाये तथा वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार देश-विदेश के अनेकों स्थान पर किया। आपने उत्कृष्ट कोटि की अनेकों पुस्तकों की रचना कर वैदिक धर्म को गति प्रदान की।

आपने आर्य वन रोजड़ में १० अप्रैल १९८६ को दर्शन योग महाविद्यालय की स्थापना की जहाँ वर्ष १९८६ से १९९८ तक चार सत्रों में देश के १३ प्रान्तों के करीब ३२ ब्रह्मचारियों को दर्शन शास्त्रों उपनिषदों तथा आंशिक रूप में वेदों का अध्यापन करवाया तथा क्रियात्मक योग प्रशिक्षण प्रदान किया आपसे प्रेरणा पाकर **१३ युवा अखण्ड ब्रह्मचारी रहकर देश-विदेश के अनेकों क्षेत्रों में संस्कृत व्याकरण तथा दर्शन शास्त्रों को अध्ययन-अध्यापन करते हुए वैदिक धर्म का नाद बजा रहे हैं।**

वर्तमान में दर्शन योग महाविद्यालय के कार्य भार का निर्वहन आपके परम शिष्य **स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक** कर रहे हैं तथा स्वामीजी का सहयोग **स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी दर्शनाचार्य** कर रहे हैं। आपने दिनांक १५ जून के आयोजन में उपस्थितों को अवगत करवाया कि १ अक्टूबर २०१४ से एक विशिष्ट शिविर एक वर्ष की अवधी हेतु दर्शन योग महाविद्यालय में आयोजित किया जा रहा है इस शिविर में ध्यान, ज्ञान-विज्ञान तथा न्याय दर्शन की विशिष्ट कक्षाओं के द्वारा अध्यापन करवाया जावेगा।

(महाविद्यालय का वार्षिक प्रगति विवरण पृष्ठ २९ पर देखें)

वानप्रस्थ साधक आश्रम

वानप्रस्थ आश्रम की कार्य प्रशंसा से अनेक विद्वानों और साहित्य के माध्यम से अवगत था और पीछले करीब १२ वर्षों से अभिलाषा थी कि आर्य वन रोजड़ के दर्शन करूँ। करीब तीन क्रियात्मक योग शिविर के प्रवेश पत्र भेजने और अनेक बार पत्राचार के बावजूद आर्य वन रोजड़ पहुंचना संभव नहीं हो पाया। परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से वानप्रस्थ साधक आश्रम द्वारा आयोजित **दिनांक १५ जून २०१४ को न्यायदर्शन अध्यापन समापन एवं दीक्षान्त समारोह अवसर पर पहुँचने का सुअवसर प्राप्त हुआ।**

जैसी धारणा हृदय पटल पर अंकित थी उससे कही अधिक प्रत्यक्ष

पाकर मन मयूर नाच उठा **प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित वानप्रस्थ साधक आश्रम के कार्यों को शब्दों में समेट पाना संभव नहीं** है किन्तु जो प्रत्यक्ष देखा वह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर आर्यों से अनुरोध है कि वे अपने जीवन में इस तीर्थ के दर्शन अवश्य करें। **वानप्रस्थ साधक आश्रम अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य विद्वान् स्वामी सत्यपति जी के परम शिष्य आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी के कुशल नेतृत्व में संचालित है।**

वानप्रस्थ साधक आश्रम करीब **१२ एकड़ भूमि पर** संचालित है। **वानप्रस्थियों एवं अतिथियों के लिये सर्वसुविधा युक्त आवास** बने हुए हैं। **तीन मंजिला अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र** बना हुआ है जिसकी मध्य मंजील वातानुकूलित होकर लघु सत्संग व दैनिक कक्षायें संचालित होती है।

बृहद सभागार दो मंजिला बना हुआ जिसमें बृहद सत्संग तथा शिविरों का आयोजन किया जाता है। सभागार ध्वनी विस्तार यंत्रों से सुसज्जित है सभागार के बाहर की और पुस्तक वितरण केन्द्र है जहाँ पर हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, गुजराती तथा अन्य भाषाओं में अच्छे कागज पर मुद्रित साहित्य का विशाल भण्डार है। साहित्य पर अत्यन्त अल्प मूल्य मुद्रित होता है किन्तु ऐसा प्रतित नहीं होता कि साहित्य विक्रय किया जाता है। आर्यवन आने वालों को तथा साहित्य प्रेमियों को पार्सल द्वारा नि:शुल्क साहित्य वितरीत करते देखा गया है। वानप्रस्थ साधक आश्रम के **मुख्य प्रवेश द्वार पर चिकित्सालय** बना हुआ है जिसके बाद मध्य में प्रवेश द्वार के समीप प्रत्येक समय प्रहरी अपने कक्ष में उपस्थित रहता है। इसके बाद **भोजनशाला और विविध उपयोग के कक्ष** बने हुए हैं। भोजन शाला के समीप ही बृहद कार्यक्रमों में बृहद संख्या में उपस्थितों के लिये विशाल भोजन शाला तथा पीने के पानी की प्याऊ बनी हुई है। आश्रम के आखिरी छोर पर **विशाल आयोजनों में उपयोग हेतु विशाल संख्या में महिला-पुरूषों के लिये पृथक-पृथक स्नानागार एवं शौचालय** बने हुए हैं। आश्रम में संचालित समस्त प्रकल्पों पर पहुँच के लिये पक्की सिमेंटेड मार्ग बने हुए हैं तथा बीच की खाली भूमि पर सुव्यवस्थित कतार बद्ध वृक्ष लगे हुए हैं। पानी की पर्याप्त आपुर्ति हेतु दो मंजीला भवन की ऊँचाई के बराबर **पानी की टंकी** बनी हुई है अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र के सामने की ओर मूक पक्षियों के लिये **पक्षिघर** बना हुआ है।

गत वर्ष श्री कृष्ण जन्माष्टमी दिनांक २८.०५.२०१३ से शिक्षा अष्टाध्यायी, व्याकरण आदि वेदांङ्ग एवं योगदर्शन, न्यायदर्शन आदि उपांङ्ग का अध्ययन-अध्यापन ऋषि प्रणाली से प्रारंभ किया गया। इसी सत्र का व दीक्षांत समारोह का समापन दिनांक १५ जून को हुआ जिसमें २२ प्रबुद्ध ब्रह्मचारियों व अन्य वरिष्ठ नागरिकों को **आचार्य सत्यजित् जी दर्शनाचार्य द्वारा न्यायदर्शन का अध्यापन वात्स्यायन भाष्य सहित कराया गया जिसमें समय-समय पर लिखित परीक्षा ली गयी योग्यता अनुसार ११ ब्रह्मचारियों को न्यायाचार्य, ४ ब्रह्मचारियों न्याय विशारद तथा ७ ब्रह्मचारियों को न्यास प्राज्ञ की प्रमाण पत्र आर्यवन के प्राण स्वामी सत्यपति जी के हाथों प्रदान किये गये।** इस अवसर पर देश के सुदूर स्थानों से संन्यासी, विद्वत गण तथा आर्य जन उपस्थित हुए इसी अवसर पर दो ब्रह्मचारियों का डॉ. कमलेश कुमार जी अगिनहोत्री अहमदाबाद द्वारा समावर्तन संस्कार वैदिक विधि से सम्पन्न करवाया गया जो अद्‌भुत था।

आगामी वर्ष में करीब १० ब्रह्मचारियों को ग्यारह उपनिषद के अध्ययन उपरांत वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र) का अध्यापन ऋषि पद्धति से वेदानुकूल व्याख्या सहित नियमित रूप से स्वामी मुक्तानन्द जी परिव्राजक (व्याकरणाचार्य एर्व दर्शनाचार्य) द्वारा १२ जुलाई २०१४ से करवाया जाना प्रारम्भ होगा।

वानप्रस्थ आश्रम के प्रयासो से '**वैदिक आध्यात्मिक न्यास**' का गठन किया जाकर आर्यवन रोजड़ से दर्शन शास्त्रों का अध्यापन करने पश्चात् देश भर में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को समर्पित संन्यासियों एवं विद्वानों को संगठित कर वैदिक धर्म के प्रचार कार्य को सुदृढ़िकरण करने का प्रयास किया गया है जिसमें करीब १४० सदस्य वर्तमान में हैं। **दिनांक ०७ से ०९ फरवरी तक वैदिक आध्यात्मिक न्यास के समस्त सदस्यों का एक आयोजन आयोजित किया गया था।**

सर्वहिताय सर्वोदय उच्च प्राथमिक प्राचीन वेद संस्कृत शिक्षा मन्दिर 'गुरूकुल' मलारना चौड़ (राज.)

वैदिक संसार जून २०१४ के पृष्ठ क्र. ३३ पर तथा अप्रैल २०१४ पृष्ठ क्र. ३३ पर उपरोक्त संस्था और इसके संस्थापक स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के कार्यों को विस्तार से प्रकाशित किया जा चुका है।

भव्य यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं सत्संग सम्पन्न

उपरोक्त वर्णित संस्था राजस्थान प्रांत के सवाई माधोपुर जिले में लालसौठ मार्ग पर संचालित है। संस्था समिति द्वारा स्वामी ओमानन्द जी महाराज की प्रेरणा से **दिनांक २ से ६ जून तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ-सत्संग का आयोजन किया गया।** जिसमें योग प्रशिक्षक एवं मुख्य प्रवचन कर्ता के रूप में स्वामी धर्मदेव जी गुरूकुल कालवा, जिला-जिन्द हरियाणा से पधारे। आपने जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान भी किया।

यज्ञ ब्रह्मा एवं मंच संचालन का गरिमापूर्ण दायित्व आचार्य सोमदेव जी दर्शनाचार्य ऋषि उद्यान अजमेर ने किया। वेदपाठी के रूप में ब्र. अमित आर्य, हिसार (हरि.) से तथा ब्र. विवेक आर्य बदायूँ (उ.प्र.) से उपस्थित थे। भजनों का सुमधुर प्रवाह **श्री भानुप्रकाश जी शास्त्री एवं श्रीमती प्रभा शास्त्री बरेली (उ.प्र.) ने प्रवाहित किया। स्वामी आत्मानन्द जी तथा उनके सहयोगी आत्मज्ञानानन्द जी के प्रयासों से यह क्षेत्र आर्यों के एक आधुनिक तीर्थ का स्वरूप ले चुका है।**

वार्षिक यज्ञ-सत्संग तो कई स्थानों पर होते हैं सब जानते हैं, किन्तु मलारना चौड़ की स्थिति अन्य स्थानों से भिन्न है। कक्षा आठ तक संचालित आवासिय नि:शुल्क विद्यालय जहाँ प्रतिदिन वैदिक सिद्धांतों की आधुनिक शिक्षा के साथ घुट्टी ग्रहण करती भावी पीढ़ी तथा विशालकाय गगन चुंबी यज्ञशाला एवं विशाल परिसर जिससे प्रेरणा प्राप्त कर अनेकों ग्रामीण जन वैदिक सिद्धांतों के प्रति समर्पित हो रहे हैं। जहाँ हम देख रहे हैं कि अवकाश के दिनों में प्रात: एवं सायंकालीन सत्रों में भी सक्षम, समर्थ एवं शिक्षित लोगों के मध्य होने वाले यज्ञ-सत्संगों में लोगों की उपस्थिति को आयोजन कर्ता तरस जाते हैं। वहीं मलारना चौड़ में आयोजन के समय **यज्ञशाला में ८००-१००० सदस्यों की उपस्थिति** साधारण बात है तथा हमने यह भी देखा कि **४६ डिग्री तापमान में दोपहर के सत्र में साधारण पांडाल में हजारों की संख्या में उपस्थिति।** उपस्थितों हेतु भोजन-विश्राम हेतु कोई वी.आई.पी. व्यवस्था की आवश्यकता नहीं, साधारण व्यवस्था में भी किसी को कोई शिकायत नहीं। कार्यकर्ताओं की कोई कमी नहीं महिला और पुरूष प्रत्येक जन इस प्रकार भाग-भागकर आयोजन की व्यवस्था में योगदान दे रहे जैसे उनके अपने परिवार में कोई मांगलिक आयोजन हो रहा हो। जिसका सम्पूर्ण श्रेय जाता है सौम्य, सहज, सरल स्वामी आत्मानन्द जी को, स्वामी जी कार्यों के फलस्वरूप पिछले करीब २५-३० वर्षों में वैदिक धर्म सिद्धांतों की एक दृढ़ प्रतिज्ञ पीढ़ी तैयार होकर दूसरी पीढ़ी तैयार हो रही हैं।

जहाँ अनेकों व्यक्तियों के आत्म बल में वृद्धि हो रही हो उन स्थानों को तीर्थ नहीं कहें तो और क्या कहें? आप भी कभी जाइये निश्चित रूप से आपको भी इन आधुनिक तिर्थों पर जाने से ऊर्जा का संचार होकर आत्मबल में वृद्धि होगी ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है - **वैदिक संसार**

केन्द्र में आर्यसमाज का नेतृत्व हुआ मजबूत-ब्र. राजसिंह आर्य

स्वामी सुमेधानंद सरस्वती व सत्यपाल सिंह की विजय से आर्यजगत् में हर्षोल्लास

१६वीं लोकसभा में आर्य समाज के नेतृत्व को मजबुती मिली है। इससे न केवल आर्य समाज के कार्यों को बल मिलेगा अपितु देश को एक नई दिशा भी मिलेगी। इन अप्रत्याशित चुनाव परिणामों पर हम माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी और उनकी पुरी टीम तथा स्वामी सुमेधानंद सरस्वती और मा. सत्यपाल सिंह को हार्दिक बधाई देते हैं। ये विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य ने १६ मई को चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद कहे। ज्ञात रहे कि १६वीं लोकसभा में सीकर (राजस्थान) से आर्य जगत् के विख्यात् संन्यासी स्वामी सुमेधानंद सरस्वती और बागपत से सत्यपाल सिंह विजयी होकर पहुँचे हैं। उन्होंने आगे कहा इस समय देश की संस्कृति और सभ्यता पर भयंकर खतरा है। ऐसे समय में मा. नरेन्द्र मोदी जी का सत्ता संभालना निश्चित ही एक सकारात्मक कदम होगा। आर्य नेताओं को भी इस दिशा में विशेष कार्य करने की आवश्यकता है और उन्हें माननीय मोदी जी के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए।

मोदी जी की विकासात्मक युवा सोच और कुशल नेतृत्व भारत के लिए सुखद परिणाम लेकर आएगा। वर्तमान की अन्य विभिन्न समस्याओं जैसे भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, कमजोर शासन व्यवस्था और अन्य देशों द्वारा सीमा उल्लंघन जैसे गंभीर मुद्दों का भी समाधान हो पायेगा। **हमें आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि स्वामी सुमेधानंद जी और सत्यपाल सिंह जी माननीय मोदी जी के साथ मिलकर देशोत्थान के कार्यों को गति देंगे।**

नि:शुल्क चुम्बकीय चिकित्सा शिविर का समापन एवं वैदिक पाठशाला का शुभारंभ

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल की प्रेरणा से आर्य समाज देपालपुर के द्वारा दिनांक १ से १४ जून २०१४ तक विभिन्न रोगियों के लाभार्थ चुम्बकीय चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

डॉ. जितेन्द्र नागर, बी.ए.एम.जे.सी.सी.एम मुम्बई द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा शिविर और प्राकृतिक चिकित्सा प्रचार अभियान आई.एन.ओ. के सहयोग से उपरोक्त शिविर का आयोजन आर्य समाज मन्दिर देपालपुर पर किया गया।

चुम्बकीय चिकित्सा पद्धति में किसी प्रकार की औषधि नहीं दी जाकर मात्र चुम्बक द्वारा चिकित्सा प्रदान की जाती है तथा इसके कोई दुष्प्रभाव भी नहीं होते हैं। यह चिकित्सा पद्धति अति प्राचीन होकर अथर्ववेद में भी इसका उल्लेख बताया गया है। इस शिविर का समापन प्रकाश जी आर्य की अध्यक्षता एवं डॉ. डी. के. तनेजा अस्थिरोग विशेषज्ञ व पूर्व डीन एम.जी. मेडिकल कॉलेज के मुख्य आतिथ्य तथा श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य उपप्रधान-मध्यभारतीय प्रतिनिधि सभा के विशिष्टि आतिथ्य में दिनांक १४ जून को सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य समाज मन्दिर पर वैदिक पाठशाला (वाचनालय) का शुभारम्भ भी किया गया। देपालपुर क्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार एवं मानव सेवा कायों को समर्पित श्री गोविन्द राम जी आर्य देपालपुर प्रमुख प्रेरणा स्त्रोत तथा सूत्रधार होकर क्षेत्रीय सांसद श्रीमती सुमित्रा महाजन लोकसभा अध्यक्ष के जिला पंचायत प्रतिनिधि है, आपका सक्रिय प्रयास है कि वेदों की संसद में स्थापना की जाकर वेद वैश्विक धर्म ग्रन्थ घोषित किये जावें तथा गाय को राष्ट्रीय शाकाहारी पशु घोषित किया जावे। वर्तमान में आपने ग्रामों को नशामुक्त करने का अभियान भी चलाया है जिसके तहत अनेक ग्रामों में आर्य वीर दल की स्थापना कर युवकों को नशा मुक्त जीवन व्यतित करते हुए सम्पूर्ण ग्राम को नशा मुक्त करने का संकल्प दिलवा रहे हैं।

स्वतंत्रता पश्चात् प्रथम बार आर्य जगत् को सर्वाधिक केन्द्र में नेतृत्व का अवसर प्राप्त हुआ

संभवत: राष्ट्र की स्वतंत्रता के पश्चात् १६वीं लोकसभा निर्वाचन में आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म सिद्धांतों के प्रति सक्रिय सम्बन्ध तथा निष्ठा रखने वाले सदस्यों को प्रथम बार पर्याप्त संख्या में लोकसभा में पहुंचने का सुअवसर प्राप्त हुआ है जो निम्न है-

सीकर (राज.) से **स्वामी सुमेधानन्द सरस्वत**-बागपत (उ.प्र.) से **मा. सत्यपाल सिंह**-करनाल हरियाणा से **मा. अश्विनी कुमार चौपड़ा** (पंजाब केसरी के मुख्य सम्पादक), पश्चिमी दिल्ली से पूर्व मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा के सुपुत्र **मा. प्रवेश वर्मा**, दक्षिण दिल्ली से **मा. रमेश विधूड़ी** (प्रधान-आर्य समाज तुगलकाबाद), लातूर महाराष्ट्र से **डॉ. सुनील गायकवाड**, आँवला (उ.प्र.) से **मा. धर्मेन्द्र कश्यप** (पूर्व राज्यमंत्री), अमरोहा (उ.प्र.) से **मा. कंवरसिह तंवर** तथा पारसनाथ लेखी की सुपुत्री **मा. मिनाक्षी लेखी** आदि संभवत: इनके अतिरिक्त और भी सदस्य हों जिनकी जानकारी प्राप्त नहीं हो पाई है।

आशा है ऋषि दयानन्द भक्त इन सदस्यों की वर्तमान सदन में उपस्थिति से भारतीय संस्कृति और शिक्षा के गिरते स्तर पर रोक लगेगी तथा वैदिक धर्म सिद्धांतों की पुनर्स्थापना में सहायता प्राप्त होगी।

यहाँ यह भी शुभ समाचार है कि वर्तमान मानव संसाधन मंत्री स्मृति इरानी ने अपने मंत्रालय को इस विषय पर विचार करने को कहा है कि वैदिक अध्ययन को किस प्रकार प्रमुखता दी जा सके एवं शिक्षा प्रणाली में समावेश किया जा सके। उल्लेखनीय है कि **वर्तमान लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने ७ अगस्त २०१३ को वेदों को संसद में स्थापित करने की तथा गाय को शाकाहारी राष्ट्रीय पशु घोषित करने की आवाज सदन में पूर्व कार्यकाल में उठाई थी। वैदिक धर्म प्रहरियों के संसद में पहुँचने से महाजन की आवाज को मजबुती प्राप्त होगी ऐसी प्रबल आशा है।** -वैदिक संसार

आर्यसमाज राऊ के नवनिर्मित सभागार का शुभारम्भ

आर्य समाज राऊ, जिला-इन्दौर (म.प्र.) का पुनर्निर्माण करीब १३ लाख रूपये व्यय कर किया गया। उल्लेखनीय है कि राऊ में आर्य समाज की स्थापना वर्ष १९५४ में हुई थी। उपरोक्त निर्माण कार्य में आर्य जगत् के ख्यात नाम राऊ आर्य समाज के संस्थापक सदस्य अजय कुमार जी सेण्डो के सुपुत्र श्री अरूण कुमार जी एवं अनिलकुमार जी तथा खेड़ी वाले श्रीमती शांति देवी जी, रामनारायण मुनीम जी, शांतिदेवी सुले का विशेष आर्थिक सहयोग तथा अन्य महानुभावों के सराहनीय सहयोग द्वारा करीब ५ लाख रूपये प्राप्त हुए।

नवनिर्मित भव्य एवं सुसज्जित सभागार का शुभारंभ विधिवत देवयज्ञ द्वारा दिनांक २५.०६.२०१४ को पं. राम लाल जी महू के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बृहद संख्या में राऊ, महू तथा समीप के ग्रामों के आर्यजनों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रकाश जी आर्य महू, के प्रवचन तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राधेश्याम जी बियाणी तथा पं. सूर्यदेव जी शर्मा के विचारों का लाभ प्राप्त किया। शान्ति पाठ के पश्चात् कार्यक्रम का समापन हुआ।

नि:शुल्क चुम्बक चिकित्सा शिविर बड़नगर में

दिनांक १५ जुलाई से ५ अगस्त २०१४ तक

स्थान-गीताभवन, बड़नगर, जिला-उज्जैन (म.प्र.)

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल की प्रेरणा तथा आर्य समाज बड़नगर के सहयोग से गीता भवन बड़नगर द्वारा नि:शुल्क चुम्बक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक रोगीजन सम्पर्क करें।

स्वामी देवानंद जी के अथक प्रयासों का परिणाम है

जीवंत गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली – आचार्य रामस्वरूप शास्त्री

स्वामी देवानंद सरस्वती ने गुरूकुल आर्यनगर की स्थापना कर गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली को जीवंत रखने का सार्थक प्रयास किया। उनके पुण्य प्रताप से ही आज यह गुरूकुल अपना स्वर्ण जयंती वर्ष मना रहा है। हम स्वामी जी के पवित्र एवं कर्मठ जीवन से प्रेरित होकर उनके शिक्षित राष्ट्र के स्वप्न को साकार करने में अपनी आहुति दें। ये विचार गुरूकुल आर्यनगर के संस्थापक आचार्य एवं वर्तमान मुख्याधिष्ठाता रामस्वरूप शास्त्री ने **स्वामी देवानंद सरस्वती की २९वीं पुण्यतिथि के अवसर पर २० मई को गुरूकुल में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में कहे।**

प्राचार्य मानसिंह पाठक ने बताया कि **स्वामी देवानंद जी का जन्म हिसार जिले के ही मात्रश्याम ग्राम** के एक सामान्य परिवार में हुआ। उनके जीवन पर आर्यसमाज का विशेष प्रभाव था। उन्होंने गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षित राष्ट्र के निर्माण में अपना अथक योगदान दिया। **भारत भूमि को स्वतंत्र करवाने के लिए पूर्व उपप्रधानमंत्री देवीलाल जी के साथ मुल्तान जेल में भी रहे। १३ अप्रैल १९६४ को हिसार जिले के पहले गुरूकुल के रूप में गुरूकुल आर्यनगर की स्थापना की।** आज स्वामी जी द्वारा लगाया गया पौधा वटवृक्ष बन चुका है। आज गुरूकुल आर्यनगर से पढ़े हुए स्नातक विश्वभर में विभिन्न विश्वविद्यालयों, विद्यालयों, सुरक्षाबलों, योग एवं चिकित्सा सहित सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्रों में कार्यरत हैं। गुरूकुल प्रबंधक समिति के प्रधान और वर्तमान में सीकर लोकसभा क्षेत्र के सांसद स्वामी सुमेधानंद सरस्वती भी इसी गुरूकुल के स्नातक हैं। २० मई १९८५ को एक सड़क दुर्घटना में उनका देहावसान हो गया। उनका जीवन हम सब के लिए प्रेरणा का प्रदान करता है।

आयोजित श्रद्धांजलि सभा में गुरूकुल के कार्यकारी प्रधान रामजीलाल शर्मा पूर्व सांसद, महामंत्री अधिवक्ता लालबहादुर खोवाल, इन्द्रदेव शास्त्री, स्वामी सर्वानन्द, ब्र. दीपकुमार, अभिमन्यु आदि ने भी स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर गुरूकुल के अध्यापकों, छात्रों सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

आर्य समाज जुरेहड़ा, जनपद-भरतपुर, राजस्थान का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज जुरेहड़ा, जनपद-भरतपुर, राजस्थान का वार्षिकोत्सव दिनांक ३१-०३-२०१४ को बड़ी धूम-धाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रातःकाल प्रभात फेरी निकाली गई तथा देव यज्ञ किया गया। जिसमें नर-नारी व बच्चों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। **यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती-बरहाना, मथुरा थे।**

इस उत्सव में वैदिक कवि प्रख्यात् विद्वान् लेखक पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धांताचार्य-बहीन, पलवल (हरियाणा), श्री ओमप्रकाश पांचाल-कौडल जनपद पलवल, श्री जयदेव आर्य-बहीन, पलवल (हरियाणा) के प्रवचन व भजनोपदेश हुए।

श्रीयुत् पं. कर्णदेव गौड़, श्री डालचन्द शर्मा, श्री ब्रह्मदेव आर्य का विशेष योगदान रहा।

अन्त में शान्ति पाठ के पश्चात् कार्यक्रम का समापन किया गया।

-गोविन्द राम आर्य

प्रा. डॉ. चंद्रशेखर लोखंडे गौरव समारोह व अभिनन्दन ग्रंथ लोकार्पण सम्पन्न

राष्ट्रधर्मी डॉ. चंद्रशेखर लोखंडे जी का कार्य युवकों को प्रेरणायक-पूर्व सांसद जर्नादन वाघमारे

डॉ. चंद्रशेखर लोखंडे जी ने प्रतिकूल परिस्थितियों में गुरूकुलीय शिक्षा प्राप्त कर साहित्यसेवा एवं सामाजिक कार्यों में अपना योगदान दिया है, वह युवकों को प्रेरणा देने वाला है। ये विचार पूर्व सांसद तथा साहित्यिकार श्री जनार्दन वाघमारे जी ने डॉ. चंद्रशेखर लोखंडे जी के अभिनन्दन समारोह पर व्यक्त किए।

लातूर (महाराष्ट्र) के पत्रकार भवन में १ मई महाराष्ट्र दिन के शुभ अवसर पर डॉ. चंदशेखर लोखंडे जी का उनके आयु के ६५ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में उनको स्मृति चिन्ह, सम्मानपत्र तथा **१ लाख रूपयों की गौरव निधि प्रदान** कर नागरीक सत्कार किया गया इसी समारोह में राष्ट्रधर्मी डॉ. लोखंडे जी के गुणगौरव में प्रकाशित **अभिनंदन ग्रंथ का भी लोकार्पण पूर्व सांसद श्री जनार्दन वाघमारे एवं डॉ. सोमदेव जी शास्त्री तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानंद जी (पूज्य हरिश्चंद्र गुरूजी) के करकमलों द्वारा किया गया।** यह अभिनंदन ग्रंथ श्री अखिलेश आर्येन्दु जी के सम्पादकत्व में तथा श्री प्रभाकर देवजी के निर्देशन में श्री घूड़मल प्रह्लादकुमार आर्य प्रकाशन हिण्डौन सिटी राजस्थान से प्रकाशित किया गया। इस समारोह में उनकी पत्नी सौ. संध्या लोखंडे तथा माता श्रीमती त्रिवेणीबाई भी व्यासपीठ पर विराजमान थीं। नागरिकों की ओर से समर्पित १ लाख रूपयों की गौरव राशी उसमें २५ हजार अपनी ओर से जोड़कर सवा लाख की राशि **डॉ. चंद्रशेखर लोखंडे जी ने 'संस्कृति रक्षक मंच' संस्था को समर्पित की।** यह संस्था भारतीय वैदिक संस्कृति और सुपरंपराओं का संरक्षण और संवर्धन करने में तत्पर रहती है। सत्कार का उत्तर देते हुए डॉ. चंद्रशेखर लोखंडे जी ने कहा कि-मैने जीवन के अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों को पार कर आज इस सामाजिक एवं साहित्य के शिखर तक पहुँचने की कोशिश की है। **पं. नरेन्द्र जी एवं पं. प्रकाशवीर शास्त्री तथा आचार्य नंदकिशोर जी शास्त्री जैसे महानुभावों की सहायता से मैं गुरूकुलीय शिक्षा पूर्ण कर सका,** इन्हीं की अनुकंपा से मैं गुरूकुलीय ज्ञान को समाजोपयोगी बनाने में सक्षम हो सका। **मेरी संपूर्ण शिक्षा गुरूकुल घटकेश्वर हैदराबाद और गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में इन्हीं के सहयोग से हो सकी।** मैं इस ऋण को कभी नहीं चुका पाऊँगा। मुझे इस नागरी सत्कार से देव दयानंद के कार्यों को पूरा करने की शक्ति प्राप्त होगी। मैंने **'हैदराबाद मुक्तिसंग्राम का इतिहास'** इन्हीं प्रेरणाओं से प्रेरित होकर लिखा है। यह ग्रंथ 'श्री घूड़मल प्रह्लादकुमार आर्य प्रकाशन हिण्डौन सिटी राजस्थान से प्रकाशित हुआ है।

इस अवसर पर प्रसिद्ध **विद्वान् वक्ता डॉ. सोमदेव शास्त्री ने हैदराबाद की आजादी में आर्यों के योगदान पर तथा उस संबंध में डॉ. लोखंडे जी के योगदान पर प्रकाश डाला।**

इस कार्यक्रम का प्रस्ताविक भाषण श्री विजय दबड़गांवकर तथा सूत्रसंचालन विवेक सौताड़ेकर जी ने किया। आभार प्रदर्शन प्रा. विलास पुरी ने किया। कार्यक्रम के आयोजन में गौरव समारोह समिति के संयोजक अशोक तोगरे, दत्तात्रय मोर, पं. योगीराज भारती, प्रकाश हेरकर, जयप्रकाश दगड़े (सम्पादक पुण्य नगरी) प्रा. नरदेव गूड़े, शैलेश लोखंडे, देवकते, विश्वनाथ होलकूंदे, विजयकुमार दबड़गांवकर, साईनाथ कबले आदि ने सहयोग किया।

टंकारा ट्रस्ट के सौजन्य से सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का १३वाँ राष्ट्रीय शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट-टंकारा अपनी नियमित गतिविधियाँ उपदेशक महाविद्यालय, गौ-शाला, जन्मगृह प्रबन्ध, अतिथि शाला आदि संचालित कर रहा है, उपरांत समय-समय पर विशेष आयोजन भी करता है। जिनमें मेडिकल केम्प, विद्यार्थी प्रतियोगिताऐं एवं सहाय आदि सेवा कार्य भी शामिल हैं। इसी क्रम में **दिनांक १ से ८ जून-२०१४ तक सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का १३वाँ राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर ट्रस्ट परिसर में लगाया गया।** जिसमें शिविरार्थिनी और शिक्षिका-व्यवस्थापकिाऐं कुल मिलाकर १०० की संख्या में उपस्थित रहे। जिनके आवास एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से की गई।

शिविर का उद्घाटन प्रा. दयालमुनि आर्य (वेदों के गुजराती भाषांतर कर्ता) **ने ध्वज फहराकर किया। दीक्षांत समारोह राजकोट के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जयदेव जी आर्य की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। जिसके मुख्य अतिथि श्री रणजितसिंह परमार** (उपप्रधान गुजरात राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा) **थे।** दीक्षांत समारोह में जामनगर, राजकोट, गोंडल, गाधीधाम, बडोदरा, सुरेन्द्रनगर, मोरबी आदि स्थानों से आर्यसमाज के पदाधिकारी व टंकारा के सरपंच धर्मेन्द्र त्रिवेदी व स्थानीय जन शामिल हुए और बच्चियों को प्रोत्साहित किया। शिविर में गुजरात के विभिन्न स्थानों के अतिरिक्त दिल्ली से भी बहनें प्रशिक्षण लेने शामिल हुईं।

शिविर की दिनचर्या प्रात: ४:०० से रात्रि १०:०० तक अनुशासित ढंग से संचालित की गई। जिसमें शिविरार्थिनियों को सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्यनमस्कार, भूमिनमस्कार, आसन, लाठी, छूरी, रायफल शूटिंग, नियुद्धम्, सैनिक शिक्षा, बौद्धिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा आदि का प्रशिक्षण दिया गया। **सार्वदेशिक वीरांगना दल की प्रधान संचालिका साध्वी उत्तमा यति जी के नेतृत्व में** व्यायाम शिक्षक सत्यम् जी व अभिलाषा जी (जयपुर से) एवं कु. नेहा व कु. ऋतांशी (नई दिल्ली से) प्रशिक्षण देने उपस्थित रहें। अतिथि प्रशिक्षक के रूप में प्रा. भावेश जेतपरिया ने मनोविज्ञान व डॉ. जयंतिलाल जीवाणी ने आरोग्य विज्ञान का प्रशिक्षण दिया।

शिविर के दौरान सभी को मोरबी का प्रसिद्ध अजन्ता क्लोक (घड़ी) व फ्लोरिंग टाइल्स की फैक्टरी जिलटोप का भी भ्रमण कराया गया। जहाँ मशीनरी व उत्पाद की सूक्ष्म जानकारियाँ दी गईं। शिविरार्थिनी बहनों ने मोरबी का प्रसिद्ध झूलता ब्रीज (हेंगिंग ब्रीज) का भी आनन्द प्राप्त किया।

समापन कार्यक्रम में वीरांगनाओं ने प्राप्त प्रशिक्षण को शौर्य प्रदर्शन उपस्थितों के समक्ष किया। जिसे सराहा गया। इस अवसर पर विभिन्न विषयों में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त वीरांगनाओं को प्रमाणपत्र व पुरस्कार दिये गये। आगन्तुक विशिष्ट मानुभावों को भी प्रतिक चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

आचार्य रामदेव शास्त्री व ट्रस्ट के अन्य कर्मयोगियों ने शिविर व्यवस्था सम्भाली। शिविर का संयोजन हसमुख परमार ने किया।

आर्यसमाज का १३९वाँ स्थापना दिवस सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द चौक नारनौल, जिला-महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) द्वारा आर्य समाज का १३९वाँ स्थापना दिवस पूर्ण उमंग और हर्ष के साथ समारोह पूर्वक मनाया गया। **स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने समारोह** अध्यक्ष के रूप में समारोह को गरिमा प्रदान की, **यज्ञ ब्रह्मा पं. रमेश जी शास्त्री** ने देवयज्ञ सम्पन्न करवाने का दायित्व निर्वहन किया, यज्ञ के यजमान श्री राजेन्द्र जी मड़लाना, श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य आदि रहे।

महर्षि दयानन्द चौक पर महर्षि की प्रतिमा स्थापित करने का प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया गया। वहीं पर बस अड्डा एवं एक यात्री प्रतिक्षालय के रूप में एक कार्यालय भी बनाया जाना प्रस्तावित है। जहाँ पर प्रतिमास की प्रथम दिनांक को यज्ञ-सत्संग किये जाने की योजना भी है।

कप्तान जगराम जी आर्य ने आर्य समाज की स्थापना एवं उसके द्वारा किये गये कार्यों पर प्रकाश डाला, मनफूल सिंह जी आर्य एवं कुमारी दिव्या ने मधुर भजन की प्रस्तुति दी। समारोह व्यवस्था में श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। महाशय फूलचन्द जी आर्य-मकुन्दपुरा, महाशय नन्दराम वैद्य-बलाहाकलाँ, सतीश आर्य, सूबेदार महावीर प्रसाद आर्य विशेष रूप से उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है की निजामपुर और नाँगल चौधरी जाने वाले मार्ग के इस चौक का नाम दयानन्द चौक किये जाने का विचार पी. डब्लयू डी. के अधिकारी सत्यवीर जी के समक्ष कप्तान जगराम जी आर्य ने रखा। आर्य समाज संघीवाड़ा की ओर से **१ मई २०११ को इस चौक पर हवन का आयोजन किया गया, जिसमें हरियाणा सरकार के मुख्यमंत्री भूपेन्दसिंह हुड्डा यजमान बनें। सुभाष आर्य द्वारा मांग पत्र प्रस्तुत करने पर मुख्यमंत्री जी ने उपायुक्त को आदेश देते हुए तत्काल प्रभाव से इस चौक का नाम दयानन्द चौक किया था।**

इस कार्य में आर्य समाज मौहल्ला खड़खड़ी एवं वेदप्रचार मण्डल की भी सराहनीय भूमिका रही। वर्तमान में वेद प्रचार मण्डल जिला-महेन्द्रगढ़ के अध्यक्ष रोशनलाल आर्य एवं मंत्री श्री वेदप्रकाश जी हैं जिनके समस्त सहयोगी वैदिक सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार को समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं।

पृष्ठ ३४ का शेष....

किये गये मातृशक्ति सम्मेलन में **स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. निरजा पौराणीक द्वारा महिलाओं में व्याप्त रोगों विशेषकर गर्भाधान के समय व्याप्त भ्रान्तियों का निराकरण करते हुए अनेक जानकारियों से अवगत करवाया जाना सराहनीय एवं प्रभावी रहा।**

योगाचार्य उमाशंकर जी सूरत द्वारा प्रात: पाँच से सात बजे तक आसन, प्राणायाम, व्यायाम का प्रशिक्षण दिया गया तथा रोग निवारण हेतु आयुर्वेदिक औषधियाँ उपलब्ध करवाई गई। **श्रीमती अनिता पांचाल द्वारा ऋषि दयानन्द के जीवन में घटित घटनाओं की स्वहस्त निर्मित बृहद आकार के फ्रेमिंग किये हुए करीब ३१ चित्र की प्रदर्शनी आकर्षक थी।**

इन्दौर शहर **विधायक महेन्द्र हार्डिया, श्री सुदर्शन जी गुप्ता तथा नगरीय प्रशासन मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय की धर्मपत्नी श्रीमती आशा विजयवर्गीय,** आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के उपप्रधान तथा इन्दौर संभाग प्रभारी **श्री गोविन्दराम आर्य,** लक्ष्मण सिंह जी राठौड़, पारिवारिक यज्ञ माला की पूर्व प्रधान श्रीमती राठौड़ एवं मंत्री श्रीमती हेमलता लोनसरे, श्रीमती रश्मी मेहता, श्री प्रकाश आर्य, श्री गुणवन्त सिंह जी लोनसरे, नगर आर्य समाज के प्रधान विजय प्रकाश जी गोयल, आर्य समाज नान्द्रा के प्रमुख डालूराम जी आर्य, आर्य समाज बागली से श्री भाटी जी, सिरोंज से आर.सी. चन्देल, आर्य समाज नागदा के प्रमुख कमल पटेल, स्थानीय कविगण आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहें।

श्री इन्द्र पांचाल जी, श्रीमती अमिता पांचाल, आर्य समाज संयोगितागंज के प्रधान वेदरत्न जी, मंत्री-श्री मनोज सोनी जी, पारिवारिक यज्ञमाला के श्री बलराज सबलोक जी, आर्य समाज मल्हारगंज के पूर्व मंत्री श्री संजय जी आर्य, श्री देवनारायण सोनी जी, ओमप्रकाश जी आर्य 'सेण्डो', श्री आर. के. शर्मा जी, वेद विद्या मन्दिर धरमपुरी के संयोजक - श्री मोहनलाल जी शर्मा आदि का आयोजन की व्यवस्था में सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। समारोह संचालन पं. संदीप वेदालंकार तथा पं. भानुप्रताप वेदालंकार द्वारा किया गया।

पं. भानुप्रताप वेदालंकार ने समस्त विद्वानों, दानदाताओं, कार्यकर्ताओं एवं उपस्थित जनों का आभार व्यक्त किया।

दिनांक -१७.०४.२०१४

मान्य सम्पादक जी, नमस्ते।

आशा है कि ईश कृपा से स्वस्थान सानन्द होंगे। संयोग से एक दिन ''**वैदिक संसार**'' पत्रिका हाथ लगी। पढ़ने पर मन खुशी से नाच उठा। यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि जांगिड समाज की ओर से ऐसा श्रेष्ठ कार्य करने का प्रयास किया जा रहा है कि हम लोग समाज में पुन: अपना गौरवमय एवं सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने में सफल हो सकें। **यह सत्य है कि कभी हमारे समाज में शिल्पी वर्ग को बड़ी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था,** उनकी आय के भी अच्छे स्त्रोत थे और समाज का एक महत्वपूर्ण अंग उन्हें माना जाता था। परन्तु **जब से वैदिक मर्यादायें भ्रष्ट हुईं, जन्मना जाति को ऊँच-नीच का आधार माना जाने लगा, तथाकथित ब्राह्मणवाद का प्रभाव समाज पर व्याप्त हुआ तो हमारे लोग उपेक्षा के शिकार हुए। हमारे लोगों ने भी पढ़ना-लिखना छोड़ कर मजदूरी के कार्य को अपनाया** जिसका परिणाम यह हुआ कि हमें हीन दृष्टि से देखा जाने लगा। धीरे-धीरे समाज का यह उच्च वर्ग एक अत्यन्त पिछड़ा वर्ग बन गया और दूसरों की दया पर आश्रित हो गया। **रूपये पैसे की अपेक्षा मुट्ठी भर अनाज और थोड़े से चारे के बदले में पूरे वर्ष तक हम लोगों को दूसरों के लिये मजदूरी करके उनका मुँह तकने के लिये विवश होना पड़ा।** जब फसल कटने का समय आता तो उस समय खेत से जाकर **पेट भरने के लिए कुछ अन्न और पशुओं के लिये एक गठरी भूसे की उठाने का समय भी हमने अपनी-अपनी आखों से देखा है।** इस दान के बदले में पूरे छह महीने तक अपने घर का प्राय: सभी कार्य नि:शुल्क करवाने का अवसर शोषक वर्ग को मिल जाया करता था। छह महीने के उपरान्त अगली फसल पर फिर यही प्रक्रिया दोहराई जाती थी। कितना अज्ञान था हम लोगों में, हम इसको ही जीवन चलाने का एक साधन मान कर इसमें प्रसन्न रहना मानते थे। परन्तु धीरे-धीरे जागृति आई और लोगों ने इस शोषण के विरोध में आवाज उठानी प्रारम्भ की। मुझे याद है कि जब हमारे बड़े भाई ने इस प्रथा का अन्त किया तो कई परिवारों ने पुराने रिश्तों की दुहाई दी कि यह तो पीढ़ियों से चली आ रही परम्परा है और आपके पूर्वज भी इसी प्रकार से इसका निर्वहन करते आये हैं अत: आप इसे क्यों तोड़ रहे हैं? परन्तु उन्होंने बलपूर्वक यह प्रथा समाप्त की और उनकी देखा-देखी अन्य परिवारों ने इस प्रथा का परित्याग किया। **काम के बदले में एक फसल पर एक गठरी अनाज की नहीं वरन् काम का मूल्य मांगा जाने पर हमें अच्छी खासी परेशानी का सामना करना पड़ा।** लोगों ने काम देना बन्द कर दिया, परन्तु जब अन्य स्थानों से भी उनको वही उत्तर मिला तो धीरे-धीरे वे सीधे रास्ते पर आने लगे।

अपने लोगों ने धीरे-धीरे अपना संगठन बनाया और मान-सम्मान का जीवन जीने के लिये विचार-विमर्श होने लगे। यह एक शुभ संकेत था। आने वाले समय की चुनौतियाँ इसमें भरी पड़ी थी। हमारे लोगों ने चुनौतियों का सामना भी किया और सफल भी रहे। **आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी महाराज द्वारा किया गया प्रचार कार्य एवं उनके अनुवर्ती अन्य उच्च कोटि के विद्वानों एवं विचारकों द्वारा दिये गये जागरण के सन्देश ने शिल्पी वर्ग के उत्थान में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।** जन्मना जातिगत ऊँच-नीच, भेदभाव एवं शोषण की प्रथा को एक करारा झटका लगा, लोगों का स्वाभिमान जागा और महर्षि दयानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित उच्च आदर्श जीवन में स्थान पाने लगे। यद्यपि जांगिड़ समाज में अधिकतर लोग अभी भी वैदिक विचारधारा के नहीं हैं परन्तु आपका इस दिशा में यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम है। **यदि किसी प्रकार से हमारा जांगिड समाज इस वैदिक विचारधारा को अपना सके तो यह एक महान कल्याण का कार्य होगा। क्योंकि वैदिक धर्म का ही एकमात्र ऐसा मार्ग है जिसके द्वारा मानव का सर्वांगीण विकास सम्भव है।** जहाँ व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ सामाजिक जीवन को भी ऊँचा उठाने की बात कही जाती है। **महर्षि दयानन्द जी ने तो आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य ही लिखा है कि संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना ही हमको अभिष्ट है।**

आज यदि कुछ ऐसा कार्यक्रम बनता है कि जिससे हम लोग अपने लोगों को इस ओर लाने का कुछ ठोस कार्य करें कि जिससे हमारे लोग युगों पुरानी शोषण करने वाली दोषयुक्त प्रणालियों एवं कुप्रथाओं से मुक्ति पा सकें तो हम लोग वास्तव में उनकी कुछ सेवा करने का सौभाग्य पा सकेगें। **अत्यन्त आश्चर्य का विषय है कि जिन लोगों ने हमारा शोषण किया, हमें नीच बताया और हम पर अत्याचार किये हम उन्हीं की बातों को आज भी शिरोधार्य करने में स्वयं को धन्य मानते हैं। हम आज भी तथाकथित ब्राह्मणशाही को 'दादा' मानते हैं और उन्हीं की यथार्थ दूषित परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों को अपनायें हुए हैं। हमें अपने भाईयों को इस जंजाल से निकालना होगा** और उनके उत्थान हेतु कुछ कार्यक्रम करने होगें, जिनमें से मैं कुछ नीचे लिख रहा हूँ।

१. अपने जांगिड समाज के लोगों के कुछ शिविर समय-समय पर अलग-अलग स्थानों पर लगे जिनमें उनके अन्दर वैचारिक क्रान्ति जाग्रत करने का कार्य किया जाये।

२. अपने ही कुछ लोगों को पुरोहित का प्रशिक्षण देकर तैयार किया जाये और अपने लोग उन्हीं के द्वारा अपने अभीष्ट कार्यों को (विवाह आदि) सम्पन्न करवायें।

३. जहाँ अपने लोग पर्याप्त मात्रा में सम्पन्न हैं वहाँ पर अपने विद्यालय चलाये जायें जिसमें अपने ही समाज के लोगों को शिक्षक के रूप में रखा जाये। शिक्षकों को भी समय-समय पर प्रशिक्षित किया जाये।

४. जहाँ कहीं भी जांगिड समाज के सम्मेलन आदि हों वहाँ पर लोगों को एकजुट होकर कार्य करने की प्रेरणा देने के साथ-साथ पाखण्डों से बचकर आत्मोत्थान करने के लिये ठोस कार्यक्रम बनाये जायें।

५. अनेकों कुरीतियाँ जो इस समय समाज में प्रचलित हैं यथा दहेज, कन्या भ्रूण हत्या, नशे, आधुनिकता का अन्धाधुन्ध अनुकरण (पश्चिमी सभ्यता का) इनको दूर करके आदर्श जीवन जीने के लिये विभिन्न स्तरों पर कार्यशालाओं का आयोजन किया जाये।

६. जांगिड समाज के जो श्रेष्ठ विद्वान् इस समय आर्य जगत् में हैं उनसे विशेष सहायता उपरोक्त कार्यों के लिये ली जा सकती है। यह कार्य जांगिड सभा के उद्देश्यों में सम्मिलित किया जाना चाहिये।

मैं स्वयं इस कार्य के लिये समय देने को तैयार हूँ और अपनी सेवायें उपरोक्त कार्यों के लिये सहर्ष देने के लिये सदैव तत्पर रहूँगा। यद्यपि

विद्यालय आदि का कार्य कुछ कठिन है तथापि अन्य कार्यक्रम तो चलाये ही जा सकते हैं। मुझे विश्वास है कि हमारे मान्य अन्य विद्वान् भी इस कार्य के लिये अपना अमूल्य योगदान देने में हिचकिचायेंगे नहीं। कोई भी कार्यक्रम एक बार चलाना, शुरू करना कठिन अवश्य होता है परन्तु यदि संगठित होकर कार्य करेगें तो उसका परिणाम सुखद ही होगा।

आशा है कि हमारे प्रबुद्ध भाई इस ओर ध्यान देकर अपने आने वाली सन्तानों के जीवन को सरल, श्रेष्ठ एवं सम्मानयुक्त बनाने के लिये अवश्य ही कुछ करेगें। **आने वाला समय सभी के लिए एक चुनौति भरा एवं संघर्ष का है और इसमें उन्हीं की विजय होगी जो अपने को दूसरों से श्रेष्ठ सिद्ध करना जानते होगें।** ईश्वर ने तो सब मनुष्यों को समान ही बनाया है परन्तु जो अपनी शक्तियों की पहचान कर उन्हें जाग्रत कर लेते हैं वे आगे बढ़ते हैं और दूसरे पिछड़कर अनेक कष्ट उठाते हैं। **–रामफल सिंह आर्य**

महामंत्री–आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र., सुन्दर नगर, जिला–मण्डी (हि.प्र.)

— — — — — — —

दिनांक –१४.०४.२०१४

आदरणीय सम्पादक जी एवं सुखदेव जी सादर नमस्ते।

आपके लगातार मिल रहे सहयोग के लिये मैं आपका आभारी हूँ। वैदिक संसार एक स्तरीय पत्रिका है। **इसका प्रत्येक अंक संग्रहणीय है। ऐसा मैं इस आधार पर कहता हूँ क्योंकि मेरा ५० से अधिक पत्रिकाओं से नाता है** जिनमें मैं भी लिखता हूँ। आपने जीवन को प्रगत करने वाले हर विषय की रचनाओं का संकलन प्रस्तुत किया है निश्चित ही यह पत्रिका बहुत प्रगति करेगी।

जनवरी २०१४ के अंक का संपादकीय इतना उत्तम था कि जिसकी प्रशंसा के लिये मुझे शब्द नहीं सूझ रहा। **इतना सही संपादकीय आज तक मैंने किसी पत्रिका में नहीं पढ़ा,** इसे मैंने अनेकानेक बार पढ़ा। शेष कुशल।

–गिरीश त्रिवेदी, पुणे (महा.)

— — — — — — —

सम्पादक महोदय, 'वैदिक संसार', इन्दौर (म.प्र.)

महोदय, सादर प्रणाम।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। वैदिक संसार का अक्टूबर–२०१३ का अंक प्राप्त हुआ। भेजने हेतु धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर उत्कृष्ट है। वेद हमारे आधार ग्रन्थ हैं किन्तु आज ये कहते हुए दुःख होता है कि हम अपने आधार से अलग होते जा रहे हैं। फिर यह जानकर प्रसन्नता होती है कि आप जैसे विद्वान् इस विद्या का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। पत्रिका में प्रकाशित लेख उत्कृष्ट हैं। सभी लेखक साधुवाद के पात्र हैं। पत्रिका का दूसरा वर्ष पूर्ण होने पर आपको शुभकामनायें।

–आचार्य डॉ. प्रदीप द्विवेदी, प्रधान संपादक–'अक्षरा वाणी'

कानपुर रोड, लखनऊ (उ.प्र.)

— — — — — — —

दिनांक –०८.०४.२०१४

सम्माननीय शर्मा जी, प्रकाशक, सम्पादक एवं स्वामी

'वैदिक संसार' मासिक पत्रिका, इन्दौर (म.प्र.), सप्रेम नमस्ते।

अत्र कुशलम् तत्रास्तु।

नम्र निवेदन है कि आपकी प्रिय पत्रिका 'वैदिक संसार' मुझे मिल रही है। **आपकी इस पत्रिका में ज्ञान वर्धक एवं जीवन निर्माण की पर्याप्त सामग्री होती है, जिसे पढ़कर धर्म प्रेमी जनता लाभान्वित होती है।** इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

–नन्दलाल निर्भय, पलवल (हरि.)

दिनांक –१४/०५/२०१४

मान्यवर सम्पादक महोदय, वैदिक संसार मासिक पत्रिका, इन्दौर।

सादर नमस्ते।

आप आर्य जगत् का सर्वप्रथम मल्टीमीडिया कल्प **'विचार'** से सुविदित है। आपको हमारे कार्यालय से समय–समय पर विचार की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी जाती रही है।

विशेष सूचनार्थ – ''महर्षि दयानन्द सरस्वती'' द्वारा पुन: प्रस्थापित वैदिक विचारधारा को पूरे विश्व में मल्टीमीडिया के माध्यम से प्रसारित कर घर–घर तक पहुँचाने के उद्देश्य से दि. २५ अगस्त २०१२ से **'विचार'** ने उच्च कोटि के वैदिक प्रवचन एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित लघु फिल्मों का साप्ताहिक प्रसारण **प्रत्येक शनिवार रात्रि ९:३० बजे से १०:०० बजे तक** सुप्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय **धार्मिक चैनल आस्था पर चल रहा है।**

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी अत्यंत सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है। परिणाम स्वरूप विचार ने इन कार्यक्रमों का **दैनिक प्रसारण आस्था चैनल पर शुरू करने का निर्णय किया है। जिसमें १ जून २०१४ से हर रोज रात्रि ९:३० बजे से इन कायक्रमों का नियमित प्रसारण** शुरू हो जाएगा।

आपसे हमारा विनम्र निवेदन है कि इस समाचार को आप अपनी सुप्रसिद्ध पत्रिका में यथा स्थान पर छाप कर पूरे आर्य जगत् को इससे अवगत कराने का कष्ट करें।

आपके सकारात्मक सहयोग की अपेक्षा सहीत।

–धर्मेश आर्य, कार्यकारिणी निर्देशक

विचार टेलिविजन नेटवर्क, मुम्बई

— — — — — — —

दिनांक ०२/०५/२०१४

सम्पादक महोदय, 'वैदिक संसार' पत्रिका, इन्दौर (म.प्र.)

श्रीमान्, सविनय निवेदन है कि मैंने **'वैदिक संसार'** पत्रिका के आजीवन शुल्क के तौर पर रुपये २१००/– (दो हजार एक सौ मात्र) की रकम पत्रिका के बैंक खाते में जमा की है। मुझे 'वैदिक संसार' पत्रिका का आजीवन ग्राहक तथा पाठक बनाने का कष्ट करेंगे।

'वैदिक संसार' पत्रिका पढ़ने से वैदिक विचार परिमार्जित होते हैं तथा घर के सभी सदस्यों में वैदिक विचारधारा अनुप्राणित होती है। आपके एक अकेले के अर्थात् पण्डित सुखदेव शर्मा जी के प्रयत्नों से यह पत्रिका फल–फूल रही है। **हम सभी का नैतिक कर्तव्य है कि हम सभी इसके आजीवन ग्राहक बन करके इसे और भी पल्लवित करें।**

–वेदरूचि रामचन्द आर्य, गांधीधाम (गुज.)

— — — — — — —

दिनांक –मई २०१४

श्रीमन्महोदय। सादर ओ३म् नमस्ते।

आपके द्वारा अर्थ श्रम से प्रकाशित मासिक पत्रिका **'वैदिक संसार' के सार गर्भित, प्रेरणाप्रद एवं वैदिक ज्ञान से ओत्–प्रोत् लेखों को पढ़कर हार्दिक आनंद की सीमा नहीं रहती।** मेरे मानस शब्द कोष में तो वे शब्द भी नहीं हैं। जिनके माध्यम से मैं आपको और आपके सहयोगी बन्धुओं को साधुवाद व्यक्त कर सकूँ। इस पत्र के माध्यम से सुलेखों के प्रेषक महामनिषियों साधु संन्यासियों आर्य विद्वानों को भी मैं श्रद्धावनत हो नमन करना चाहता हूँ। आप और आपका वैदिक संसार अहिर्निशं प्रगति पथ पर अग्रसर हो ऐसी मंगल कामनाएँ प्रेषित कर रहा हूँ। इति शुभम्।

–दयराम वेदपथी, बदायूँ (उ.प्र.)

वेदनानुकूल-शोक सूचनाएँ

आचार्या डॉ. पुष्पावती का निधन - मातृ मन्दिर कन्या गुरूकुल, डी. ४५/१२९, नईबस्ती, रामापुरा, वाराणसी की संस्थापिका, अध्यक्षा, आचार्या डॉ. पुष्पावती जी का दिनांक २ मई २०१४ को ८८ वर्ष की आयु में निधन हो गया। अन्तिम संस्कार दिनांक ३ को वाराणसी के राजा हरिशचन्द्र घाट के गंगा तट पर पूर्ण वैदिक रीति से गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियों ने किया।

वैदिक शान्ति यज्ञ दिनांक ११.०५.२०१४ को गुरूकुल प्रांगण में डॉ. गायत्री आर्या एवं डॉ. सरस्वती देवी चतुर्वेदा के आचार्यत्व में गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा वेद मंत्रों का पाठ कर किया एवं श्रद्धान्जलि सभा सम्पन्न हुई। उक्त अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य एवं महामंत्री श्री विनय आर्य सहित वाराणसी के आर्यजन सहित गणमान्य लोग उपस्थित थे, जिन्होंने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

वैदिक सिद्धांतों की मशाल शतायु श्रीमती नर्मदाबाई आंजना का निधन

वैदिक सिद्धांतों के कर्मठ अनुयायी याज्ञिक श्री शिवसिंह जी आंजना, निवासी-मूंजाखेड़ी की माता **नर्मदाबाई** जिन्होंने अपने जीवन के १०७ वर्ष पूर्ण कर सामान्य रोग को अंगीकार कर मृत्यु का वरण कर अपने जीवन को सार्थक बना दिया।

वें अपने जीवन काल में कठोर परिश्रम के साथ परिवार को आदर्श बनाने का कार्य करती रहीं। उनकी सत्प्रेरणा व गृह संचालन से सभी पारिवारिक सदस्य सभी क्षेत्रों में नक्षत्रों के समान कार्य कर सामाजिक यश पताका में अग्रणी हैं। उनके पुत्र श्री शिवसिंह जी आर्य समाज सिद्धांतों के प्रचारकों में नींव के पत्थर कहे जाते हैं। माताजी के १०५ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आपके प्रपौत्र चि. सत्यदेव के विवाह के मांगलिक सुअवसर पर माता जी का विशेष अभिनन्दन शताब्दी समारोह स्वरूप आयोजित किया गया था।

माताश्री की अंतिम अभिलाषा यह थी कि उनका अंतिम संस्कार वैदिक पद्धति से किया जावें, जो उपस्थित समुदाय में संस्कारों का दीपक प्रज्वलित होकर प्रेरणामय बनें। उनकी इच्छानुसार अंतिम संस्कार की प्रक्रिया आर्य समाज नागदा एवं महिदपुर के विद्वानों द्वारा सम्पन्न की गई। संस्कार समापन के पश्चात् उपस्थित अपार जनसमूह के साथ गणमान्य नागरिकों ने माता जी को श्रद्धासुमन अर्पित किये। सम्पूर्ण अंतिम संस्कार का निर्देशन आर्य समाज नागदा के प्रधान व स्थानीय आर्य समाज संस्था के अध्यक्ष डॉ. श्री मनोहरलाल सोनी ने किया।

साप्ताहिक सत्संग रविवार को आर्य समाज महिदपुर के सदस्यों ने शांति यज्ञ के साथ माता जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

परमात्मा को कभी मत भूलो - प्रसिद्ध शिक्षाविद् **श्री कालूराम जी तिवारी** निवासी-आली ब्राह्मण, जनपद-पलवल के दिवंगत होने पर दिनांक ३०-०४-२०१४ को देवयज्ञ उपरान्त श्रद्धांजलि सभा के अवसर पर वैदिक विद्वान् पं. नन्दलाल निर्भय ने कहा कि जगत पिता जगदीश्वर ने हम सबको मनुष्य का जन्म देकर शुभकर्म करने का अवसर दिया है इसलिए हमें परमात्मा का उपकार मानना चाहिए और परोपकारी बनना चाहिए। इस अवसर पर श्री चोखराम सरपंच, श्री शंकर लाल शर्मा, शिक्षा अधिकारी पलवल ने भी शुभ कर्म करने की अपील की। शांतिपाठ के पश्चात् श्रद्धांजलि सभा का समापन किया गया।

श्री नाथूलाल जी जांगिड, सुपुत्र-श्री शिवलाल जी जांगिड (झटावा) **निवासी**-मुखर्जी चौक, मन्दसौर, **मूल निवासी**-रमावली, जिला-चित्तौड़गढ़ (राज.) का ८४ वर्ष की आयु में दिनांक १७.०५.२०१४ को निधन हो गया।

आप कुशल शिल्पी, सहज, सरल, मिलनसार व्यक्ति थे। आपका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से श्री रवीन्द्र जी शर्मा, श्री रमेशचन्द्र जी राव, श्री कृपाशंकर जी शर्मा के मार्गदर्शन में सम्पन्न किया गया। आप अपने पीछे एक मात्र सुपुत्र श्री कृष्णकुमार उर्फ किशनलाल शर्मा का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। आपके सुपुत्र आर्य समाज की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

श्री शेराराम सोलंकी, पुत्र श्री अन्नाराम जी सोलंकी, निवासी-कॉपरेटीव मार्केटींग सोसायटी गोदाम के पीछे, चोहटन रोड़, हमीरपुरा बाड़मेर का निधन दिनांक ०६.०४.२०१४ रविवार को हो गया है।

शोकाकुल - अन्नाराम (पिता), मंगलाराम, नवलाराम, हरिशचन्द्र (काका), मगाराम, हंजारीराम (**प्रतिनिधि-वैदिक संसार**), मोतीराम, मदनलाल (भाई), जोगाराम, रमेश कुमार (पुत्र), विक्रम, बसन्त (पौत्र), मोहनलाल, हनुमान, पुरूषोत्तम (काकाई भाई) एवं समस्त अर्जुनोणी सोलंकी परिवार बाड़मेर।

ससुराल पक्ष - चुन्नीलाल, स्व. श्री जेठाराम, जगदीश, बंशीलाल पुत्र श्री गोरखाराम जी परमार।

श्री रामचन्द्र जी सलूण, पिता स्व. श्री देवीलाल जी सलूण निवासी संजय नगर देवास, मूल निवासी-ओढ़, तह.-सोनकच्छ का निधन दिनांक २४.०६.२०१४ को करीब शतायु अवस्था में हो गया। आप कर्मठ, जुझारू, संघर्षशील, मिलनसार, आध्यात्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपके अंतिम संस्कार में बृहद संख्या में उपस्थित होकर स्नेहीजनों ने अंतिम विदाई दी तथा शोकसभा में गणमान्य महानुभावों ने अपनी भावांजलि देते हुए अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

आप अपने पीछे पांच सुपुत्र श्री नन्दकिशोर, श्री रामचन्द्र, श्री सत्यनारायण, श्री बाबुलाल, श्री कैलाशचन्द्र (पायलट) का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

समस्त दिवंगत आत्माओं के प्रति वैदिक संसार परिवार अपनी भावांजलि व्यक्त करता है तथा शोक-संतप्त परिजनों के हेतु गहन शोक-संवेदना व्यक्त करता है -सम्पादक

माताश्री का स्मृति दिवस मनाया

वैदिक क्रान्ति कुंज में (बदायूं) निज निवास पर पं दयाराम वेदपथी ने वैदिक यज्ञ करके अपनी माता जी श्रीमती मोहिनी देवी जी का स्मृति दिवस मनाया। यज्ञ में सम्मिलित बच्चों को 'माता' की महत्ता के विषय में उपदेश करते हुए आपने कहा कि बच्चों! माता प्रथम गुरू होती है। माता की सुशिक्षाओं को ग्रहण कर मानव उन्नति प्राप्त करता है। और दीर्घ जीवन पाता है। उक्त सूक्त है **''मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरूषो वेद''**। जो व्यक्ति माता-पिता आचार्य की शिक्षा एवं आज्ञाओं का पालन करता है वही सच्चे अर्थो में पुरूष मानव बन पाता है। इसलिए बच्चों। अपने माता पिता व गुरूजनों के आज्ञाकारी बनो। प्यारे बच्चों! आज मातृ दिवस भी है-'मदर्स डे' आज सभी बच्चे व्रत लें कि हम सभी अपनी माता जी का सम्मान करते हुए जीवन-पर्यन्त उनकी सेवा करेंगे। क्योंकि:

माता के समदेव जगत में और न कोई।
मातृभूमि समठौर जगत में और न कोई।।
मातृ भूमि है प्राण है माता प्यारी।
प्राण होम हम हुए जहाँ यह गई विसारी।।

अर्थात् माता और मातृभूमि के बिना हम प्राणहीन है। अत: माता और मातृभूमि की रक्षा करके अपने जीवन को सार्थक बनाओ।

आपने सत्प्रेरणा देते हुए कहा कि बच्चों मैने अपनी मां की अभिलाषा पूर्ति हेतु ही ग्रहस्थाश्रम में ३६ वर्ष बाद प्रवेश किया और उनकी इच्छानुसार उनके शरीरान्त के समय उनका सिर मेरी गोद में रखा था। मेरी कामना है कि सभी पुत्र-पुत्रियाँ जीवन भर माता-पिता की सेवा करके मातृदिवस को सार्थक बनायें।''

- दयाराम वेदपथी

इन्दौर में आयोजित राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ की चित्रावली विस्तृत विवरण पृष्ठ ३४ पर

सारस्वत मोहन मनीषी, दिल्ली **काव्य पाठ करते हुए**

स्वामी ओमानन्द जी, इन्दौर **प्रवचन करते हुए**

स्वामी ऋतस्पति जी, होशंगाबाद **प्रवचन करते हुए**

डॉ. सोमदेव जी शास्त्री, मुंबई **प्रवचन करते हुए**

डॉ. निरजा पोराणिक , इन्दौर **दीप प्रज्वलन करते हुए**

पं. चन्द्रशेखर जी शास्त्री, दिल्ली **प्रवचन करते हुए**

पं. वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय, दिल्ली **प्रवचन करते हुए**

योगाचार्य उमाशंकर जी, सूरत **योग प्रशिक्षण प्रदान करते हुए**

पं. अमरसिंह जी विद्यावाचस्पति, ब्यावर **प्रवचन करते हुए**

डॉ. महेन्द्र जी हार्डिया **विधायक महोदय का आत्मीय स्वागत**

श्री सुदर्शन जी गुप्ता **विधायक महोदय का आत्मीय स्वागत**

हस्तनिर्मित चित्र प्रदर्शनी **का अवलोकन करते विद्वान महानुभाव**

माननीय नरेन्द्र भाई मोदी (मा. मुख्यमंत्री जी गुजरात सरकार) जिन्होंने पूरे भारतवर्ष में गुजरात के विद्यालयों में नैतिक मूल्यों पर आधारित लघु फिल्में दिखलाने का प्रकल्प लागू करवाया इन्हें भारत के प्रधानमंत्री बनने पर विचार टेलीविजन नेटवर्क लि., मुंबई की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ

दिवंगत महानुभाव जिनकी स्मृति अब शेष है

श्रीमती नर्मदाबाई आंजना, मंडाखेड़ी

श्री रामचन्द्र जी सलूण, देवास

श्री नाथूलाल जी जांगिड, मंदसौर

श्री शेराराम जी सोलंकी, बाड़मेर

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४२ पर

आर्यवन, रोजड़ की विद्वान् विभूतियाँ एवं संचालित वानप्रस्थ आश्रम की चित्रावली

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३५ पर

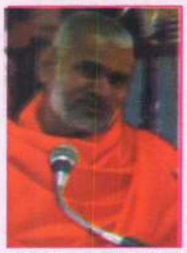
स्वामी ब्रह्मविदानंद जी

स्वामी विवेकानंद जी

कुलपिता स्वामी सत्यपति जी से आशीर्वाद प्राप्त करते बाबा रामदेव

आचार्य ज्ञानेश्वरार्य

स्वामी मुक्तानंद जी

चिकित्सालय

मुख्य सत्संग हाल के भव्य मंच से प्रवचन

मुख्य सत्संग हाल में श्रद्धालुगण

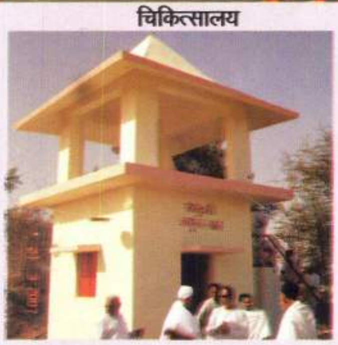
पक्षीघर

५० हजार लीटर पानी की टंकी

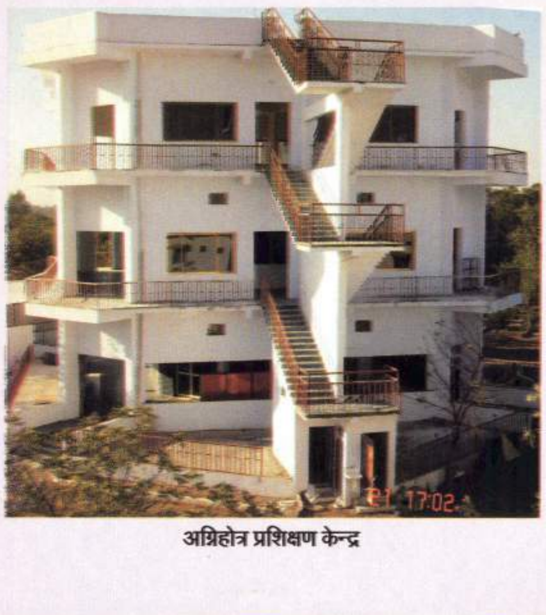
अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र

वानप्रस्थियों के आवास गृह

गुलाबदेवी आर्या पानी की प्याऊ

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित, १२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित, संपादक - गजेश शास्त्री, चलभाष - ०९९९३७६५०३१, कार्यालय - ०७३१-४०५७०१६